सूचि--पत्र



भूमिका

नौ महिने पहले गांधी चौक झुन्झुनू ब्रह्म महुरत में ठा० लक्ष्मणसिंह जी अड़ूका मिल गये, पूछने लगे कि वकीलजी आपकी स्मरण शक्ति यानि याददास्त कैसी है। मैं ने कहा टटोलूगां। कापी पेन लेकर बैठा तो पचास साठ सालों की घटनायें सामने आकर लाईन में खड़ी होकर नाचने लगी, आत्मा से आवाज आने लगी और पैन लिखने लगा, यह भी ख्याल नही रहा शुद्ध लिख रहा हूं या अशुद्ध किस भाषा में लिख रहा हूं।

क्या कहूं, कैसे कहूं, किसको कहूं, क्यूं कहूं
क्या लिखूं, कैसे लिखूं, किसको लिखूं, क्यूं लिखूं

(१) सबसे पहले पुना की यरवदा जैल महात्मा गांधी और उनके प्यारे सचीव श्री महादेवभाई देसाई, गांधीजी का यह कहना, कि मैं धूप में बैठ सकता हूं दुसरे को धूप में नहीं बठा सकता, गांधी जी का यह कहना भैया तुम्हारे दो मिनट पूरे हो गये है। आज भी गांधीजी के सचिव महादेव भाई कैदी की पोशाक पहने सामने खडे मुस्करा रहे हैं।

(२) दुसरी घटना ३० दिसम्बर १९३० को पं० श्री मोतीलाल जी नेहरू कलकत्ते में ईलाज करा रहे थे। माता स्वरूप रानी जी नेहरू का यह कहना की भगवान भी भगवान के पैर छुता है गया, आप उनसे न मिले पंडित जी के खैर स्वाह है तो माताजी

कितनी दयालू थी, पंडित मोतीलाल जी के दर्शन करा दिये। उस वक्त इन्दिरा जी बारह साल की थी। ठा० रविन्द्र नाथ जो टेगौर के शान्ति निकेतन आश्रम में पढती थी आज कांग्रेस के भीष्मपितामह पं० मोतीलाल जी नेहरू और माता स्वरूप रानी जी नेहरू की मूर्ती मेरे सामने खड़ी है और मैं मानसिक आरती उतार रहा हूं।

(३) तीसरी स्मृति परम भक्त वैश्य ऋषि भाग्यशाली राजा बलदेव दास जी विड़ला की, गरीबो और भगवान दोनों से प्रेम करते थे, मेरे से पुछा क्या लड़की का विवाह करना है। या किसी लड़के को हिन्दु विश्व विद्यालय में भर्ती कराना है। मेने कहा नहीं तो फिर कहा इतनी दूर कैसे आये हो। आपके दर्शन करने को मैं ने कहा पं० मदन मोहन मालवीय से मिला दीजिये हंस कर कहा यह भी कोई काम है। मालवीयजी को टेलीफोन किया दुसरे दिन पं०जी से मिला, आज भी इन दो महात्माओं के दर्शन होरहे हं इन दो हजार सालों में पं० मदनमोहन मालवीयजी जैसे ब्राह्मण और राजा बलदेवदास जी बिरला जैसे महाजन नहीं हुवे, उस जमाने में राजा साहब का चालीस हजार रूपया माहवार का बजट था आप कितने भाग्यशाली थे। पहले तो अपने पिता सेठ श्री शिवनारायण जी वीड़ला की कमाई खाई. बाद में जगत प्रसिद्ध चारों पुत्रों की,

(४) चौथी स्मृति पं० श्री जवाहरलाल जी नेहरू पिलानी पधारे थे। ऊंट की सवारी की थी. आगे के आसन्न पर नेहरू जी और पिछे बाबू घवश्याम दास जी विड़ला, ऊंट को दुल्हे की ज्यूं सजाया गया था, शानदार सुतर सवार श्री ताराचन्द कटेवा बख्तावरपुरा थे। वोह ऊंट भी भाग्यशाली था, जिसने संसार

को महा विभूतियों को अ ाने ऊ ार एक साथ बैठाया था। हम लोग डर रहे थे, नेहरू जी को ऊंट पटक न दे। बावू धनश्याम दास जी विड़ला तो ऊंट की सवारी के माहिर है।

(५) पांचवी स्मृति घटना । वाई गान्धारी पंडिया के विवाह की बात है बावू धनश्यामदास जी विड़ला ने मेरे को ओळमा दिया कि गांधीजी के पास शिकायत करने को में ही मिला क्या, संसार में संतसंग की वहुत महिमा है भारत में बावू धनश्यामदास जी ही एक महापुरुष है जिन्होने भारत के बडे से वडे महात्मा देश विदेश के मह पुरुषों सत्तसंग किया है। फाईनेन्स के काम में तो आप भारत में पहला स्थान रखते है। आप वैद शास्त्र श्रृति स्मृति गीता के विद्वान है। आपकी धर्म पत्नी का स्वर्गवास हुवा तो आप तेतीस साल के ही थे। दुसरा विवाह नही किया, देश विदेश की विष कन्याओं ने वड़े वडे जाल, बिछाये काजल की कोटड़ी में भी काला नही लगा। आज आप ८६ साल के हो गये है एको नारी, सदा ब्रह्मचारी, आपके तो वोह एक भी नही रही धन्य है पिलाली की धरती को जिसने ऐसा सपुत पैदा किया

(६) छटी स्मृति राष्ट्रपति वावू राजेन्द्र प्रसाद जी के साथ शंतरज कई पिलानी में खेलना, मथुरा वावू की सैर सायरी, जो राष्ट्र पति जी के सचीव थे। पदम श्री श्रीधर जी वैद और स्वामी गोविन्द दास जी की कृपा से हो, उन तक पहुंचा था। फिर तो पास पोर्ट मिल गया था। राष्ट्र पति वनने के वाद भी दिल्ली में मिला था श्री हरनाथसिह जी डावड़ी अंगरक्षक थे जो बहुत सज्जन पुरुष है।

और जो स्मृति है उनका बखान आत्मा की आवाज में

लिखा है। जो बाकी रह गई है आत्मा की आवाज नं० २ में बखान की जावेगी। जो जल्दी ही प्रकाशित की जावेगी १९७६ में अदालतो से विदाई लेली, बढता हुआ भ्रष्टाचार देखा नहीं गया।

कह रहा हूं वे तकल्लुफ साफ साफ
है वकालत मेरी तबीयत के खिलाफ
बात करने का नही जिनको शउर
झुक कर कहना पड़ता है उनको हजूर

※ ※ ※

बाबाजी बन गये संग्रह का त्याग कर दिया
गीता, गंगा, गायत्रि, की शरण लेली

※ ※ ※

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः
एकाकी यतचितात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥१०॥

जिसका मन और इन्द्रिया सहित, शरीर जीता हुआ है। वासना रहित संग्रह रहित योगी अकेला ही एकान्त स्थान में स्थित हुआ, निरंतर आत्मा को परमेश्वर के ध्यान में लगावे। परमात्मा की कृपा से यह सब साधन उपलब्ध है गर्मियों में स्वर्गआश्रम दोनों नवरात्रों मे श्री श कम्भरी माताजी सकराय, चैन की वंशी बज रही थी, ठाकुर सहाव अड्का ने मिठा चूंटका भर लिया, बुढापे में स्मरण शक्ति की परिक्षा ली। प्रेस वालों के पास गया करीब छः हजार रुपये छपाई के

वतला दिये, पसीना आगया, धर्म संकट में पड़ गया । आत्मा से आवाज आने लगी किताब जरुर छपवाओ, इतने दिनों से महनत कर रहे हो ।

"निराशा भीरुता लाना समझलो नीच कायरता
उसी को सिद्धी मिलती है जो डर का सामना करता

एक सज्जन ने एक सौ रुपये देकर कहां आप जो किताब लिख रहे हो, उसका पुरस्कार है मेरा नाम मत लिखना, साहस वढाया, प्रेस वालों को रुपया देना था । अपने परायो को वतलाया, सबने अंगुठा दिखाया, पुराने मित्रों से रुपया उधारा लिया कुछ गाडी आगे वढी । जलील होना पड़ा, एक दोस्त मिर्जा श्री हवीव वेग जो एक नेक इन्सान है खुदा परस्त व वतन परस्त है । आप मिर्जा गालिब के खानदान में है । पांच सौ रुपये किताव लिखने के इनाम में दिये होसला वढाया

कमी नही है कद्रदां की अकवर
करे तो कोई कमाल पैदा

मोहवत रग दे जाती है दिल जब दिल से मिलता है
मगर मुश्किल तो यह है दिल वडी मुश्किल से मिलता है

आपकी दुकान मूगलों की खुब सूरत मस्जिद झुन्झुनू के निचे है

"नया अनुभव हुवा, दुनियाँ मे इन्सानियत जिन्दा है ।
यह दुनियां रंज राहत का गलत अन्दाज करती है
खुदा ही खूब वाकिफ है के किस पर क्या गुजरती है

आत्मा की आवाज में जिन महापुरुषों का बखान है उनमें से मैं कई सज्जनों का वकील रहा हूं जनरल पावर आफ अटर्नी, यानि मुख्तार नामा आम जिनमें जायदाद वेचने खरीदने का भी अधिकार था स्वर्गीय सेठ बिलासराय जी खेताण का मुख्तार आम था, दससाल तक उनके तीसरे पुत्र श्री चिरंजी लाल खेताण को नीगरानी थी।

जिले में या झुन्झुनू नगर में जो भले आदमी है उनका बखान है। आत्मा की आवाज पढ कर अपने घर में सुरक्षित रखे ताकी आने वाली पीढी, अपने वुढे बुर्जगो को याद करे। आज से पच्चीस वर्ष के वाद इस आत्मा की अवाज की ज्यादा जरुरत होगी

अगली आत्मा की आवाज नं०२ जल्दी हो छपने वाली है सौ पाने तो लिख लिये बाकी और लिखे जावे वोह इससे भी ज्यादा रुची कर होगी जो सज्जन लेख कविता शैर भजन आदि देगे। वोह सव छापे जावेगे। जो आत्मा से आवाजा आई वोह ही लिखा है।

सेवक

पं० हनुमान प्रसाद बावलिया वकील झुन्झनू राजस्थान ७९ साल नोट हमारा निकास बावल से है गांव के नाव स बावलिया कहलाते है कस्बा बावल जिला महेन्द्रगढ (हरियाणा) मुदगल गौत्र है मुदगल ऋषि की अहिल्या पुत्री थी।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है
वोह नर नही नीरा पशू है और मृतक समान है

अन्तमें युवक श्री रामलाल मौरवाल विजय प्रेस झुन्झुनू को धन्य वाद देता हूं, जिसने नरसी जी वाली गाड़ी को किनारे लगाई।

कांग्रेस अध्यक्ष और लोकप्रिय भारत की प्रधान मंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी की सेवा में आत्मा की आवाज और गुलदस्ता २६ जनवरी १९८२ के शुभ अवसर पर भेंट कर रहा हूं

कहता है गुलाब हरदम मैं इत्र सरासर हूं
और सेवती कहती है में उससे भी बहतर हूं
बेला यह पुकारे है मैं चांद का पुत्र हूं
गुल अशरफी कहती है वोह क्या मैं बहतर हूं

※ ※ ※

लाला यह सुनाता है मैं लाल का प्याला हूं
सूरज मुखी कहती है मैं उसकी भी खाला हूं
सद बरग यह कहता है सो दर्जा मैं बाला हूं
गुल जाफरी कहती है मैं इससे भी आला हूं

※ ※ ※

दुनिया न कहो इसको यह बाग है सर बसता
क्या दस्त से कुदरत के बांधा है यह गलदस्ता

नसरीन व समन शबू कछा है गुरया का
नीलो फरो ना फरमां है रुप कन्हैया का
रावेल चनबेली भी जलवा हैं डलिया का
दम भरता है जन्नत से हर फूल कटीया का

कहता है कवल हरदम में पाक नमाजी हूं
और मोगरा कहता है मैं मर्द हूं गाजी हूं
सोसन को जवां बोली में तरकी व ताजी हूं
गुलबारी यह कहती है सबसे ताजी हूं

मालती नागेसर और मूलसगी करना
दूपहरिया दांउदी गुलचीन कठल वरना
नरगिस भी पुकारे है मुझ पर यह नजर करना
पिछे को सुहागन के सो इश्क के दम भरना

गुल केवड़ा कहना है क्या मुझको तराशा है
और केतकी कहती है सनदल का तराश है
और मोतीया शफ्ताल जर सेम का माशा है
और रंग हिना मखमल जो है सो तमाशा है

डौले व कनोरों का पर्दा पंखडी ढौली है
चम्पा व भूचमना है या मोती की वाली है

वगले व मदन वानकी कुछ वात निराली है
गुल चांदनी कहती हैं मेरी ही उजाली है

※ ※ ※

दस्तार पे गुल तुर्रा क्या शान जमाता है
कलगा भी इधर अपनी कुलगी को हिलाता है
और फुल निवाड़ का वजरे को वढाता है
जो गुल है सो अपने ही जोवन को दिखाता है

※ ※ ※

वन आग तूरई टेसू क्या फुल रहे वन वन
सरसूं है अडूसा है फिर और ही है सन वन
कहता है पिया वांसा है हुसन मेरा सोसन
दरसन यह ये पूकारे है आ देखले सुख दरसन

※ ※ ※

कुदरत गह वना जिसने इस वाग की डाली है
क्या वोले नजीर आगे क्या खुव वोह माली है
क्या निखल का डाला है क्या फूल की डालो है
सव का वही वारिस है सव का वही वाली है

※ ※ ※

दुनिया न कहो इसको यही वाग है सरवस्ता
क्या दस्त से कुदरत ने वांधा है यह गुलदस्ता

※ ※ ※

सेवक— पंडित हनुमान प्रसाद वावलीया वकील झुन्झुनू राजस्थान, ७९

हर एक को दावा है के हम भी है कोई चीज
और हमको है यह नाज के हम कुछ भी नहीं

निवेदन

आत्मा की आवाज पढ़कर ईनाम जरूर दें।

पहला ईनामः–आत्मा की आवाज से जो निकले वो।

दुसरा ईनामः– १०१ रूपये

तीसरा ईनामः– ५१ रूपये

कृपया आत्मा की आवाज (कीताब) की कीमत २५ रूपये जो उपरोक्त ईनाम में ही शामिल है।

हनुमान प्रसाद बावलिया, वकील
झुन्झुनू (राजस्थान)

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।।३९।।

आप वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजा के स्वामी ब्रह्मा और ब्रह्मा के भी पिता हैं। आपके लिए हजारों बार नमस्कार! नमस्कार हो!! आपके लिए फिर भी बार-बार नमस्कार! नमस्कार!!

आत्मा की आवाज



हे पूरण परमात्मा पावन हो जीवात्मा,
विश्व बने धर्मात्मा सुखी रहे सब आत्मा,
उठी लेखनी आज फिर लेकर यह अभिमान,,
मोहन मोहन दास के करना है गुण गान,,
इसी देश की मेटने आये दोनों त्रास,
वोह केवल मोहन रहे यह हैं मोहन दास,
उन मोहन का बरसाना था इन मोहन का हरसाना है,
उनका भी भक्त जमाना था,
इनका भी भक्त जमाना है,,

इङ्गलेड के प्रधान मन्त्री मि. चर्चिल भारत के लिये राहु थे। भारत की आजादी में दस साल की देर कर दी, मि. जिन्ना मास्टर तारासिंह अकाली नेता और डा. अम्बेडकर को अपने चक्कर में ले लिया था।

गुरु श्री गोविन्द सिंह जी ने हिन्दुओं में से ही इनकी रक्षा के लिये कुछ बहादुर लोगों की फौज बनाई जिसका नाम सिख रख दिया गया। सिख हिन्दुओं के दिल व दिमाग हैं, और हिन्दु सिखों के प्राण हैं।

मि. चर्चिल ने एक जबरदस्त षडयन्त्र रचा कि छः करोड़ अछूतों की एक नई जाति बनादी जावें और हिन्दुओं के दो टूक कर दिये जावें, महात्मा गांधी को इस साजिश का पता चल गया। मरना मांड दिया, पसर गये

अन-शन कर दिया जो कई दिनों तक चला, भारत माता के सपूत देश भक्त वावू घनश्याम दास जी विडला जो भारत के वाहर थे, । महात्मा गांधी की यह हालत सुनकर दौड कर आये और गांधी जी के चरणों में चैक रख दिया कि जितने रुपये चाहिये ले लिजिये और आन्दोलन चलाइये । गांधीजी ने कहा मेरे प्राण वचाना चाहते हो तो तीन महिनों के लिये अपने आप को मेरे अर्पण कर दो, विडला जी ने कहा आप के प्राणों के लिये मैं अपना जीवन भी दे सकता हूं अपना करोड़ों रुपयों का कारोबार छोडकर अछुतोद्धार नाम की संस्था कायम की और अछुतोद्धार के सभापति वना दिये गये। ठक्कर वावा को अपने साथ लेलिया । कश्मीर से कन्या कुमारी और जगन्नाथ पुरी से द्वारकापुरी तक वडे वडे मंदिरों मैं अछुतों का मंदिरों में प्रवेश कराया उनके हाथ का चरणामृत लिया, सभाये, जुलूस, प्रभात फेरीया, आन्दोलन चलाया । भारत के मारवाडी सेठ साहुकार, बुद्धिजीवी तन मन धन से इस आन्दोलन में शामिल हो गये, । मारवाडी भारत के कोने कोने में फैले हुवे है वल्कि विदेशों में भी इनका दव दवा है, इस आन्दोलन ने यह सावित कर दिया, कि मारवाडी भारत के प्राण हैं ।

इस सिलसीले, विडलाजी की जन्म भूमि पिलानी में भी एक आयोजन किया गया, श्री लक्ष्मी निवास जी विडला ने स्योनन्द नामक अछुत के हाथ से चरणामृत लिया, श्री राधाकिशन विडला, ताराचन्द सावू, महादेवजी लोयलका, शिवकरणजी वगडिया आदि और भी कई सज्जन थे, में भी उन दिनो महिने मे दस दिन पिलानी मे रहता था, आयोजन में शामिल था, जव यह आयोजन चल रहा था, अंग्रेजों के पिठू जागिरदारों के आदमी लठेत आये पहला निशाना स्योनन्द चमार को वनाया मार पीट शुरू हो गई, श्री लक्ष्मीनिवास जी विडला गरारा पहने हुवे थे । भगदड मैं गिर पडे गरारा फट गया घुटनों में चोट भी आई, और मौजूदा सज्जनो की भाग्य सारु थप्पड़ मुक्के लात घुस्से गालियां सव को मिली । इस घटना कि रिपोर्ट अछुतोद्धार सभा में दी गई वावू घनश्याम दास जी को तार चीठ्ठी भी दिये मगर कोई

उत्तर नहीं मिला। तीन दिन के वाद में वंबई गया, मारवाडी नेता श्री निवासजी माखरीया वगड वालों के पास ठहरा, उनको पिलानी की घटना सुनाई और कहा किसी भी प्रकार महात्मा गांधी से मिला दो। माखरीया जी ने कोशिश की परन्तु सफलता नहीं मिली, दुसरे दिन मैंने यरवदा जैल के पत्ते पर गांधीजी को पत्र लिखा कि मैं राजपुताने से आया हुं, अछुतो के बारे में जरुरी परामर्श करना है, माखरीया की गद्दी का पता दिया था, तीसरे ही दिन जवाव आया कि सोमवार को दिन के १ वजे पांच मिनट के लिये यरवदा जैल पूना आकर मिल सकते हो, महादेव भाई गांधीजी के सेक्रेट्री का पोस्ट-कार्ड लिखा हुआ था, मोहन दास कर्मचन्द गांधी के दस्तखत थे यरवदा जैल के अंगरेज सुपरीडेन्ट मि. विलसन की मंजुरी थी,। पत्र पढते ही श्री माखरीया जी और लोगों ने मेरे को ववाइ दी,। मैं पुना गया, गाडी में कालेज की लड़कियो की ही भीड थी, शायद जनाना डिव्वा था, कुछ देर तो शर्मिला सा हुआ वैठा रहा, लड़कियो में फल मेवा उड़ रहा था हंसी खुशी का माहौल था पास वैठी एक युवती ने पुछ ही लिया कहाँ जा रहे हो. तो मैने कहा गांधीजी से मिलने के लिये यरवदा जैल में, तो आस पास वैठी सव लडकियां मजाकिया तौर पर हंसने लगी, मेरे को वुद्धू वनाने लगी, मैंने गांधी जी वाला पोस्ट कार्ड दिखाया तो वडी प्रभावित हुई मेरा मान सम्मान आदर करने लगी कुड़ते की दोनो जेवे सुखे मेवों से भर दी, सव वहने गुजराती थी, पुना स्टेशन पर वन्दे मातरम के नारे लगे। मैं तांगे वाले के पास गया कोई भी तांगा वाला यरवदा जैल के पास जाने को तैयार नही हुआ उनकी पिटाई हो चुकी थी। आखिर एक मराठा युवक तांगे वाले ने हिम्मत की जल से पांच सौ कदम की दुरी पर उतार दिया, भयानक जंगल था, आमों के पेड़ों की संख्या ज्यादा थी, मैं यरवदा जेल के सदर दरवाजे के करीव सो गज दुरी पर गया तो एक महा पुरुष खद्दरधारी वैठे हुवे थे उनसे वन्देमातरम् हुई, मैंने गांधी जी वाला पत्र दिखलाया तो फरमाने लगे, मैं तो कल से वैठा हूं मेरा पत्र वापू तक नहीं पहुंचाते न मिलने की आज्ञा देते हैं। मैने कहा आप मेरे साथ चलिये, केवल पांच मिनट वाकी रहे तो पत्र लेकर संतरी की तरफ वढा संतरो अंगलो

इंडियन था हाल्ट बोलकर सामने आया उसको वह पोस्ट कार्ड दिया, एक मराठा अफसर बाहर आया, दुसरे साथी को देखकर कहा यह तो कल से ही बैठे है, मैंने कहा इनको तारीख का मगालता हो गया इसलिए एक दिन पहले आ गये, अफसर भला आदमी था, हम पहले दरवाजे में दाखिल हुवे तो हमारी डायरी पैन थैला सब चीज लेली अच्छी तरह तलाशी हुई, दुसरे दरवाजे में गये तो दस्तखत कराये गये, हाथ पैर के अंगुलियों के निशान पुरा अता पता लिखाया गया, तीसरे दरवाजे पर गये एक डॉक्टर ने दोनों का मूआईना किया। कोइ छूत की बीमारी तो नही है फिर दो फोटू ग्राफर आये फोटू लिये गयें। फिर चार सिपाही आगे पिछे हो गये पहला वार्ड भारत कोकीला सरोजनी नाईडू का था दूसरा सरदार बल्लभ भाई पटेल का था, तीसरा मोहनदास कर्मचंद गांधी लिखा हुवा था, औरों के वार्ड पर ताले लगे हुवे थे, मगर गांधी जी वाला वार्ड रस्सी से बंधा था, मैंने रस्सी खोली तो सिपाही ने हाथ पकड़ कर कहा तुमने जूर्म कर लिया मैंने माफी मांगीं पता नही था। वार्ड में गये तो एक बडा चौक था, दो कमरे लेटरीन बाथ रुम था, सदन के बीच में एक आम का पेड था पेड के सहारे महात्मा गांधी चारपाई पर बैठे थे पट्टी बरता उनके हाथ में था, पास में महादेव भाई देसाई उनके सेक्रेट्री कुर्सी पर जैल के कपडे पहने हुवे बैठे थे टेबल पर तार चिट्ठी अखबार रखे हुवे थे, अन्दर जाते ही गांधीजी से वन्देमातरम हुई गांधीजी खडे होकर साथी से लिपट गये, महादेव भाई कमरे में से एक कम्बल लाकर बिछा दी मैं एक कौने पर बैठ गया वहां कुछ धूप थी गांधीजी ने फरमाया भैया छांया में बैठो मैं धूप में बैठ सकता हुं दूसरे को धूप में नही बैठा सकता, फिर साथी से कहा मैं पहले इन से बात करलू फिर आप से बातें करुंगा। साथी ने नम्रता से कहा मैं तो इनकी कृपा से ही आया हूं सब बाते बयान कर दी। गांधीजी ने फरमाया कहो क्या कहना चाहते हो तो गांधी जी के तेज से आखों में आंसू आ गये कंठ चिपक गये। गांधी जी ने घड़ी देखकर कहा तुम्हारे दो मिनट पुरे हो गये, सरस्वती जी की कृपा हुई, पिलानी वाली घटना याद आ गई, तो महादेव भाई देसाई से कहा इनका पुरा स्टेटमैन्ट लिख लो। मैं अपना बयान

देने लगा, महात्मा जी साथी से बाते करने लगे मैंने सब कथा बखान कर दी सबके नाम आक्रमणकारियों के भी कईयो के नाम लिखा दिये इस तरह से पन्द्रह मिनट का और समय मिल गया। फिर साथी ने पुछा मेरे लिये क्या आज्ञा है तो गांधी ने फरमाया आज चार बजे पूना में अपनी गिरफ्तारी दे दो। हम दोनों ने चरण स्पर्श किये महादेव भाई को भी नमस्कार किया। फिर जो चारों सिपाही जो बाहर खडे थे उनके साथ दरवाजे में पहुंचे दुवारा तलाशी हुई फिर फोटू लिया गया थेला, डायरी नकद वापस कर दिये गये। साथी ने कहा मै तो जंगलो जाकर पूना पहुंचूंगा, मैंने हलीमी से कहा आपका कुछ परिचय तो दीजिये। तो उन्होने कहा मेरा नाम डॉक्टर पटाभि सितारामय्या है। मेरा आभार माना फिर तो जयपुर में अखिल भारतीय कांग्रेस का सालाना अधिवेशन हुवा तो डा, पटाभि सितारामय्या कांग्रेस अध्यक्ष थे। मिलने की जुगत वीठलाई रतन शास्त्री उनके विश्राम ग्रह की मुन्तजिम थी। मैं अन्दर गया तो पहचान लिया, आचार्य विनोवा भावे और शेरे कश्मीर शेख मोहम्मद अब्दुला पास बैठे थे। यरवदा जैल से वापस आया तो तांगे वाला सड़क से हटकर इन्तजार कर रहा था, घुमा फिरा कर पूना लाये मैंने १०)दस रुपये दिये वह खुश होकर चला गया, बंबई आया तो माखरीया जो व और सज्जनों को पुरी कथा सुना दी, फिर श्री चिरंजीलाल जी लोयलका के बंगले चला गया।

कुछ दिनो के बाद पिलानी में श्री उदयराम जी पाडिया की पोती बाई गान्धारी का विवाह था, श्री राधाकिशन जी सौन्थलिया मंडावा वालों के सुपुत्र श्री मुरलीधर जी सौन्थलिया व्याहने आये थे। कन्या पक्ष की तरफ से श्री बाबू घनश्याम दास जी ही करतम कर्ता थे । मैं मेंहमान निवाजी में बाहर भीतर फिर रहा था, तो बाबू घनश्याम दासजी बिडला ने श्री आत्माराम जी पाडिया से पुछा यह कौन है तो श्री आत्मारामजी ने कहा हनुमान प्रसाद वकील झुन्झुनू के है, और मेरे पुराने मित्र है। तब श्री बिडलाजी ने फरमाया गांधीजी से शिकायत करने को मैं ही मिला क्या, मैने कहा आपके प्रसङ्ग से

गांधीजी ने १५ मिनट का अधिक टाईम दे दिया श्री महादेव भाई देसाइ ने मेरे वयान की नकल विडला जी को भेज दी थी।

मि. चर्चिल की सब चालें और चालाकी का मुंह तोड़ जवाव मिला, फिर तो अछुत भाईयो का नाम हरिजन हो गया, गांधीजी ने वावू घनश्याम दासजी विडला को हित से आशीर्वाद दिया, और कहा आपने देश की सेवा की है। इस तरह से बावू घनश्याम दास जी विडला ने बापू मोहनदास कर्मचंद गांधी के प्राण बचाये। भारत के इतिहास में वावू घनश्याम दासजी विडला का नाम सोने के अक्षरो में लिखा जावेगा। धन्य हो भारत माता के सपूत भगवान आपको खुश रखे एकसो एक वर्ष की आयु हो। भारत आप का आभारी रहेगा।

पैदा हुवे हैं देश हित ही और देश हित मर जायेंगे।
हम है समर्पित देश हित कुछ देश हित कर जायेंगे।।



माता स्वरूपराणी नेहरू

दिसम्बर १९३० में मैं कलकता गया हुआ था, सेठ राधाकिशन जी सौन्थलिया मंडावा वालों के पास उनके शाही भवन मे ठहरा हुवा था। मालूम हुवा पं. श्री मोतीलाल जी नेहरु सख्त बिमार है और सेठ जी के गंगा किनारे वाले वंगले में इलाज करा रहे हैं। सेठ जी ने एक दिन पूछा कोई काम हो तो वतलाओ, मैंने कहा पं. मोतीलाल जी नेहरु के दर्शन करा दीजिये तो सेठजी ने फरमाया बाबू विधान चंद्र राय डाक्टर ने मिलने पर सख्त पाबन्दी लगा रखी है डॉ. अटलजी नेहरु परिवार का खानदानी डाक्टर था और हर वक्त पंडितजी की सेवा मैं रहता था, उनको टेलीफोन किया सेठजी के मुलाहिजे से डा. अटल ने कहा आप के मेहमान को आज ही चार वजे भेज दीजियगा। ३० दिसवर १९३० का दिन था में समय पर वंगले पर पहुंचा, इत्तफाक से कोई भी नौकर या आदमी नहीं मिला। में वंगले पर जिस कमरे में पंडित जी आराम फरमा रहे थे, उसके वाहर पहुंचा तो माता स्वरुपरानी कमरे से वाहर आई, मैंने झुक कर माताजी के चरण स्पर्श करना चाहा तो माताजी ने दो कदम पिछे हट कर फरमाया, क्या भगवान भी भगवान के चरण छुता है क्या-आपमें भी भगवान हैं मेरे में भी भगवान हैं। मैं लजित हो गया। फिर माताजी ने फरमाया, आप पंडित जी के खैर खवाह हैं तो उनके दर्शन न करें। मैंने अर्ज किया मै पंडित जी का खैर खवार भी हुं और वफादार भी हूं। मेरी रोवनी सी सुरत देख कर माता जी को दया आगई। फरमाया तुमको मायूसी हुई, मैंने अर्ज किया माताजी प्यासा आदमी गंगा जी के किनारे आकर भी प्यासा मर जावे तो दुख होता है। माताजी ने फरमाया में पंडितजी को जल पिला ऊंगी खिडकी का पर्दा उंचा करुंगी आप खासना या बोलना नहीं। मैंने कहा जो हुकम, माता जी अन्दर गई खिडकी का पर्दा उंचा किया सोने के गिलास में जल लेकर अर्ज किया सरकार जल हाजिर है तीन वार अर्ज करने

पर पंडित जी बैठे हुवे। बूढे शेर की तरह अंगडाई लेकर दो घूंट नजाकत से हाथ वढाकर पानी पिया, पंडित जी के गुलाब के फूल जैसे नेत्र, मांगे के मान सर, सुन्दर गोरा वदन, खद्दर का कुडता, चादर। पानी पीकर फरमाया" वेहर इज दी न्यूज पेपर" माताजी ने अखवारों की कटिंग उनके हाथ में दे दी। माताजी ने वाहर आकर फरमाया 'आपको पंडितजी के दर्शन हुये', मैंने अर्ज किया दर्शन ही नहीं हुये बल्कि एक तीर्थ-यात्रा हो गई। माताजी ने फरमाया क्या काम करते हो, तो अर्ज किया जयपुर रियासत में वकालात। माताजी ने तैश में आकर फरमाया मुबारक हो आपको इस वक्त भी, वकालात, मैंने हलीमी से अर्ज किया महात्मा गांधी और हमारे स्थानीय नेता का हुकम है कि देशी रजवाड़ों को इस वक्त न छेड़ा जाये, अंग्रेजों के जाने के बाद तो तीन दिन में यह अपने आप रास्ते पर आ जावेंगे। आपके स्थानीय नेता कौन हैं? तो मैंने अर्ज किया सेठ जमनालाल जी वजाज। माताजी ने फरमाया जमनालाल वजाज काम करते हैं, तो मैंने अर्ज किया प्रजा मण्डल नाम की संस्था है हजारों आदमी मेम्बर हैं, समय पर एक लाख आदमी जेल जाने को तत्पर हैं। उस वक्त भारत की भाग्य विधाता इकलौती पोती श्रीमति इन्दिरा जी करीब दस-बारह साल की थी जो शान्ति निकेतन में शिक्षा पा रही थी। मैं आज्ञा लेकर प्रणाम करके बगीचे के दरवाजे पर आया तो संवाददाताओं की भीड़ लगी हुई थी। पं० झाबरमल जी शर्मा जसरापुर वाले जो हिन्दू संसार कलकत्ता से पत्र निकलता था उसके सम्पादक थे। उनको अपना सारा वयान दे दिया। १३ दिसम्बर १९३० ई० सब खबरे छप गई। ऐसी थी दयालू पंडित जवाहरलाल जी नेहरू की माताजी। ता० ४ फरवरी १९३१ ई० को पं० मोतीलाल जी नेहरू का स्वर्गवास हो गया। अमावश की रात्रि की भांति देश में अन्धेरा छा गया। कांग्रेस के भिष्म पितामह स्वर्ग सिधार गये।

यों तो दुनियां के समन्दर में, कमी होती नहीं।
लाखों मोती हैं मगर, उस आव का मोती नहीं॥



परम भक्त राजा बलदेवदास जी बिड़ला

राजा बलदेवदासजी बिड़ला बडे भाग्य शाली सज्जन थे पहले अपने पिता सेठ श्री शिवनारायण जी बिडला की कमाई खायी, बाद में जो उनके नामी चार पुत्र हुए जो संसार प्रसिद्ध हैं लक्ष्मी जी पीढा घाल के बैठ गई। भगवान की यह कृपा देखकर राजा साहब को वैराग्य हो गया, गृह त्याग कर के पहले हरिद्वार चले गये और बाद में काशी जी में रहने लगे। वैराग्य ज्ञान भक्ति में लवलीन हो गये।। गीता, गंगा, गायत्री आपके इष्ट देव हो गये, काशी जी में लालघाट पर आपने विश्राम गृह बना लिया। पास में ही एक अतिथी घर बना दिया जिसमें स्थाई और अस्थाई उनके मरजी के लोग रहने लगे, भोजन वस्त्र का भी राजा साहब की तरफ से प्रवन्ध था। पास में ही अपने साथी डालूराम जी लोयलका पिलानी वालों का भी भवन बना दिया, और महामना पं. मदनमोहन जी मालविया से सत्संग का लाभ उठाने लगे। हर पूर्ण अमावस्या पर सत्यनारायण जी की कथा मालविया जी महाराज से सुनने लगे पंचामृत लेने लगे- इकावन पंडित तो रोजाना आपकी कोठी वरणी करते थे और मालविया जी काशी के विद्वानों का भी बिड़ला जी से सत्कार कराते थे। भोजन दक्षिणा आदर सत्कार कराते थे, हजारों भक्तों को रोजाना भोजन दिया जाता था। उस जमाने में चालीस हजार रुपये का माहवारी वजट था, जो रुपये बचते थे वोह पं. मदनमोहन जी मालविया जी के चरणों मे उनके पैर धोकर चरणामृत लेकर चढा देते थे आशीर्वाद लेते थे। चार वजे प्रातः उठकर नाव में वैठकर गंगाजी में स्नान ध्यान पुजा पाठ करते थे। सुर्य नारायण को अर्ग देकर नाव घाट पर आतिथी और जो पंडित मंडली में वैठकर हवन होता था, यह क्रम दैनिक था, पंडितो को अभ्यागतो को भोजन कराके फिर पिलानी का या वाहर के मेहमानों को भोजन कराके खुद और सेठानी जी भोजन करते थे यह क्रम पचास साल तक रहा। श्याम की संध्या वन्धन काशी

नरेश के बगीचे मे होता था, यह लोक भी सुधारा और परलोक भी। जब राजा बलदेव दासजी पिलानी में विराजते थे तो गांव के लोग और आस पास के गांवों के दुखी आदमी आपके पास आते थे और अपनी दुख दर्द की कहानी सुनाते थे। और शिकायत करते थे। पिलानी का थाना उस वक्त छापडा गांव में था। पं. बनवारी लाल उस समय थाने दार थे, वोह दो बार हफ्ते में सेठजी की सेवा में आते थे। सेठ जी के पास जो शिकायत होती सब नोट कर लेते थे। चोरी हुई सब चिजें वापस दिलाइ जाती थी चोर को थाने में ले जाकर ठूकन्तरी होती थी काठ कोरडा का उपयोग होता था, अदालत में चालान छ महिने बारह महिने तक करो यह थानेदार को अधिकार था, मुलजिम बीच में जुर्माना देने को तैयार होता तो धनी को दिलाया जाता था, मार पीट के मुक-दमें में गांव के बीच में जूते लगाये जाते थे। जुर्म बहुत कम होते थे, बलात कार, औरतों का अपमान तो साल भर में एक दो ही होते थे। गधे पर चढाकर काला मूंह करके गांव वालो से जूते दिलाये जाते थे।

पिलानी गांव में चोरी जारी की शिकायत श्री कालूराम जी बग-डिया श्री राम जी पंच प्रसादीराम जी डालामिया गुलाब जी मिश्र करते थे। छोटो मोटी पंचायत तो पं-मास्टर भगवती स्वरुपजी ही सलटा दिया करते थे जो भले आदमी थे, विद्ववान और जन सेवक थे। पंडित बनवारीलालजी थानेदार छापडा के रिश्तेदार थे बिडला जी के विश्वास पात्रों में थे। जब राजा बलदेव दासजी काशी वास कर रहे थे तो पं. बनवारीलाल थानेदार छापड़ा की सेवाये याद आ गई तो उनको थानेदार से झुन्झुनू शेखावाटी का नाजिम बना दिया था। और दो ही महिने में उनकी पेन्शन कराके अपने पास काशी जी में बुला लिया, उस जमाने में नाजिम जी की तनख्वाह दो सौ रुपये महावार थी, एक सो रुपये पेन्शन के मिलने लगे। मेरे दूर दराज के रिश्तेदार भी थे और कृपा पात्र भी, पेन्शन होने के बाद में श्री मुरलीधर जी लोयलका

के साथ काशी जी गया श्री डालूराम जी लोयलका के पास ठहरा था, दुसरे दिन में पं. वनवारीलालजी से के मिलने को विडला जी अतिथी भवन में गया, पंडित जी वहुत राजी हुवे मेरे वोरिया विस्तर अपने पुराने सेवक मेघसिंह राजपूत से मंगा लिये। में जव अतिथी भवन से वापस आ रहा था तो एक दस वारह साल की वालिका ने कहा चाचा जी मेरी मांजी आपको वूला रही हैं, मेरे को वड़ा आश्चर्य हुवा यहाँ चाचाजी कहने वाली कौन वालिका है, में उस लडकी के साथ कमरे में गया तो मेरे निकट की पडोसन श्री दुर्गादतजी पुत्र श्री गणपत रामजी मोदी को स्त्री थी, उसने वहुत आदर मान किया महोल्ले और गाँव; अपने परिवार का हाल पुछा। दुसरे दिन भोजन कराया, मैंने विडलाजी के अतिथी भवन में रहने का कारण पुछा तो वहा मेरी माताजी जो श्री रामकिसन जी डालमिया की माता है जो भगवत भजन करती है उनकी सेवा में आ रही हुं भगवान की माया का कुछ पता नही है। क्या पता कि श्री रामकिसन दासजी डालमिया क्रिरोड़पती वन जावेगें और साहु जैन जैसे उनके रिश्तेदार होगें।

पल मैं पून घनेरी चलती पल मे पता हलें न चल।
पल में पून तालाव सुखा दे पल मे करदे जल ही जल ।।

तीसरे दिन पं. वनवारी लाल जी से मैने कहा राजा श्री वलदेवदास जी विडला के दर्शन करादो तो कहा रात को आठ वजे राजा साहव मिलते हैं, मैं उनके साथ भवन में गया वहुत वडा भवन था दोनों तरफ गदा मसनद लगे हुवे थे ऊपर को वैठो निचे को वेठने का सवाल ही नहीं था। थोडी देर में राजा जी कमरे मे पधारे पुराने जमाने का काना ढ़कना टोपला तनीयादार अंगरखी गोडा मुदी धोती माथे मे तिलक चमकता हुवा चेहरा तेजस्वी मूर्ति। मैने खडे होकर नमस्कार किया, तो पंडित वनवारी लाल जी ने कहा झुन्झुनू के हनुमान प्रसाद वावलिया

हैं । तो विडला जी ने फरमाया पं. केदार नाथ जी वावलिया आपके क्या लगते है तो मैंने अर्ज किया मेरे ताउजी है । पं. केदारनाथजी वावलियां बावलिया वंश में महा विभुतीं हुवे है जिन्होने वावलिया वंश को उजागर कर दिया । फिर राजा साहव ने फरमाया किसी लड़की का विवाह करना है, मैंने अर्ज किया नहीं जी, तो फिर फरमाया किसी लडके को हिन्दू विश्व विद्यालय में भर्ती करना है, तो मैंने अर्ज किया कि मेरे तो सन्तान नही है तो बिडला जी ने फरमाया फिर कैसे आये, तो अर्ज किया आपके दर्शन करने को राजाजी ने फरमाया मै महाजन हु आप ब्राहम्ण हैं मेरे दर्शन कैसे ? मैंने अर्ज किया ।

जात पांत पुछे ना कौय हरि भजे सो हर को होय,,

राजा साहव मुस्करा दिये और पुछा कोई काम तो बतावो मैंने कहा पं. मदन मोहन जो मालवीया जी के दर्शन करा दो तो हंसकर कहने लगे यह भी कोई काम हैं, तो अपने मुनीम जो पिलानी का तोला था नाम भूल रहा हूं उससे बूला मालवीया जी से टेलीफोन मिलावो, मालवीया जी से कहा हमारा एक मेहमान आपके दर्शन करना चाहते है जवाव मिला कल ९ वजे दिन में उनको भेज दीजिय कल दस की गाडी से मे पुना में हिन्दु महासभा में जा रहा हु । फिर सेठ जी ने पुछा तुम्हारे झुझनू के बीड का क्या हाल है, कट तो नही रहा है । सेठ बिलासरायजी खेताण के परिवार का क्या हाल है. मैने सन्तोपजनक उत्तर दे दिया,

दुसरे दिन समय पर हिन्दु विश्व विद्यालय मै पंहुचा कमरे के वाहर ४० –५० सज्जन वाहर खडे थे । अन्दर गया तो पं. मदनमोहनजी के चारों तरफ सेक्रेटरी कागज पत्र लिये खडे थे । खादी का साफा सकडा पाजामा, माथे पर चंदन की टीको । चरणों में गिरकर प्रमाण किया

कमर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया फिर फरमाया आपने विडला जी को क्यू कष्ट दिया अपने आप आ जाते मैंने अर्ज किया वाहर पचास आदमी खडे है मैं भी खड़ा रहकर चला जाता आपने मन्त्री वाबू वैजनाथ दास रिटायर सैशन जज यु. पी. जो कभी जयपुर मे अपील अधिकारी जज थे। बाद में बीकानेर के गुणग्रही महाराजा श्री गंगासिंह जी ने अपने यहां हाईकार्ट की चीफ जस्टिस बना दिया था बाद मे अपने आप को हिन्दु युनिवर्सीटी को अर्पण कर दिया था, उनसे कहा हमारे रसोवड़े में इनको भोजन करावो विडला जी के भेजे हुवे आदमी है। भोजन करके श्रीमति जमना देवी जी जयपुर की विद्वान महिला थी मालविया जी ले आये थे। उन्होने तमाम विश्वविद्यालय दिखाया, रात को राजा साहव से सब हालात वर्णन कर दिये वडे प्रशन्न हुवे। ऐसी थी महा विभूती धर्म योगी कर्म योगी भक्त राजा वलदेव दास जी विडला।

"हरि सदा वसे यत्र तत्र भागवता जनाः
गायन्ति भक्ति भावेन हरिनामैव केवलम्



झुन्झुनू मे महापुरुष का आगमन

संवत १९५० में महात्मा परम विदवान श्री बाल चंद जी जति झुन्झुनू पधारे थे, आप लखनउ के निवासी थे। संस्कृत के आचार्य परम विद्वान पहलवान सुन्दर अमीर ईश्वर भक्त ब्राह्मण स्वभाव के थे। श्री गणेशनारायण जी कूशल चंदजी सरदार मलजी रामलालजी जैन श्रीमाल के प्रयत्न से वह आये थे। और श्रीमालो के पासरे मे उनका निवास स्थान था, अपने अनूयायियों को शिक्षा दिक्षा देते थे। ति महजाराज को जब यह मालूम हुवा कि झुन्झुनू में संस्कृत का कोई पढाई का साधन नहीं है। और ब्राहम्णों के युवक संस्कृत पढने को आतुर हैं तो अपने पास ब्राह्मणों के लडको को पढाणा शुरू कर दिया कुछ महिनों तो यह कार्य क्रम चलता रहा, आखिर को श्रीमाल बन्धुवों ने जति जी महाराज से कहा, हमारे को अधिक समय दिया जावे। जतिजी महाराज ने कहा, आप लोग संस्कृत पढने में कम रूचि रखते हो, ब्राह्मण युवक संस्कृत पढना चाहते है। मतभेद हो गया जतिजी महाराज पहाड पर मनशादेवी के स्थान पर चले गये। पुरोहित श्री हरिनारायण जी उस वक्त शेखावाटी के नाजिम । जो बी॰ ए. पास थे और संस्कृत के विद्वान थे। जतिजी से मिलने मनशा देवी पर गये पुरोहित जी जतिजी को देखकर प्रभा-वित हुवे, राज का काम काज करने के बाद रोजाना मिलने जाने कल सेठ बिलासरायजी खेतान जतिजी महाराज के शिष्य बन गये मनशा देवी पर मकानो की कमी थी वोंह बना दिये पहाड पर चढ़ने को खुरा और पेडी बना दी पानी का बडा कुन्ड बना दिया, और पहाड़ के नीचे गुगाणा जोडे की मरम्मत करा दी, जनता जनार्दन और विद्यार्थीयों के नहाने धोने का आराम होगया संस्कृत पढने वाले विद्यार्थीयो की संख्या बढने लगी उनके मुख्य शिष्य थे श्री पं. बिलासरायजी चौमाल पं. हनुमान बक्स जी जोशी, लक्ष्मी नारायण जी चीरासीया पं. टीकुरामजी सारस्वत,, बेनीप्रसाद जी, झीरमिरया मिश्र आदि थे। श्री हरिनारायण

नाजिम ने झुन्झुनू मे गउशाला बनाई एक बन्धा बनाया गया पहाड का पानी रोककर जो सरोवर की तरह भरा रहता था बन्धे का वालाजी आजभी मौजूद है मांजी सहाब श्री मेडतनीजी वावडी की मरम्मत कराई इन सब मे सेठ विलास रायजी खेताण झुन्झुनू ने खूब रुपये दिये। जति जी का भोजन विद्यार्थीयो का खर्चा सब सेठ जी और पिरोहित जी ही देते थे। जतिजी महाराज पहुंचवान योगी थे। जादु टोना, कई सिद्धियां चमत्कारी साधू थे। किसी का उंट चोरी चला जाता निरास होकर जतिजी की शरण मे जाना तो वोह जिस गांव जिस जगह उंट बंधा होता था, वह जगह बतला देते थे। एकबार हुकमाराम कापडी को एक चुड़ेल ने तंग कर दिया था मरने के काबिल हो गये थे। श्री हुकमाराम कापडी खेल देख कर रात को दो बजे अपने घर जा रहे थे मीरूखां जी के महल से जो रास्ता श्रीमालों के मोहल्ले की तरफ जाता है छोटा सा नोहरा जिसमें झाड़ी खड़ी थी, चुड़ेल शृंगार करी हुई खड़ी थी, कापड़ी ने कहा आवो चले साधरण औरत समझ कर कह दिया, चुडेल ने कहा आप चलो मैं आती हुं। कापड़ी जी ने अपना चोवारा खोला तो वहि चुड़ेल पलंग पर बैठी हुई मिली। पसीना आगया घवरा गये। चुड़ेल ने, पुचकारा, समझाया, पसीना सुकाया, और कहा मैं साधारण औरत का सा व्यवहार करूंगी, किसी को कह दिया तो गला घोट कर मार दूगी, तीन महिने में, कापड़ी जी सुक गये, पहलवानी चोड़ आ गई। किसी ने सुझाव दिया जतिजी के पास जाओ, हुकमाराम जी ने जतिजी से शिकायत की तो वोह डरा रही थी दांत दिखा रही थी, जति जी ने तावीज बांधा और कहा हमारे पास रहकर झाडू बुहारी करते रहना, उसके वाद कापड़ीजी दस साल जीये उस चुड़ेल के दरसन भी नहीं हुये। यह विद्या पं० विलासराय जी चौमाल को भी सिखादी थी उन्होने भी कई चमत्कारी दीखाई थी। सम्वत १९५६ का छपनिया काल पड़ गया जतिजी के वहां भुखे प्यासे वहुत आते थे। सेठ विलासराय जी

खेतान ने बहुत सहायता की पं० हरिनारायण जी नाज़िम जिले में जगह-जगह जाकर भूखे प्यासों की सहायता की। मरने वालो की संख्या ज्यादा हो गई कफन काठी का प्रवन्ध कराया। जतिजी समशमन भूमि में खुद जाते थे जतिजी की प्रसंशा सुनकर बाहर के सेठ साहूकार पंडित गण भी उनकी सेवा में आते थे, लाभ उठा कर जाते थे। जैन श्रीमाल बन्धु और उनकी स्त्रियां भो जतिजी के पास सत्संग के लिए जाती थी प्रेम श्रद्धा में कोई फर्क नहीं पड़ा कई वार तो वापस पालर में चलने को मजबूर किया जाता था जतिजी ने कहा मंशा देवी के ऐकान्त स्थान पर भजन भाव में मन लग रहा है जतिजी के कई शिष्य पढ कर तैयार हो हो गये कई पाठशालाएं संस्कृत की खोलदी। पं० बिलासराम जी चौमाल के चेले श्री मखनलाल जी चौमाल देवकीनंद जी जोशी राम-प्रताप जी, भूरामल जी शिवचंदराय जी, धानमल जी समशपुरिया इन सब चेलों में चढ़ते-बढ़ते श्री सागरमल जी मोदी थे। जिनकी वाणी में अपार शक्ति थी रात को पं० के पास पहुंच जाते थे पंडित जी कहते थे कि रात को तो सोने दो, तो सागरमल जी कहते थे की मैं तो पैर दबाने के लिए आया हूं, पंडित जी को नींद आती थी तब घर पर आते वर्ना नये २ श्लोकों का अर्थ पूछते रहते थे। पंडितों का शास्त्रार्थ जहां भी कहीं होता था मोदी जी पहुंच जाते थे सब पंडितों को हरा कर आते थे, चार पांच शास्त्रों में पंडित गण हार गये तो कई पंडित इक्कठे होकर पंडित बिलासराय जी चौमाल के पास आकर कहने लगे आपका वैश्य शिष्य तो भरी सभा में हमको परास्त कर देता है ब्राह्मणो को हरा कर ब्राह्मणा का अपमान कर देता है पंडित विलासराय जी ने सागरमल जी को आज्ञा दी की ब्राह्मणो के साथ वाद-विवाद शास्त्रार्थ मत करना, उसके बाद वे कलकत्ता चले गये हरदत्तराय जी चमड़िया के यहां ३५ रू० महिने की नौकरी करली, १ साल के बाद वह बम्बई चले गये। फैजल भाई करीम भाई के यहां सूते का काम भी होता था विद्वान,

वाणी चतुर तो थे ही सेठ के मन भा गये। लाखों रुपया कमा कर दिये। बम्बई की पहली यात्रा में पचास हजार रुपये कमाये। सागरमल जी मोदी के सात पुत्र हुये मगर एक भी जिन्दा नहीं रहा। दुसरी वार सागरमल जी वम्वई गये तो निज का धन्धा कर लिया लाखों रुपये कमाये। पं० मदनमोहन जी मालविया वम्वई पधारे, भारत वर्ष के विद्धवानों का सम्मेलन था, मालविया जी सभापति थे। सागर मल जी मोदी भी सभा में पहुंचे, चौड़ा ललाट, केशर का तिलक पंडितों जैसा लिवास वोलने लगते थे तो गंगा की तरह वोलते ही जाते थे तो रुकने का काम ही नही। सभा आरम्भ होने वाली थी सभापति पधार चुके थे तो अचानक माईक पर जाकर मालविया जी का स्तोत्र जो खुद ने वनाया था पढ़ना आरम्भ कर दिया। उत्तर भारत और दक्षिण भारत के पंडित स्तोत्र सुनकर आश्चर्य में हो गये, श्लोक के अन्त में वेश्य पं० सागरमल मोदी लिखा हुआ था। मालविया जी ने खड़े होकर स्तोत्र लिया और अपने पास वैठा लिया और परिचय पुछा व अपने गुरु का नाम पता पूछा हृदय से आशीर्वाद दिया। फिर तो वह भारत वर्ष के वड़े वड़े विद्धवानों की श्रेणी में आ गये। भाग्य ने साथ दिया, लाखों रुपये कमाये। अपने ही परिवार के लिए ईशरदास मोदी के पोते को गोद लिया। ईश्वरदास जी मोदी कुटुम्ब पाल, सरल स्वभाव के सेठ थे। एक धर्मशाला व एक कुआ भी अपनी हवेली के पास वनवाया था। एक दिन मैं और पं० देवकी नन्दन जी जोशी उनके पास वैठे थे तो एक साधू आया और श्री सागरमल जी मोदी से कहा कि हरिद्वार जाना है एक टिकट मंगवादो, कृपण स्वभाव होने से आना कानी करदी, संत ने कहा सेठ पानी मुंह तक पंहुच गया है जल्दी ही सर तक फिर जावेगा। यह कहकर साधू चलता वना। थोड़ी देर वाद मोदीजी को विचार आया अपने नौकर लालजी ठाकर को साध को देखने भेजा मगर संत नहीं

मिला। दूसरे ही दिन श्री दानमल जी तुलस्यान के निधन पर श्री मोदी सागरमल और पं० देवकीनंदन जोशी और मैं उनके पास बैठने गयें थोड़ी देर बैठ कर वापिस आये तो छावनी बाजार में श्री देवकीनंदन तो अपने घर की तरफ चल गये और मोदी जी व मैं उनकी कोठी पर चल गये, पाणी वाले को आवाज दी उसी वक्त दिल का दौरा पड़ा एक मिनट में ही बैठे पं० लखपति सेठ के प्राण पखेरू उड़ गया। उनकी धर्म पत्नी ही झुन्झुनू में थी और सब बम्बई थे। बहुत दुःख हुआ संस्कृत का वेश्य पंडित उत्तर भारत का परम विद्धवान चले गये आसन रिक्त हो गया, उनके दत्तक पुत्र सत्यनारायण मोदी है

न कर मगरूर ऐ बन्दे जरासी जिन्दगानी का।
न जाने कब फनर रूक जायेगा चलती कबानी का ।।

जतिजी महाराज के बाद झुन्झनू में संत बाबा शंकरदास जी पधारे है आप महात्मा है साधक और विद्धवान हैं, जो झुन्झनू से पश्चिम में नेहरा पहाड़ की तलहटी समस्त तालाब पर आश्रम बना कर रहते है, बाहर का पंडित या साधू सन्तो की कोई टोली आती है तो उनका आहार मान सेवा भेंट होती है, साल में कई भंडारे भी होते रहते है, रोजाना दस बीस भगत आश्रम में रहते है, इनके पास एक संत खाखी जी थे जो सौ वर्ष के करीब के थे, झुन्झुनू नगर का अहो भाग्य है, जहां ऋषि चमत्कारी संत रहते है।

उमां कहुं मैं अनुभव अपना।
सत्य हरि भजन जगत सब स्वपना ।।



खेतड़ी जिला झुन्झुनू नेहरू परिवार का तीर्थ स्थान है ।

खेतड़ी की बनावट ही कुदरत ने सुन्दर बनाई है पहाड़ी पर किला कोठी तालाब मंदिर और जमीन में धन सोना चांदी तांबा और राजा अजीत सिंह जी शेखावत जैसे चतुर होनहार राजा ।

पं० गंगाधर जी नेहरू दिल्ली के कोतवाल थे । मुगलिया हकुमत का ज्वाला आया अंग्रेज कम्पनी का सितारा बुलंद हुआ, दिल्ली में भगदड़ मची तो पं० गंगाधर नेहरू को भी काफिले के साथ भागना पड़ा, पं० का धन दौलत जरूरी कागज पत्र उपलब्धियां सब कुछ वहीं रह गयी आगरे में आकर रहना पड़ा, बड़े मुसीबत के दिन थे । आपके बड़े पुत्र पं० बंशीधर जी नेहरू १८ साल और दुसरे पुत्र पं० नंदलाल जी नेहरू १६ साल, जो अंग्रेजी में एन्ट्रेन्स को दरजे की पढ़ाई के बराबर थी। आपके एक स्यानी बहन भी थी पं० गंगाधर जी नेहरू का चौतीस वर्ष की उम्र में अचानक स्वर्गवास हो गया, चारों तरफ अन्धेरा हो गया । आपके तीसरे पुत्र पं० मोतीलाल जी नेहरू अपने पिता के स्वर्गवास के तीन महिने बाद पैदा हुवे ।

पं० बंशीधर नेहरू व पं० नंदलाल जी नेहरू की शादीयां हो चुकी थी । घर का बोझ दोनों युवकों पर आ पड़ा । जिस स्कूल में यह पढते थे, हैडमास्टर एक अंग्रेज था, उसने पं० बन्शीधर नेहरू को ८० रू० महिने देने करके उसी स्कूल में मास्टर बना दिया पण्डित नन्दलाल नेहरू को खेतड़ी में नौकरी दिलादी दोनों अंग्रेजी लिखने बोलने में अच्छे थे । दोनो ही सुन्दर थे, पर्सनलिटी अच्छी थी पण्डित मोतीलाल जी नेहरू बचपन ही में अपने बड़े भाई के पास खेतडी आ गये अच्छी तरह लालन

पालन होने लगा। राजस्थानी दाईयां अच्छी २ लोरियां सुनाती व घोड़ो पर चढाती थी। दो साल के वाद पं० नन्दलाल जी नेहरु खेतड़ी के दिवान वना दिये गये। वड़े होने पर पं० मोतीलाल जी नेहरु इलाहबाद चले गये। अपना खेतड़ी का जीवन सुनाकर वड़े खुश होते थे। जब तक जिवित रहे खेतड़ी का वखान करते रहे। पं० जवाहरलाल जी नेहरु भी खेतड़ी के एहसानों को नहीं भूलें थे। श्रीमती इन्दिरा गांधी भारत की प्रधान मंत्री हुई खेतड़ी को वहुत ऊंची नजर से देखती है। खेतड़ी का कर्ज किसी तरह अदा किया जावें। सन् १९८० के चुनाव में संजय गांधी जव खेतड़ी आये थे तो वड़े नाना जी को वहुत याद किया था और नेत्र वंद करके खेतड़ी की भूमि को प्रणाम किया था। विधी का का क्या विधान है पं० जवाहर लाल नेहरु के दादा पं० गंगाधर जी नेहरु ३४ वर्ष के थे इस आयु में स्वर्गवास हो गये और पं० जवाहर लाल जी नेहरु के नवासे श्री संजय गांधी ३४ वर्ष की आयु में ही परलोक वासी हो गये।

अफसोस !! सख्त अफसोस !!!

एक म्हारो फूल प्यारो अध खिल्यो कुम्हला गयो।
शोक बित्यों हर्ष छायो फूल वाग लगा गयों॥

राजा अजीतसिंह जी खेतड़ी की साल गिरह थी तमाम भाई वन्धु अमीर उमराव सरदार, सेठ साहूकार दरवारी केसरीया गुलावी रंग के कपड़े पहने हुए थे। नजर निसरावल हो चूकी थी गणिकाएं मंगलाचार गा रही थी आनन्द मंगल का माहौल था अचानक स्वामी विवेकानन्द जी पधार आये। यह रंग ढंग देखकर स्वामी जी के मन में यह संका हुई कि राजा तो अय्यासी हैं, अपने आप को खम्भे के सहारे छुपा कर खड़े हो गये। चतुर गणिका ने स्वामी जी को खड़ा देखकर पहचान लिया नृत्य

करती २ सर झुकाकर प्रणाम किया और स्वामी जी के मन के भाव को भांप लिया और अपना स्वर वदल कर गाने लगी प्रभुजी मेरे अवगुन चित न धरो समदर्शी प्रभु नाम तिहारो चाहे तो पार करो ।

दरवारी चौवदार को ताज्जूव हुआ कि योग के गीत कैसे गाने लग गयी । चतुर गणिका ने नृत्य करते २ राजा जी के पास गयी और इशारे से स्वामी जी की तरफ अंगुली कर दी । राजा साहव खड़े होकर स्वामीजी के चरणों में गिर गये । और लाला जी वृज मोहन जी के साथ सुख निवास में स्वामी जी को भेज दिया । दरवार का स्थगित करना व दरवार में नंगे सिर जाना दोनो अपशुकन माने जाते थे लाला जी ने स्वामी जी को सव हालात वता दी थी । दुसरे दिन स्वामी जी को साफा वन्धाया गया था । उसके वाद विवेकानन्दजी साफा त्यागा ही नही चाहे राजस्थान में रहे या वंगाल में । अमेरिका में विश्व धर्म सम्मेलन हो रहा था । दूनियां भर के विद्ववान जमा हो रहे थे । भारत से भी कई विद्ववान गये थे । राजा श्री अजीत सिंह जानते थे की स्वामी विवेकानन्द जी सामहा विद्ववान उस सम्मेलन में कोई नही हैं । राजा साहव ने सम्मेलन में जाने के लिए दो जोड़े सिला दियें और वम्वई जाकर स्वामी जी को जहाज में वैठाकर रुपये पैसे का पुरा २ प्रवन्ध करके सम्मेलन में भेज दिये गये । स्थान के अभाव के कारण अमेरिका के सम्मेलन को व स्वामी जी के प्रभाव का वर्णन नही लिख सकता तमाम वेद स्वामी जी को अंग्रेजो में याद है । थोड़ा समय मिला पर स्वामी जी के भाषणों की किताबं पढ़ी जा सकती हैं एक अमेरिकी महिला के प्रयत्न से केवल ९ मीनट का समय वोलने के लिए दिया गया था । ९ दिन तक भाषण हुआ विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द जी को विश्व विजयी की उपाधि मिली । खेतड़ी के सम्पर्क से स्वामी जी विश्व प्रसिद्ध हो गये । धन्य है खेतड़ी और राजा अजीतसिंह जी । जयपुर रियासत में खेतड़ी

को पेरिस कहा जाता था, मि० करौल ने खेतड़ी का काफी सवांर शृगांर किया था राजा सरदारसिंह जी ने खेतड़ी में टेनिस का टूर्नमिंट कराया, सीकर, झुन्झुनू, चिड़ावा, पिलानी के चैम्पीयन शामिल हुवे झुन्झुनू से जगन्नाथ गौरी शंकर टीवड़ेवाला बजरंग लाल ढंढा-रिया पीर फतेह मौहम्मद और मैं भी गया था तीन दिन मैच चले झुन्झूनू फाइनल मैच जीत गया, अजीत निवास में शाम का वक्त था खेतड़ी का चौसठ आदमीयों का वैण्ड वज रहा था चार हाथी झुम रहे थे, वाहर भीतर के मेहमान मौज उडा रहे थे। डा० गुरूवचन सिंह खेतड़ी में डाक्टर थे, वड़े हसोकड़े, टेनिस और शंतरज के खिलाड़ी व अच्छा डांस करने वाले वड़े जिदादिल सज्जन थे। उन्होने राजा साहव से अर्ज किया कि शंतरज का मैच भी होजावे। वो झुन्झूनू में पं० जयनारायण जी नाजिम के पास आया करते थे मेरे से उनकी अच्छी जान पहचान थी, मेरे शतरंज के खेल से प्रभावित थे। डा० साहव ने जव शतरंज के मैच का प्रस्ताव रखा तो मि० सक्सैना जो खेतड़ी में हैडमास्टर थे, कहा कि खेतड़ी से ३० कोस के ऐरिया में किसी को जीतने नही दुंगा, जयपुर और दिल्ली से कोई खिलाड़ी आवेगा तो उससे भी टक्कर ले सकता हुं। डा० साहव ने कहा झुन्झूनू तो १८ ही कोस है। मैच शुरु हुआ राजा सरदार सिंह जी रेफरी वने पीर फतेह मौहम्मद ने वैन्ड मास्टर से कहा श्याम कल्याण की धुन वजावो, हैडमास्टर जी घमन्ड में थे पहली वाजी हार गये, डा० साहव तो वाजे की तान में नाचने लगे, दुसरी वाजी शुरु हुई मास्टरसाहव अच्छे खेले वह वाजी वरावर हो गई तीसरी वाजी में मेरी चाल पड़ गई अपना वजीर मरा कर मास्टर जी को मात देदी, राजा साहव खड़े हो गये, अपनी मोटर में वैठकर चले गये। अजीत निवास के वाहर घोड़ा जो मास्टरजी को उनके मकान से लाता था, और वापस पहुंचा देता था, ५ रू० रोजाना मास्ट-

रजी को शतरंज के चैम्पीयन के नाम पर देते थे। घोड़े के साइस को हुक्म दिया घोड़ा ले जावो आईन्दा के लिए मास्टर के पास घोड़ा मत ले जाना।डा० साहब मु० जयनारायण माथुर जो जुडिशियल हाकिम थे। श्रीप्यारेलालजी दीवान ओंकारसिंहजी यादव समिला खजाना हाकिम सब मास्टरजी से मजाक करने लग गये। टी-पार्टी होने पर सब लोग मोटरों में अजित निवास से आगये हैडमास्टर जी ने अपना घोड़ा देखा, बेचारे रात के वक्त पैदल ही अपने मकान पर चले गये, रात के ग्यारह बजे सुख निवास में आये और कहने लगे मैं ने आपका क्या बिगाड़ा था, राजा साहब नाराज हो गये, पीरजी ने कहा आपने पहले इशारा कर दिया होता हम तो बाजी हार जाते। मास्टर साहब से ठठोली शुरु कर दी। दुसरे दिन राजा साहब जयनिवास कोठी में हम लोगों को बुलाया चाय पार्टी दी बड़े खुश हुवे और फरमाने लगे कल मैं चीन जा रहा हूं। उन्हीं दिनों जापान ने चीन पर हमला कर दिया था, राजा साहब चीन से वापस आये तो पता चला मि० हैडमास्टर साहब तो खेतड़ी छोड़ कर चले गये।

"राजा जोगी अगन जल थोड़ी पाले प्रीत,,
डरती रहीयो परसराम इनकी उल्टी रीत".



शेखावाटी के जाटों के जागृति के जनक

आर्य वीर सेठ देवीबक्सजी सराफ मण्डावा

आर्य वीर सेठ देवीबक्सजी सराफ मण्डावा क्रान्तिकारी थे मगर थे स्वामी दयानंद जी सरस्वती के अनुयायी भरा हुवा पिस्तोल हर वक्त अपने पास रखते थे। मण्डावा में आर्य समाज का मंदिर बनाया पं० कालीचरणजी को बुलाकर आर्य समाज का मंत्री बनाया गया बाका-यदा मंदिर का उद्घाटन हुआ, पंजाब से अच्छे अच्छे संन्यासी वक्ता भजनिक कार्यकर्ता, श्रीमति शान्ति देवी को बुलाया गया। शेखावाटी में जागृति की लहर दौड़ गई हजारों जाट वीर आये उनको यज्ञो पवित्र दिलाया गया बहुत बड़ा हवन कुण्ड बनाया हवन हुवा एक कार्यकारिणी बनाइ गई आर्य वीर देवीबक्स जी सराफ, पं० काली चरण जी शर्मा, चौधरी चिमनाराम जी सागांसी, हरलाल सिंह दुलई, लादुराम जी चौधरी, किसारी ठा० छलसिंह जी टांई, बस्तीराम जी दर्जी राधाकिशन जी देवड़ा मंडावा, पं० हनुमान प्रसाद वावलिया वकील झुन्झूनू। गावों में आर्य समाज के प्रचार के लिए श्री चौधरी जीवणराम जी जैनपुरा भजनिक को रखा गया चौ घासीराम जी उनके सहायक थे। गावों में विवाह शादियों के निमन्त्रण आने लगे, चेतना आई उस वक्त जनता पर तीहरा शासन था। अंग्रेज रियासत जयपुर सरदारान पंच पाना, कामदार चौधरी चुट पुटीये और खुशामंदी कई साल तो आर्य समाज की ओट में काम होता रहा, गांवों में पक्के मकान नई गवाड़ी नया वाड़ा कोई नहीं बना सकता था। गावों में कुम्हार, खाती, नाई, चमार नायक धाणकों से वेगार ली जाती थी, गांव में १० आदमी ठीकानों के जाते थे, हर घर में एक एक को भोजन करने को भेज दिया जाता था, जो उंठा छोड़ता था भोजन करने के बाद उठो थाली भी जाटनियों को

मांजणी पड़ती थी, घर में घी, दुध, दही, छाछ नि.संकोच ठिकानेदारों के आदमियों का अधिकार था। कार्यकारिणी ने इस सब प्रथाओं को वन्द करने और वेगार न देने और पक्के मकान नये वाड़े बनाने का अधिकार जनता को दे दिया, गावों में संघर्ष शुरु हो गया झुठे साचे मुकदमें बनाये जाने लगे मार पिटाई तो रोजाना का काम हो गया, चौ० चिमनाराम सागांसी को तो जान से मारने की धमकी दी गई, वोह अपने गांव में भी दो आदमियों को वंदुक देकर पहरा पै रखते थे। संवत १९९० में अजमेर में स्वामी दयानन्द जी की अर्धशताब्दी मनाई गई लाखों आदमी देश विदेशों से आय सर चौधरी छोटूराम पंजाव से सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ आये लाला लाजपतरायजी की पार्टी जिसमें कई वैंडवाजे महिलाओं की संख्या ज्यादा थी, वड़ोदा से श्री आत्मानन्द जी विद्यालय की लड़कियां आई थी। सागांसी से श्री चिमनाराम जी चौधरी ने एक बोगी अजमेर तक रिजर्व कराई थी, सैकड़ों स्त्री-पुरुष गये थे। नवलगढ़ स्टेशन पर मैं चौधरी चिमनाराम से मिला, उन्होनें अपने पास वैठा लिया मेरी खरीदी हुई टिकट वापिस करवादी, चौधरी भूदाराम जी वड़े मस्त मौला थे अपना चादरा विछा दिया, नवयुवक श्री विद्याधर जी स्वयंसेवक पानी पिला रहे थे.। गाड़ी चलने लगी तो विद्याधर जी, चिमना राम जी के पास वैटने लगे मैंने कहा कि उधर वैठ जवो तो उन्होनें एक चुटकला सुनाया आई थी छाछ मांगने होवैठी घर की धणीयानी। इन वातों को ४८ साल हो गये, कल की सी वात है, आज भी उनका वोह चुटकला याद है। खदर का पीला साफा, स्वयं सेवक की पोशाक को कौन जानता था यह युवक इतना विद्धवान और होनहार निकलेगा चौधरी चिमनाराम जी ने मेरा परिचय कराया फिर तो कई दिनों तक अजमेर में साथ रहे। सेठ देवोवक्स जी ने शेखावाटी के कस्वों में भी पंच पाने के सरदारों को जकात न देने का आन्दोलन छेड़ दिया। सेठ

साहूकार शहरी कार्यकर्ता भी साथ हो गये, खेतड़ी में उस वक्त मि० करौल साहब सिनीयर ऑफिसर थे जो पंच पानों के भागीदार थे, महाराजा साहब मानसिंह नाबालिग थे, अंग्रेजों का जोर था, जो चाहा काम करा लाते, आन्दोलन को काफी धक्का लगा। सरदार पंच पाने की मिटिंग झुन्झुन में खेतड़ी महल में चल रही थी और जनता की सभा मोदी जी की धर्मशाला में गर्मा गर्म भाषण हो रहे थे। ठा० करनीसिंहजी अडूका जो शान्त स्वभाव के सज्जन सरदार थे, सरदारों की सभा में प्रस्ताव रखा की जनता के प्रतिनिधीयों को बुलाकर आपस में फैसले की बात चीत की जावें, उनका यह प्रस्ताव मंजूर हो गया। श्री वचनसिंह जी लाडखानी कामदार मंडावा और श्री नारायणसिंह जी मेड़तिया वगड़ जो बिसाऊ के कामदार थे, दोनों ही भले आदमी जनता से मिलनसार और सौम स्वभाव के सज्जन थे कुछ लोगों को साथ लेकर जनता की सभा में गये रामा-श्यामा हुई सरदारों के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया गया। श्री देवीबक्स जी सराफ सुखदेवदास डालमिया, विड़ला जी के हेडमुनिम श्री जौहरीमल रूंगटा वगड़, गंगा बक्स सराफ मुकन्दगढ़ श्री हरमुखराय जी छावसरिया नवलगढ़, श्री चिरंजीलाल टीवड़े वाला, द्वारकादास, तुलसाराम, केदारमल मोदी, बसन्तलाल साह हनुमान प्रसाद बावलिया झुन्झुनू खेतड़ी महल में पंहुचे सब ने तय कर लिया कि केवल देवीबक्स जी ही बातचीत करेगें। महल में पहुंचे, श्री देवीबक्स जी सराफ ने मंडावा के सरदारों से ही नमस्ते की करौल साहब की तरफ देखा भी नहीं। जनता की कठिनाईयां दुख दर्द सब बयान किया एक घण्टा लग गया शाम हो गई, आखिर को यह तय हुआ की पांच आदमी जनता की और चार आदमी सरदारों के एक हफ्ते बाद खेतड़ी में मिलकर जो तैय कर देगें वोह मंजूर होगा, समय पर दोनों पक्ष वाले खेतड़ी पहुंचे, सेठ जी ने दो कलसे पानी के गोठड़ा गांव में से ही भरा

लिये थे। बात-चीत का दौर शुरू हुवा करीब करीब सब बाते तय हुई एक दो सवाल जो पेचीदा थे वोह बाकी रह गये साहब ने कहा यह कल हो जायेगे तो सेठजी ने कहा मेरे पास तो पानी ही आज तक का है तो ठा. साहब श्री बिसन सिह जी बिसाऊ ने फरमाया कि खेतड़ी में पीने के पानी की कमी है ? देवीबक्स जी सराफ ने कहा मेंने खेतड़ी का अन्न जल त्याग रखा है, तो करोल साहब को ताज्जुब हुवा कारण पूछा तो सराफ जी ने कहा राजा अजीत सिह जी की बाइजी की शादी में एक लाख रुपये उधारे दिये थे, कई बार तकाजा करने आया रुपये नहीं मिले तो मैंने राजा साहब से अर्ज कर दिया कि मैं न तो रुपये मांगने आऊंगा आप रूपये दोगे तो भी न लूगां और आज के बाद खेतड़ी का अन्न जल भी नहीं खांउ पिउंगा, साहब को ताज्जुब हुवा खेतड़ी के मुहाफिज दफतर को बुलाया, खेतड़ी का रिकार्ड रूम बहुत अच्छा था, महाफिज दफतर श्री हकीमू दीन खांजी थे उन्होने आधी घंटा में ही वोह खरडा जिसमें सेठ नाथूराम जी देबी बक्स सराफ मंडावा के एक लाख रुपये जमा थे ले आये और वोह फाईल जिसमें सेठजी ने लिखा था, रुपये नही लूंगा न खेतड़ी का पानी पिउगां करील साहाब ने खडे होकर सेठजी के चरणो में अपना टोप रख दिया,। ठा० बिसन सिह जी बिसाऊ ने फरमाया देखो आपने हमारे शेखावाटी के सेठो की उदारता फिर तो करील साहब ठा. बिसाऊ ने इस मुकदमे में कोई भाग नहीं लिया, और जयपुर मे जनता के हक में फैसला हो गया। राजा अजीत सिह जी ने रुपया देने की बहुत कोशिश की मगर खेतड़ी में एक लाख रुपया जुडा ही नहीं। थोडे समय के बाद राजासाहब आगरे मे ताजमहल की जो ऊंचीं मीनार है इस पर खड़े हुवे चारों तरफ का नजारा देख रहे थे अचानक गिरने से स्वर्गवास हो गया, । शेखावत वंश के एक महापुरुष प्रतापी राजा हमेशा के लिये चल बसे। जनता मे शोक छा गया महाराजा

श्री माधो सिंह जी जयपुर ने दो दिन तक भोजन नहीं किया। करौल साहब ने सेठजी को रूपये देने की बहुत कोशिश की परन्तु सेठ जी ने कहा मैं थूका हुवा नही चाटता।

एक दिन सेठजी अपने नोहरे में बैठे हुवे थे नोहरा गांव के बाहर है। एक आदमी घबराया हुआ डरता हुवा आया और कहने लगा आपके नोहरे के सामने जो टीबाहैं उसमे काचा कलवा बोल रहा है सेठजी उस आदमी के साथ गये जिधर से रोने की आवाज आ रही थी, एक बच्चा कुछ घंटे पहले जन्मा हुवा हांडी मे पडा हुवा रो रहा था. सेठजी ने हाडी उठाई और अपने नोहरे मे लेजा कर दाई को बूलाई और जन्म घुटी दी फिर एक धाय को नौकर रख लिया लडका पल पोस कर वडा हो गया उसका नाम लादू रख लिया गया, मगर हांडी में उस लड़के की एक आंख चली गई इससे वोह काना हो गया। वडा हो गया जिन्दगी भर सेठजी की सेवा करता रहा। झुन्झुनू के ही एक सज्जन कहुं या दुर्जन एक युवती को वहका कर वनारस से ले आया और कहा में तेरे से विवाह करलू गा अपने मकान में रखूगां, झुन्झुनू आने पर अपने मकान मे अपने मोहल्ले में भी नही रख सका उससे मिलना जुलना भी ओले छाने करता था, वडा विश्वास घात किया, मैरे को मालूम हुवा तो मंडावा से श्री देवी वक्स जी सराफ और काने लादुराम को बूलवाया लड़की से मिलें उसको मंडावा ले गये और लादुराम से आर्य विधी के अनुसार उसका विवाह कर दिया। दोनों हम उम्र थे चैन की वंसी बजने लगी।

एक दिन सेठजी के पास पांच सात आदमी वैठे थे चौधरी श्री लादुराम जी किसारी ने कहा सेठजी मेरे तो सन्तान नहीं है तो सेठजी ने कहा किसी लड़की को गोद ले लो, पास वैठे लोगों ने कहा

लड़की तो अपने सासरे चली जावेगी मगर लादुराम जी अपने वडे भाई गणेश जी की पुत्री को गोद ले लिया और वनस्थली में पढाया, उस लड़की का नाम है श्रीमति सुमित्रा सिंह जो चार वार जीत कर राजस्थान विधान सभा की विधायका वनी मिनिस्टर भी वनी परम विद्‌वान सुयोग्य महिला है। सेठजी वोमार हो गये तो मैं वृस्पतिवार को शाम को जाता था और शनिवार को सुवह झुन्झनू आता था उस जमाने मे शुक्रवार की कचेडी की छूट्टी होती थी। सेठजी ने ४ पीपे शुद्ध घी और दस मन चंदन और कफन काठीं का सव सामान अपनी जिन्दगी मे इक्ठा कर लिया था पं. कालीचरण जी खेमराज जी को अंतिम संस्कारों की सव विधि और वोह जगह जहां पर दाह संस्कार करना था सव वतला दी थी। ऐसे थे आर्य वीर सेठ देवीवक्स जी, मंडावा में और भी विभुतियां हुई है ठा० हरिसिंह जो जति सति थे। अपनी धोती दुसरों से नही धुलाते थे। उनके सुपुत्र राज रिषी ठा० जयसिंह जी जिनका अधिक समय राम भजन में ही वर्षो व्यतित होता है। पं. सूरदास जी, श्री राधाकिशन जी ढंढ, श्री शिव प्रसाद जी नकलीढंढ़ जो संस्कृत के महाविद्‌वान थे। पं. वाला वक्स जी ढंढ और श्री झवनजी मिश्र सतंरज के चैम्पियन, थे आज भी छिपे रुस्तम पं मुरलीधर जी ढंढ महाविद्‌वान है और ज्ञानी ध्यानी हैं।



हमीर हठी सेठ बिलासराय खेताण झुन्झुनू

सेठ बिलासरायजी खेताण बड़े धार्मिक व दानी सेठ थे। हठ में हमीर थे। करनी वरनी में विश्वास था बारों महिने चेजा चलता था, धर्मशाला, मंदिर छतरी कई हवेली कई कुये, नोहरे, वाग, वगीचे, गोशाला बनाये थे, एक रोज मुनीम ने कहा कल चेजारे मजदूर क्या काम करेगें तो सेठजी ने कहा की घर के जोशीं की हवेली वनवा दो, हवेली वनने शुरु हो गई, सात व्राह्मण हमेशा पुजन पाठ जप तप करते रहते थे।

सेठजी जयपुर गये हुवे थे। श्री वंशीधर जी खेताण महनसर वाले पास वैठे थे। १४ जनवरी मकर सक्रांति का दिन था, धर्म पुन्य भजन भाव हो रहे थे। सेठ जमनालाल जी वजाज आये और कहने लगे व्राह्मणो को सव दान पुन्य करते हैं महाजनो को कोई दान नहीं देता है तो सेठ विलासराय जी ने कहा महाजन लेने को तैयार हो तो सही, जमनालालजी वजाज ने कहा दस हजार रुपया कोई दान देने वाला हो तो में दान ले सकता हु तो सेठ विलासराय जी खेताण ने पानी की चलू भरकर एक पैसा लेकर जमनालालजी वजाज को मंत्र वोलकर दे दिया, उसी वक्त दस हजार रुपये मंगा दिये। इस दान की चर्चा चारू तरफ फैल गई, वरावरीयों में काना फुसी हुई वजाजजी भोजन करने वैठे तो उनका हाथ थाली की तरफ नहीं गया आत्म ग्लानी हुई। सेठ देवकरनदास रामकुवार नवलगढ़ वालों की दुकान से दस हजार रुपये मंगवा दिये, और सेठ विलासराय जी के पास आये और कहा यह वीस हजार रुपये लो, विलासराय जो ने कहा में तो दान कर चुका आपकी मरजी आवे उस काम में वरतो तो गऊशाला जयपुर मे २० हजार रुपये दे दिये फिर जमना लाल जी वजाज ने भोजन किया।

सेठ विलासराय जी खेतान ने अपने बड़े लड़कों की शादी मे दो बार नगर नूत किया था, झुन्झुनू के तमाम हिन्दु और मुसलमान, हाकिम, अमीर गरीव, सव को जीमाया था, खुद जाकर नूतां देकर आते थे सात दिन तक जीमनवांर चली सेठ जी ने श्री महानन्दराम जी भामी और श्री भोलाराम जी जलेवीचोर से पुछा की सव जीमलीये तो श्री भोलाराम जी ने कहा भंगी नही जीमें, घर के भंगी को वुलाया जीमने को कहा तो इन्कार हो गये और कहा हम तो हमारे कानकायदे से जीमेंगें। सेठजी ने कहा, कैसा है आपका कानकायदा, तो घर के भंगी ने कहा सोने की वुहारी चांदी का खरला देवोगे तो जीमेंगें। श्री भानीराम सोनी को वुलाया गया, २५ तोला सोने की सीकों की वहारी वनाई गई दोसौ तोला चांदी का खरला वनाया गया और्त मर्द नांचते कूदते वनड़ा ढोला मारु गाते हुए जीमने को आये। आज भी यह मर्यादा है भंगी ऊंठ उठाकर ले जावेगा पर आप जीमाणा चाहोगे आसन वीछाकर नहीं जीमेंगा। सेठ विलासराय जी की धर्म पत्नी का स्वर्गवास हो गया वहुत सम्मान के साथ चलावा किया हवेली से शमसान तक भाड़ वहारो पानी का छिड़काव व दोनो तरफ रास्तो पर फरियां, चांदी के रुपयों की वोछाड़ वितना ही मन घी चन्दन और सामग्री हजारों आदमी चलावे में गये। जव दाह संस्कार करके वापस आये हवेली के खुरे पर सेठजी ने एक पैर रखा तो विचार आया, कि मैं हवेली में किसके पास जाऊंगा जिसके पास जाता था वह तो स्वर्ग सिधार गई। अव तेरे को हवेली में जाने का हक नहीं है। दायें वायें श्री महानन्द रामजी भामी श्री भोलाराम जी जलेवी चोर खड़े थे, सेठजी हवेली में न जाकर निचे के नोहरे में वैठ गये, जन्म भर हवेली में नहीं गये। ताले लगाकर कमरे वन्द करा दिये गये। सेठजी ने लक्ष्मीनाथ जी का सुन्दर मन्दिर वनाया मन्दिर के

पश्चिम में रास्ता था, रास्ते के पश्चिम में सेठजी की सुन्दर कोठी इस रास्ते को छ्वा कर गाटर चढा दी भगवान के भोग के लिए रसोवड़ा वना दिया नीचे से रास्ता रखा था, जानवर सर्दी वरसात में आराम करते । पंचपाने के वकीलों ने दावा कर दिया रास्ते के वीस हाथ उचीं गाटर हटवाई जावे केवल कुछ रूपये लेने के लिए । सेठजी ने कहा ठाकुरों का कोई नुकसान नहीं किया निचे रास्ता चालू है । मुकदमा चला सेठजी का पक्ष सही था, । मगर विधी का विधान तो कोई टाल नहीं सकता । शेखावाटी के नाजीम काश्मीरी पं० मनमोहनलाल जी अटल थे । उस जमाने नाजीम जी को दिवानी फौजदारी रेवन्यू के सव अधिकार थे वोह शेखावाटी के करता धर्ता होते थे । सीकर खेतड़ी के और पंचपाने के सरदारों के अफसर होते थे । सीकर, खेतड़ी जाते थे तो राजा जी स्टेशन पर उनकी अगवानी करने को आते थे, वोह महाराजा जयपुर के प्रतिनिधी माने जाते थे । वहुत वड़ा मान सम्मान था नाजिम जी मातहत तीन सौ छोडे सिपाही सात सौ सिपाही कुमेदान उनका अफसर होता था, तीन सौ नागा स्वामियों की जमात कई थानेदार डिटी सुपरिडेन्ट उनके मातहत थे । नाजिम साहव ने मौका देखने का हुक्म दिया दोनों फकीरों के वकील साथ थे । सेठजी की हवेली के आगे से ही मन्दिर का रास्ता था । इधर से नाजिम साहव आ रहे थे सेठजी मन्दिर की तरफ से आ रहे थे कोई सौ कदम का फासला था । नाजिम साहव को सलाम न कर सेठ जी अपनी हवेली चढ गये, पंचपनी के वकीलों ने मौका का नाजायज फायदा उठाकर कहा यह नाजिम साहव का अपमान नहीं है महाराजा जयपुर का अपमान है । नाजिम साहव मौके पर पहुंचे और मुदई के वकीलों से कहा आपका क्या नुकशान है दोनों तरफ सेठजी की इमारत है नीचे के रास्ता है गाटर वीस हाथ उंचो है तो पंचपाने के वकीलों

को कोई युक्ति नहीं सुझी तो कहा सरकार बात की लड़ाई है अभी सेठजी ने आपको ही कुछ नहीं समझा शेखावाटी में फिर हमारा राज़ कैसे चलेगा, नाजिम साहब गुस्से में थे गाटर को हटवाने का हुक्म दे दिया सलाम के खातिर मियांजी को रूसाने वाली कहावत हो गई।

"हाकीम की आंट बूरी, मूंडोरी टाट बूरी, वैश्या की हाट बूरी, औरत की चाट बूरी, भाईयो की फूट बूरी"

फिर तो सेठजी भागकर जयपुर गये। इधर राजाजी खेतड़ी ठाकर बिसाऊ, नवलगढ़, मण्डावा, अलसीसर, मलसीसर चौकड़ी ने महाराजा श्रीमाधोसिंह जी के चरणों में तलवार रखदी, और अर्ज किया शेखावाटी से शेखावतों का राज़ जा रहा है, एक महाजन अपमान कर रहा है हमारा मुकाबला कर रहा है, महाराजा जयपुर अपने भाई बन्धुओं को नाराज नहीं करना चाहते थे। नवाब साहब जो उस ज़माने में मुसाहिब थे, उनको बुलाकर शेखावाटी के नाज़िम का हुक्म बहाल कर दिया गाटर हटाने का हुक्म दे दिया। सेठजी खवास बालाबक्स से मिले। खवास जी ने महाराज़ा साहब से कहा यह तो अन्याय हो गया श्री लक्ष्मीनाथ ज़ी के मन्दिर की रसोवड़े की गाटर है। होनहार की बात रात को ही महाराजा श्री माधोसिंह ज़ी का स्वर्गवास हो गया। यह घटना अक्टूबर १९२२ ई० की है सेठज़ी को बड़ा दु:ख हुवा और अपने पड़ोस के गोयनका घराने की बुढीया का श्राप याद आ गया कि हमारे टोड़े क्या उतराये है तुमको भी प्यारी ईमारत तुड़वाने का दु:ख होगा। सेठजी उसी वक्त श्री गोविन्ददेवज़ी के मन्दिर में गये और कहने लगे कि "तूं कुछ और विचारत है नर तेरो विचार धर्‌यो ही रहगो" सीधे ही वृन्दावन चले गये झुन्झुनू में जीवन भर पैर नहीं रखा

वृन्दावन में सेठजी ने दस हज़ार रूपये की हूंडी की थी, रात को डाकू आये एक डाकू सेठजी की छाती पर छुरा लेकर वैठ गया सेठज़ी ने तीजोरी की तालो देदी डाकू ने कहा पुलिस में रिपोर्ट करोगे तो सेटज़ी ने कहा में न रिपोर्ट करूगां न फरयाद, डाकू रुपये लेकर चंपत हुवे। सेठजी सुवह श्री विहारीजी के दर्शन करके हरिद्वार ज़ो प्रस्थान कर गये। हरिद्ववार मैं गंगा किनारे दस वीघा ज़मीन लेकर वहुत सुन्दर मकान वनाया। जमीन के तीन भाग किये एक भाग राजा वलदेव दास जी विड़ला को दुसरा केशर देव जी पोदार रामगढ़वालों को दे दिया। सेठजी ने वर्षों तक कड़ी तपस्या की। मेरे नाम जनरल पावर आफ अटर्नी यानी मुख्तार नामा झुन्झुनू वेनी प्रसाद सुलताने वाला मुनीम था और मैं मुख्तार आम। श्री चिरंजीलाल जी खेतारण सेठजी के तीसरे पुत्र की निगरानी थी। सेटजी के सवसे छोटे पांचवे पुत्र श्री लीलाधर जी का अचानक स्वर्गवास हो गया घर वालों को और गांव वालों को आशा थी अव तो सेठजी झुन्झुनू में एक वार आवेगें ही, परन्तु नही आये। सेठजी के पोते श्री भगवति प्रसाद खेतारण का सम्वन्ध श्री आनन्दी लाल जी पोदार नवलगढ़ की पोती से हुवा था उस मौके पर भी आने का पक्का विचार था. पोदर जी झुन्झुनू मैं वैठा विवाह करने आये थे। चीठी तार भुगतते रहे आज आते है कल आवेगें मगर नहीं आये उनका ध्यान तो भागवत भजन में ही लगा रहा। झुन्झुनू का कोई भीं आदमी हरिद्वार जाता था उसकी आशा पुरी की जाती थी स्थान खाना-पीना कोई आर्थिक मदद चाहता थां तो वोह भी गुप्त दान के रुप दी जाती थी। राजा वलदेव दासजी विड़ला उनको अपना गूरु व वड़ा भाई मानते थे, सेठजी का ज्ञान तपोवल वहुत वढ गया था, कई साधु महात्मा सेटज़ी के पास आते थे उनको दक्षिणा दी जाती थी। राज़ा वलदेव दास जी विड़ला ने एक दिन कहा

अन्त समय काशीजी में मरने से मोक्ष प्राप्त होती है, वोह काशीजी चले गये सेठजी ने कहा समय पर में भी काशीजी आजाउंगा। श्री चिरंजी लाल जी खेताण ने पंचपाने के सरदारों से फैसला कर लिया गाटर चढाने का पट्टा करा लिया, सेठ जी को प्रभात काल में आभास हुवा कि आपकी संसार यात्रा जल्दी ही समाप्त होने वाली है सेठजी काशीजी चले गये। चारों पुत्र पोते पोती लड़कियां प्यारे प्रसंगी सब काशीजी मै इकट्ठे हो गये। झुन्झुनू में वीर बहादुर सिहजी नाजिम आगये उन्होंने गाटर चढाने का हुकम दे दिया, गाटर चढा दी गई सेठजी को गाटर चढाने का तार दे दिया तो माने नहीं कहा मुझे भुलाया जा रहा है श्री घासीराम जी तिवाड़ी और मैं दो ही आदमी झुन्झुनू में उनका काम संभालने वाले थे। तिवाड़ी जी गाटर का फोटू लेकर काशीजी गये। सेठजी बड़े खुश हुवे। दुसरे दिन गंगाजी के बीच में बड़ी नाव लेजायी गई सब परिवार वालों से पुछा आप लोग मेरी मोक्ष चाहते हो, सबने कहा हम आपकी मोक्ष चाहते है तो सेठजी ने कहा मेरे अन्त समय में मेरा सर राजा बलदेवदास जी बिड़ला के गोडे पर रखा जावेगा तो मेरी सद्गति होगी चारों भाई एक दुसरे की तरफ देखते रह गये। अन्त समय आया तो राजा बलदेवदास जी ने गोडा लगाया, जय गंगे हर हर गंगे कहकर सेठजी स्वर्ग सिधार गये पंडितगण गीता, रामायण, वेद पाठ कह रहे थे। ऐसे थे सेठ महा पुरुष सेठ बिलासराय खेताण। जब तक श्री लक्ष्मीनाथ जी का सुन्दर मंदिर रहेगा सेठ जी अमर रहेगें। झुन्झूनू में पुराने पोस्ट ऑफिस के सामने सेठजी ने एक पीपल का सुन्दर और मजबूत गट्टा बनाया था जिस पर लिखा हुवा है सेठ रामकरणदास सेठ बिलासराय खेताण श्री मन्नालाल जी खेताण के पुत्रों ने दो सौ गज में सड़क बनाई है। जिस पर एक पत्थर तो पुराने पोस्ट ऑफिस के पास लगाया है और दुसरा जयरामदास जी के

मन्दिर के पास दोनों ही पत्थरों पर लिखा गया है "सेठ मन्नालाल खेताण मार्ग" "क्या विलास राय खेताण मार्ग" गाड़ियों के मोहल्ले में होगा । सेठ तो झुन्झुनू में श्री विलास राय खेताण ही हुवे है, झुन्झुनू आबाद है तब तक उनका नाम भुलाया नहीं जा सकता । अच्छा हो दूसरे पत्थर लगाकर "सेठ विलास-राय, मन्नालाल खेताण मार्ग लिखाया जावे, भूल सुधारी जावे, चन्द्रमा पर सूर्य का प्रकाश पड़ने पर ही रोशनी देता है। श्री मन्नालाल जी खेताण के सुपुत्र श्री परमेश्वरलाल जी ज्योतिष के प्रकाण्ड पंडित है, आस पास के पंडित उनसे टक्कर नहीं ले सकते यह इश्वरीय देन है, उनके केवल एक पुत्र श्री चन्द्रबाबू खेताण है और सात लड़कीयां है आप कनाडा सरकार में पच्चीस हजार रूपये महिने में उच्च पद पर ऑफि-सर थे, प्रभु की क्या माया है आपको वैराग्य होगया, संसार के सब सुखों को लात मार कर नौकरी से स्तिफा देकर भारत चले आये और अपने पड़ दादा सेठ विलासराय जी खेताण के हरिद्वार वाले आश्रम में, आ विराजे । आपकी आयू छोटी ही है, विवाह भी नहीं किया है । भागवत् भजन और अध्ययन में मन लगा लिया, माता-पिता के एक ही पुत्र और सात बहिनें, आप साधारण गृहस्थ जैसे कपड़े पहनते है, जरा भी मान गूमान नहीं है, स्वयं भोजन बनाकर भगवान के भोग लगाते है । मैं हरि द्वार में मिलने गया, प्रेम से मिले । मैं ने कहा मेरे को भी कुछ बतावों तो श्री गंगाजी की तरफ ईशारा कर दिया, इनसे पुछो । आपका सिद्धा-न्त है कि—

बाहर क्या दिखलाइये, अन्तर जपिये राम ।
क्या काज संसार से, तुझे धरनी से काम ।।

आश्रम के मुनिम को बुलाया और कहा मेरे को भोजन करने में एक बज जावेगा, इनको मारवाड़ी ढ़ावे में भोजन करा लावो। आश्रम में कमरा खोल दिया। दो दिन रहा शाम को आरती और प्रार्थना के वक्त उनसे मिलना होता था। आपका पुस्तकालय बहुत बड़ा व सुन्दर है कई भाषाओं के दुर्लभ ग्रंथ मौजूद है। परीक्षा के तौर पर मैंने गूजराती पंडित श्री रामचन्द्र जी डोंगरा की भागवत् मांगी दो मिनट में हा लाकर देदी।

"चलना भला न कौस का बेटी भली न एक।
कर्जा भला न बाप का जो प्रभू राखे टैक"॥

श्री वसन्तलाल जी व श्री मन्नालाल जी खेताण का मैं मुख्तार आम रहा हूं। विवाह आदि में शामिल रहा हूं। श्री मन्नालाल जी खेताण की पुत्री श्रीमती रतनी बाई का विवाह नवलगढ़ में हुआ था। दस दिन रहना हुआ क्या रजवाड़ों का सा विवाह किया गया। श्री बद्रीप्रसादजी खेताण का व मेरा डेरा एक ही कमरे में था, श्री आनन्दीलाल जी पोद्दार ने खेताण परिवार की शाही मीजबानी दी, बेंडबाजा नगर के सेठ साहूकार, गीत, नाच, रंग रंगेलिया, खातिर तव्वजो। श्री मन्नालाल जी खेताण जवाई बनकर चिड़ावा गये थे। श्री कन्हैयालाल जी शेखसरिया चिड़ावा वालों के लड़के श्री भजनलाल का विवाह था। सिल्वर किंग श्री मोतीलाल जी मलसीसर वाले लड़के वालों के भतई थे, नगर नूत था बड़ी अच्छी महफिले सजाई गई थी। भारत की प्रसिद्ध गायिकाओं को बुलाया गया था। कविवर श्री नानूलाल चिड़ावा वाला की पार्टी का भी अनोखा खेल हुआ था। कवि दुलाराम उस वक्त यौवन पर था, आज तक ऐसी महफिले और गाजा बजाना नहीं देखा, हम लोगों को बीस भरी चांदी की छन्नी और बीस किलो पकवान दिया

गया था। खातिर तव्वजों, मेहमान नवाजी का तो वर्णन करे तो दो पाने भर जावें। कई सरदार और राजा साहब खेतड़ी भी पधारे थे। श्री नानगराम जमनादास रंगून वालों का लड़का था, और श्री नौरंग राम जी खेताण की परिवार की लड़की थी गाजियावाद में वैठा विवाह हुआ था। श्री राधावल्लभ जी खेताण झुन्झनू जागला जी के जवाई थे। मेरे को भी खेताण राघावल्लभ जी साथ ले गये थे। दस दिन गाजियावाद में रहे। जवाई जी की खातिर होती है वह सब जानते है। रसोये, टहलवे कार, रंग राग हर तरह की छूट। पंडित श्री भावरमल जी शुक्ल कन्या पक्ष वालों की तरफ से पधारे हुये थे, उनको देखकर हमारी बोली वन्द हो गई, शुक्ला जी का कितना सम्मान, हर करोड़पति चरण छूता था, मेरे तो वोह यज्ञो पवित्र के गूरू थे, पंचम स्वर में वोलते थे। मैं उससे डरता भी था। श्री राधावल्लभ जी खेताण भी उनका सम्मान रखते थे। गुरू पंडित भावरमल जी शुक्ला जी की आशिर्वाद का प्रताप है कि मैं मुर्ख होते हुवे भो विद्वानों की मण्डलो में अपना गुजर वसर करता रहा। चालीसी को उम्र तक संतानन होने पर उन्होंने एक अनुष्ठान भी किया था। तीन योग्य पुत्र है। धन्य है गुरू कृपा की महिमा। और शंकर भगवान साकम्बरी माता की कृपा।

एक वार विड़ला जी के यहां चर्चा चल रही थी कि विवाह में कितना समय लगना चाहिये तो बावू घनश्याम दास जी विड़ला ने कहा तीस मिनट में विवाह होता है, तो चतुर गुरू श्री भावरमल जी ने कहा पच्चीस मिनट से ज्यादा नहीं लगते। त्रिडला परिवार में किसी वाई का विवाह होता था, पंडित भावरमल जी शुक्ल ने पच्चीस मिनट में विधी विधान से विवाह करवा दिया। विड़ला जी बहुत राजी हुवे आईन्दा के

लिए शुक्ला जी ही विवाह में बुलाये जाते थे। बिड़ला भवन कलकत्ते में रोजाना वरणी करने को पं० झाबरमल जी शुक्ल झुन्झुनू को नियुक्ति करदी। आज भी उनके सुपुत्र पं० किशोरीलाल जी शुक्ल वरणी करते है।



पिलानी के अनेक नाम और अनेक रुप

दलेलगढ़, रायला पिलानी, वड़वाली पिलानी और बिड़लावाली पिलानी। दलेलगढ़ में पक्का गढ बनाया गया जिसका नाम ही दलेलगढ़ रखा गया। तीन कुवें बनाये गये। कच्चे मकान ज्यादा थे पक्के कोठे तो गिनती मिनती के थे। ठा० दलेल सिंह जी अमलदार थे, उनका अमल जब उगता था, कि कुवे में से चड़स ढ़ाणे के पास आ जाता था, तो किलीया गुण में से कीली खोल देता था, भरा हुआ चड़स कुवे में जा गिरता था और भुण की गड़गड़ाहट होती थी तब खंखारा करते थे, तब अमल उगता था। ठा० दलेलसिंह जी वृद्ध भी हो गये थे, छोटा परिवार था, खुद ठुकरानी और एक छोटा पोता मंगलसिंह, ठाकुर साहब की कमजोरी देख कर ठा० लक्ष्मणसिंह जी महनसर ने अचानक हमला कर कर दिया, वृद्ध ठाकुर को मार भगाया, ठा० दलेलसिंह जी जंगल में वलौदा गांव के पास रात कुवे के पास कच्ची खुड्डी और झोपड़ी वंधाली वैराग्य हो गया था, अज्ञातवास की तरह रहने लगे। भगवान का भजन करने लगे। ठा० श्यामसिंह जी बिसाऊ नारनौल को जीत कर वापस आ रहे थे वलौदा गांव में विश्राम किया, ठा० श्यामसिंह जी का व्रत था, पुजा पाठ करके श्री गोपीनाथ जी के भोग लगाते थे और

थाल में अपने परिवार का कोई सदस्य होता था, उनको साथ में जिमाते थे। अकेले भोजन नहीं करते थे। अपने कामदार साह शंकरदास जी से कहा आज तो उपवास ही करना पड़ेगा, मेरे खानदान का कोई नहीं है तो साह शंकरदास ने कहा आपके काका जी इस गांव में मौजूद है, ठा० श्यामसिह जी ने नाराज होकर फरमाया क्या बकता है, मेरे काका और इस गांव में, साह शंकरदास पुराने कामदार ने सब कहानी सुनादी, ठा० साहब ने फरमाया तुरन्त सम्मान पूर्वक उनको ले आवो, साह शंकरदास ने एक रथ और कई घुड़सवारों को साथ लेकर पैदल चल दिये। ठा० दलेलसिह जी ने देखा यहां भी ठा० लक्ष्मणसिह मारने को आया है। साह शंकरदास ने पसर कर प्रणाम किया और कहा ठा० श्यामसिह जी बिसाऊ आपको बुला रहे है, खुद गये मगर ठकुरानी ने कंवर मंगलसिह जी को साथ नहीं भेजा ठा० श्यामसिह जी ने खड़े होकर उनको प्रणाम किया, आदर मान से बैठाया, भोजन का थाल आया तो ठा० दलेलसिह जी ने कहा आज तो आपके साथ जीमलूंगा, कल यह थाल कहां से आवैगा तो ठा० श्यामसिह जी अपना आबा गांव बलौदा और भूरिवास और कासनी गांव और दो हजार बीघा जमीन झुन्झुनू गांव से पुर्वी दक्षिणी भाग की दे दी जिसमें नेता, चौधरी की ढाणी, फौज के मालियों का मोहल्ला और मेरा नोहरा है। इनका पट्टा कर दिया, मामला मातमी खुद ठि० बिसाऊ से देना कर दिया, आनन्द से सज्जन गोठ हुई, दुःख सुख की बातें हुई, दलेलसिह जी को साथ चलने को बहुत कहा तो ठा० दलेलसिह जी ने कहा अबतो झोपड़ी में ही मन लग रहा है, दलेलगढ़ नवलगढ़ के ठाकरां को देदेना जो मेरे नज़दीक है। यह कहकर ठा० श्यामसिह जी को विदाई दी।

जिन्दगी की डौर सौंपी हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखें चाहे झोंपड़ी में वासदे,

धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये,
जांही विधी राखै राम वांही विधी रहिये,

ठा० लक्ष्मणसिंह जी को पता लगा की ठा० श्यामसिंह जी इधर आ रहे है तो अपना बोरिया बिस्तर उठाकर भाग गये। दलेलगढ़, नवलगढ़ के ठाकरों को देदीया गया, पिलानी की रिआया को जो पट्टे जमीन के दिये जाते थे उनमें कस्वा दलेलगढ़ लिखा जाता था, बिडला परिवार और सेठ साहूकार जनता के पास पट्टे है सब में दलेलगढ़ दर्ज है पिलानी का कहीं नाम नहीं है। पिलानी पर जगत पिता की कृपा हुई बिड़ला जी जैसा परिवार आया, होनहार महापुरुष पैदा हूवे, लक्ष्मी और सरस्वती का संगम हुआ अब तो पिलानी सुदामा पुरी हो गई। वेद शास्त्रों ने और संत महात्माओं ने सतसंग की बहुत महिमा की है, वर्तमान जमाने में बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला भारत में पहले सज्जन है जिनकों हजारों महापुरूषों का, साधुसंत पंडित महात्मा और देश भक्तों देश के चोटी के नेताओं की संगत की है। अंग्रेजों ने अपनी जड़ भारत में जमा ली थी तो बंगाल में एक क्रान्तिकारियों का गठन हुवा था और अंग्रेजों को मार भगाने की योजना थी, यह संगठन गुप्त था, जिसमें जान पर खेलने वाले उसके सदस्य थे श्री कन्हैयालाल घोष ही उसके मंत्री और कर्ता धर्ता थे बिड़लाजी उग्र विचार के थे उस पार्टी के सक्रिय मेम्बर बन गये, कई बदमाश अंग्रेजों की हत्या हुई, कई जगह बम फेंके गये अंग्रेजों की सी०आई०डी० को इस संस्था का पता चल गया कई देश भक्त गिरफ्तार हुवे फांसी पर लटकाये गये। जिनके नाम वारंट जारी हुवे उसमें श्री घनश्याम दास जी बिड़ला का भी नाम था, वारंट पर दस्तखत होने से पहले एक बंगाली महाशय आदि और बाबू घनश्याम दास जी बिड़ला से कहा पांच हजार रूपया दो, तोरछी नजर से उसकों तरफ देखा, मालूम होता है यह कोई जिम्मेदार आदमी है, रुपये का

भुगतान कर दिया गया, उस व्यक्ति ने कहा आपके नाम गिरफ्तारी वारंट है आप क्रान्तिकारीयों के सरगना है फौरन कलकत्ता छोड़ दो विड़लाजी अज्ञातवास हो गये और पिलानी रियासत जयपुर में आकर प्राईव्हेट रहने लगे एक घण्टे वाद वारन्टों पर दस्तखत हो गये। दौड़ आई पर विडलाजी का पता नही लगा। महाराजा साहव जयपुर को लिखा आपकी रियासत के रहने वाले श्री घनश्याम दास विड़ला को गिरफ्तार करके राजपुताने के गर्वनर के सामने पेश करो, झुन्झुनू के नाजिम के नाम हुक्म आया, नाजिम साहव दल वल सहित पिलानी पहुंचे, लम्वी घोड़ी ओछी भीख, शौरगुल पकड़ने का वहुत हुवा, तीन दिन के पड़ाव के वाद नाजिम, श्री अव्दुलसमद खां पठान वगड़ वालों ने रिर्पोट कर दी कि छः महिनों में विड़ला जी पिलानी नही आये, महा-राजा साहव ने नाजिम की रिर्पोट के हवाले से राजपुताने के गर्वनर को रिर्पोट भेजदी, जयपुर दरवार खुद गिरफ्तारी के विरुद्ध थे, एक साल पिलानी में रहे। कलकत्ता में वाईसराय का तवादला हो गया, लार्ड कर्जन आ गये जोड़ तोड़ वैठा लिया गया वारंट को दीमक चाट गई, पकड़ धकड़ वाली फाईल ही गुम हो गई, वावू घनश्यामदास विड़ला का प्रथम विदेश यात्रा का विचार हुआ, सवाल पैदा हुआ किसको साथ ले जावे तो पंजाव केसरी लाला लाजपतराय पर नजर पड़ी भारत में उस वक्त तीन ही सितारे चमकते थे वाल, पाल, लाल लाला जी से सीधी वात करने की हिम्मत नही हुई, गांधीजी से कहा आप लालाजी को विदेश यात्रा में मेरे साथ जाने को तैयार कर दे, गांधीजी मुस्कराये, लाला लाजपतराय गांधीजी से मिलते रहते थे। गांधीजी ने लालाजी से पुछा आपका आर्य विश्व विद्यालय कैसे चलता है तो लाला जी ने आर्थिक कठीनाई वतलाई गांधीजी ने कहा आप छः महिने तक श्री घनश्यामदास विड़ला के साथ विदेश यात्रा पर चले जावो लालाजी

रजामंद हो गये, लाहौर जाकर अपने साथी महात्मा हंसराय और स्वामी अजानन्द परिव्राज को काम संभला कर विड़ला जी के साथ रवाना हो गये, दुनिया देखी नये नये कारखाने देखे अच्छे अच्छे श्रम नेताओं से मिले बहुत कुछ देखा अंग्रेजी के प्रकान्ड पंडित वन गये, फाईनेन्स को समझा, छः महिने में पारस वन गये। भारत आये लाला जी को छः लाख रूपये भेंट किये गये जो लाहौर आर्य विश्व विद्यालय में खर्च हो गये। महात्मा गांधी की सेवा करने लगे पं० मदन मोहन मालवीया जी के आज्ञाकारी हो गये रात को मालवीया जी जव आराम करते थे तो श्री घनश्याम दास जी पैर दवाते थे। मालवीया जी को नींद आ जाती थी तो आते थे मालवीया जी अंग्रेजो के जमाने की पार्लियामेन्ट के सदस्य थे और भारत के राजेन्द्र मंडल के सभापति थे, राजेन्द्र मंडल का सालाना जलसा होता था उसमें राजा, महाराजा नवाव आते थे करीव छः सौ कुर्सी थी। पं० मदन मोहन मालवीया जी आते थे जव सव महाराजा नवाव खड़े होकर प्रणाम करते थे, सभापति का आसन ग्रहण करते थे। एक वार अंग्रेजों के जमाने की पार्लियामेंट का चुनाव हो रहा था। श्री प्रकाश जी के मुकावले में वनारस से वावू घनश्यामदास जी को खड़ा कर दिया सेठ भगवानदास जी शिव प्रसाद जी का काशी में वहुत प्रभाव था, सेठ और विद्वान थे हजारों कार्य कर्ता उनके साथ थे। लोग चक्कर में पड़ गये कि काशी में घनदास विड़ला कैसे जीत सकते हैं। पं० मदन मोहन मालवीया जी की पहली सभा काशी जी के वड़े चौक में हुई मालवीया जी ने कहा घनश्याम दास विड़ला की जीत मालवीया की जीत है, और घनश्याम दास विड़ला की हार मालवीया की हार है, यह ऐलान सुनते ही हजारों पंडे पंडित साधु सन्यासी और मालवीया जी के भक्त उनके साथ हो गये।

और काशी नरेश भी मालवीया जी के खेमें में आ गये। चुनाव हुआ श्री धनश्याम दास जी प्रवल वहुमत से जीते, वावु श्री प्रकाश जी हार गये श्री धनश्यामदास जी ने रामायण, भागवत्, महा भारत श्रुति, संस्कृत और हिन्दी के ग्रंथ भी है, कई भाषाओं के जानकार हैं। रोजाना एक नई पुस्तक पढ़ते। आपकी धर्म पत्नी का स्वर्गवास हो गया, आप केवल ३३ साल के थे, दुसरा विवाह करने के लिए कई करोड़पति अपने जाने पहचाने रिश्तेदारों ने जोर दिया साफ इन्कार हो गये, कई विद्वान होनहार लड़कियों ने भी पीछा किया मगर कामयाव नहीं हुई, आपने ऐलान कर दिया आजन्म ब्रह्मचारी रहूंगा भगवान ने आपका व्रत निभा दिया आपके पिता राजा वलदेवदास जी ने गांधी जी से जोरदार शब्दों में प्रार्थना की, धनश्याम का विवाह करा दो, आजकल के युवक तो ३०-३२ साल की उम्र में पहला विवाह करते है। गांधीजी ने टटोला तो उनके चरणों के हाथ लगा कर कह दिया आचरण के वारे में आपके पास कोई शिकायत नहीं आवेगी। राजा साहव का तर्क था।

धन यौवन और ठाकरी तां उपर अविवेक,
यह चारों भेला भयां अनर्थ करे अनेक,

फिर तो आपने ऐसा प्रोग्राम वना लिया अपने व्यवसाय में पढ़ने लिखने में, काम काज संभालने में सतसंग में समय लगाने लगे, पांच मिनट भी जीवन फालतू की नही खोई, मन तो ठाला होता है तव वूरी वातों में दौड़ लगाता है आपने मन रूपी घोड़े के मजवूत लगाम लगादी और अपने मजवूत हाथों में थामली, पिछे की दोनों टांगे पीछाड़ी की मजवूत रस्सी से वांध दी, आप मन पर असवार है, मन आप पर असवार नहीं हैं।

दुनियां भर में फाईनेन्स (वित्त) के समझने वालों में आपका पहला नम्बर है, एक आध पौईन्ट में कोई आगे पिछे हो सकता है परन्तु आप तो हरफनमौला है, यानि सकल गुण निधान है। बाबू राजेन्द्र-प्रसाद जी राष्ट्रपति बनने से पहले कई बार पिलानी स्वास्थ सुधारने को आते थे श्री घनश्यामदासजी उनकी सेवा में रहते थे। एक बार पं० जवाहरलालजी नेहरू पिलानी पधारे थे तो ऊंट की सवारी का प्रोग्राम रखा ऊंट को दुल्हे की तरह सजाया गया था पंडितजी ऊंट के अगले आसन पर बैठ ऊंट की नकेल अपने हाथ में ली पिछले आसन पर बाबू घनश्यामदासजी ऐसे चढे जैसे पुराने ऊंट के सवार है वोह ऊंट भी बडभागी था जिसने भारत के दो महाविभुतियो को एक साथ अपने ऊपर बिठलाया, हम लोग डर रहे थे कि ऊंट दौड़ लगा कर पंडितजी को गिरा न दें, पंडितजी घोड़ो के तो अच्छे सवार थे। शायद ऊंट का तो पहला ही मौका था। बाबू घनश्यामदासजी अक्सर विदेश यात्रा में जाते रहते है, वहां के बड़े बड़े आदमी आपके सम्मान में रात्री भोज देते है, फ्रांन्स वाशिगंटन लंदन में तो ऐसे मौको पर सुरा और सुन्दरियों का जोर रहता है, अब तो भारत में सांस्कृतिक कार्यक्रम में दुनियां भर की विश्व सुन्दरियों को बुलाया जाता है, देश विदेश की नामी फिल्मी गायिकाओं को बूलाया जाता है।

"पनघट जाते पन घटे पनघट जांको नाम
कहिये पन कैसे रहे पनिहारी के धाम"
"पनघट जाते पन घटे यही कहे सब कोय
पनघट जा नहीं पन घटे जो घट मे पन होय',

वावू राजेन्द्रप्रसादजी १५ दिन के टूर पर पिलानी पधारे थे, उनको शतरंज का भी शौक था, उनके वुढे सैक्रेटरी जो कई भाषाओं के विद्वान थे मथुरा वावू नाम था, अच्छे खेलते थे। पदमश्री श्रीधरजी वैद्य और स्वामी गोविन्ददासजी मेरे को भी अपने साथ ले गये। पाँच वजे भोजन करके राजेन्द्र वावू वाहर आये शतरंज वीछी, राजेन्द्र वावू खुद मोहरों के हाथ नहीं लगाते थे एक छोटे डंडे से मथुरा वावू को वतलाते थे। ४५ मिनट से ज्यादा नहीं खेलते थे। खेल शुरू हुआ मेरे को खेलने का मौका मिला चाल पड गई अपना हाथी पिटाकर मात करदी, मथुरा वावू जीतते थे तो नया शैर सुनाते थे। वावू राजेन्द्रप्रसादजी ने कहा लालाजी नया शैर सुनावो तो मथुरा वावू ने कहा में तो वाजी हार रहा हुं, आप को शैर सुनने की लगी हुई है, शैर सुनना हो तो जीतने वालो से सुनो, राजेन्द्र वावू मेरी तरफ होकर मुस्कराये मैंने अर्ज किया—

यह प्रतिष्ठा की अनौखी धाक है
यह न हो तो जिन्दगी वैवाक है
कौइ पिछे से इसको न काटले
इसलिये आखों के नीचे नाक है

समय पूरा हुआ, वावू घनश्यामदासजी विड़ला और श्री सुखदेवदासजी पांडे आगये, फिर हवाखोरी को गये पिलानी चिडावा सड़क सुनसान रहती थी, रास्ते में भीड भडाका नही था नई नई वातें और अनमील वचन सुनने को मौका मिलता था। फिर तो राजेन्द्र वावू के पास जाने का एक तरह का पास पोर्ट मिल गया।

बाबू घनश्यामदासजी अमेरीका जा रहे थे, पडोस के मन्दिर के महन्त स्वामी चरणदास ने आकर कहा गोविन्ददास कल से भोजन नही कर रहा है, कहता है की मेरे को भी बाबू के साथ अमेरीका भेज दो मैंने बहुत समझाया कि तूं पढा लिखा नहीं है जाकर क्या करेगा दयालू बिड़ला जी ने कहा आपका आदेश हो तो में गोविन्ददास को लेजाऊंगा जोधपुरी लिबास बनाये गये बन्द गले का कोट सकडी बिरजिस, लहरियो के साफे गोविन्ददासजी का गौरवरण भरा हुआ शरीर छः फुटे जवान दमदमाता मुस्कराता चेहारा हाथ में छः फुट की लाठी, सभा चतुर अनुशासन में रहने वाले थे। अमेरीका को पहुंचे एक दिन वाशिगटन के बाजार में पैदल घूम रहे थे गोविन्ददासजी का हूलिया और लिबास देख कर कई नव युवतियों ने उनको घेर लिया था कई सवाल और हंसी ठट्ठों की बातें की गई गोविन्ददास को समझा दिया गया था चुप चाप जो कहे सुनते रहना बोलना कतेई नहीं मुस्कराहट चेहरे की मत खोना। एक खूब सूरत युवा अखबार बेचता हुआ बाबू घनश्यामदासजी के पास आया और तीन अखबार रोजना, साप्ताहिक और मासिक अखबार दे दिये बिड़लाजी ने सोचा यह कोई विद्यार्थी है अखबार बेचकर अपना काम चलाता है, अखबारों की कीमत के अलावा एक सौ रुपये उसको दे दिये, लड़के ने नम्रता से कहा यह किस बात के, तो फिर बिड़लाजी ने कहा में समझता हूं आप विद्यार्थी है और खर्चा चलाने के लिये यह पेशा करते हो, युवक ने जवाब दिया आपकी यह समझ तो ठीक है कि में विद्यार्थी हूं, मगर गरीब नहीं हूं अखबार बेचने से मेरा कॉलेज और होस्टल का खर्चा चल जाता हैं, लड़के ने कहा इस कौने से उस कौने तक एक हजार फुट लम्बी चोड़ी मेरे पिता की बिल्डिग है, लाखों डालर महिने के किराये के आते हैं। मगर मेरा उनसे

कोई लेन देन नहीं है, वाप की कमाई वाप की और वेटे की कमाई वेटे की। आपके हिन्दुस्तान में क्या बैटा वाप की कमाई खाता है ? वावू घनश्यामदासजी युवक की वातें सुनकर हैरानो में पड गये। और मन में सोचा कि हिन्दुस्तान में वाप की कमाई का तो जन्म सिद्ध अधिकार है। मौका लगे तो पडोसी रिश्तेदार विवाह की सम्पती हड़फ जावें और डक्कार भी नहीं ले । वावू घनश्यामदासजी विडला का नियम हैं रात्री के ९ वजे सोजाना टेलीफोन, घंटी सव हटादी जाती है सुवह ४ वजेउठना भजन गाना। आप गायक और सूरीले भी है, इकतारे पर शव्द सुनने का वहुत शौक है पिलानी में आपकी हवेली के पास स्वामी श्री चरणदासजी का मन्दिर है, ४ वजे आरती के वाद श्री चरणदासजी भजन गाते थे विडलाजी को सुनाते थे मीताराम सुनार भी पहुंच जाते थे। ६ मील रोजाना घूमना आपका कार्यक्रमहै।

जयपुर में वाणिज्य मंडल का सालाना अधिवेशन था देश विदेश के वड़े वड़े उद्योगपति पूजींपति (वित्त) के सुरमा आये हुये थे। वावू घनश्यामदास सभापति थे। महाराजा साहव जयपुर ने इनको रात्री भोज दिया था, और भी कई राजा महाराजा अंग्रेजो को निमंत्रित किया था, और भोज का समय रात्री के १० वजे का था, आप ८ वजे ही राम वाग पहुंच गये, महाराणी श्रीमती गायत्री देवी को ताज्जूव हुआ मुख्य मेहमान २ घंटा पहले ही कैसे आगये। विड़लाजी ने कहा में तो ९ वजे ही सो जाता हूं मौसमी का रस और सुखे मेवे खाकर आगये १० वजे सव मेहमान आय, मुख्य मेहमान को न देखकर पूछताछ हुई तो सव वातें वतलादी गई। ऐसे हैं विड़लाजी टाइम के पावन्द, पिलानी में पढ़े हुये होन हार विद्यार्थी, मंत्री, मुख्य मंत्री, सांसद, विधायक वडे इन्जीनियर, डॉक्टर, उद्योगपति, किसान,

जवान, देश विदेश में चारों तरफ पिलानी का आभार प्रशंसा कर रहें हैं। मेरा पुत्र भो डॉ० दयाशंकर बावलिया झुन्झुनू निवासी तीन साल विद्या बिहार में पढा है तमाम खर्चा बिड़लाजी का लगा था, और ६ साल तक उत्कल प्रदेश में ५०) रु० माहवार भी। यह सब श्री आत्मारामजी पांडिया की मारफत मिलता था उत्कल प्रदेश से एम.बी. बी. एस. और राजस्थान से एम. एस. किया नेत्र विशेसज्ञ है। में और मेरा परिवार श्री बिडला परिवार के आभारी है साथ ही श्री आत्माराम जी पांडिया के माध्यम से हुआ उनका भी आभार मानता हूं।

बिडला परिवार पर परमात्मा की कृपा है और भी बनी रहेगी उनके शुद्ध आचरण और जन सेवा धम कर्म से "यतो धर्म ततो जय" भगवान बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला को स्वस्थ रखें और सौ साल की आयु दें।



सेठ चिरंजीलालजी टिबड़ेवाला झून्झूनू

मार्च १९२७ की बात है मैं जयपुर जा रहा था, सीकर के स्टेशन पर दो महिलाऐ रेल के डिब्बे में मेरे पास वाली सीट पर आकर बैठ गई। बात चीत शुरु हुई कहने लगी फतेहपुर में मैं अध्यापिका थी, अचानक स्कूल बन्द हो गया। अब हमारे गांव मथुरा जा रही है दोनों मां बेटी थी, मथुरा देवी अध्यापिका जवान बेवा थी दुसरी उसकी माता थी। मैं ने बड़ाई में आकर कह दिया झुन्झुन आ जावो, मेरा नाम लिखा दिया,

और सेठ चिरंजीलाल जी की हवेली का पता लिखा दिया। पांच दिनों बाद में सेठजी के साथ शतरंज खेल रहा था, और भी कई आदमी वैठे थे। अचानक मथुरा देवी और उसकी माता जी ने आकर नमस्ते की, और मेरे से कहा हम आ गई है सेठजी ने पुछा क्या माजरा है, मैं ने शर्माते हुए सब बातें बतादी, सेठजी ने कहा भले आदमी मेरे से पुछा होता उनका आदर सत्कार किया गया, उसी वक्त श्री वसंतलाल जी साह आ गये, वोह वड़े ज़िन्दा दिल और खुश मिजाज आदमी थे। रोते हुवे को हंसाना तो उनके वांये हाथ का काम था। सेठजी को बिड़दाया और कहने लगे, ।।

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं ।।
किसकी बनी रही है किसकी बनी रहेगी।
किसकी तनी रही है किसकी तनी रहेगी ।।

सेठजी वड़े खुश हुए। अपने पुराने नौकर जूमरदी खां कायमखानी को उनके साथ अपनी धर्मशाला में भेज दिया और एक कमरा वतला दिया। धर्मशाला के नौकर से उनकी सार संभाल के लिये कहला दिया। दूसरे ही दिन धर्मशाला के दो तीवारों में लड़कियों की कक्षा लग गई १०० रूपये माहवार उनका वेतन कर दिया। दो महिने के वाद अपनी हवेली से पश्चिम में जगनानियों की गली में एक मकान किराये पर ले लिया कन्या पाठशाला ठाठ से चलने लगी, मेरे को पाठशाला का मंत्री वना दिया। आज तो उस पाठशाला में पढ़ने वाली कई लड़कियां दादी और नानी हो रही हैं।

सांवन का महिना था बड़े जोरों की बरसात हो गई, तमाम धर्मशाला और नूरमल जी वालों की हवेली और ताले पानी से भर गया। लाला भोलानाथजी की हवेली और बाड़ा भर गया श्री भावरमल टिवड़े वाले की हवेली बाद में बनी है। धर्मशाला का मुख दरवाजा उत्तर की तरफ ही था, पूर्व वाली तो मोरी थीं धर्मशाला के मुसाफिरों को फाटके डाल कर मोदी जी की धर्मशाला में पहुंचाया गया।

सेठजी की आंखो में आंसू आ गये। फिर तो धर्मशाला के ऊपर कमरे बना दिये गये और आलेशान एक पुस्तकालय बना दिया। ऐसे मौके का सुन्दर पुस्तकालय शेखावाटी में नहीं है। पुराने अस्पताल पश्चिम और उतर की तरफ जो कमरे बने हुए है वो भी सेठ चिरंजीलाल टीवड़ेवालों ने ही बनवाये है। जो प्रसिद्ध डा० श्री ताराचन्द जी गंगवाल के वक्त में बनाये थे। श्री खेमीसती जी के मंदिर में पानी दूर दूर से लाया जाता था, एक कुवा भी सेठजी ने ही बनाया था। आपकी एक बगीची स्टेशन रोड़ पर है, वहां पर सुबह-शाम सैकड़ो आदमी मुंह हाथ धोने व स्नान करने जाने थे। उस जमाने में लोग बाग तालाब बावड़ी राणीसती खेमीसती और चारों तरफ की बगीचीयों में ही स्नान ध्यान पुजा पाठ करते थे। अब जो हायर सेकैण्ड्री स्कूल की बड़ी इमारत सेठजी की बगीची से दक्षिण में बनी हुई है, यह भी सेठजी की पट्टा सुदा ज़मीन थी, तमाम २५ बीघा जमीन राज्य सरकार की प्रार्थना पर दान कर दी सेठजी को पहलवानी का बहुत शौख था। मशहूर पहलवान श्री गौरधन ज़ी रेवारी सुलताना वालों को अपनी बगिची में रखा, श्री गौरधन ज़ी पहलवान ने पटियाला महाराजा के मशहूर पहलवान श्री गामा को पटियाला में ही पछाड़ा था। झुन्झुनू में सैकड़ों लड़कों को बगैर जांत-पांत के भेदभाव के तैयार किये थे।

श्री राधाकिशन जी पिरोहित चिड़ावा पहलवानी करते जो महिने में १५ दिन झुन्झुनू रहते थे। आप सेठजी के कुल पिरोहित है। सेठजी टेंनिस भी खेलते थे वगीची में टेंनिस ग्राउण्ड वनाया था। आज तो श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी तुलस्यान एडवोकेट ही उस जमाने के सज्जन पहलवान नजर आते है। आप टेंनिस भी अच्छे खेलते थे।

सेठ चिरंजीलालजी टीवड़े वाला ने करांची में सेठ स्वरुप पृथ्वीराज स्वरुपचन्द रूंगटा वगड़वालों के सीर में त्तौल का धन्धा किया था अच्छा कारोवार चलता था, एक वड़े अंग्रेज की कम्पनी के माध्यम से काम होता था सेठ चिरंजीलाल जी वम्वई गये हुवे थे, पिछे से साहव का २५ साल का लड़का मोटर ऐक्सीडेन्ट से मर गया। २० दिन के वाद सेठजी वम्वई से आये तो मालूम हुवा की वड़े साहव का लड़का मर गया। आप अजरख वने वेठने के लिए साहव के वंगले पर गये कहने लगे आपका लड़का मर गया वहूत वुरा हुवा साहव ने जब वात सुनी तो गम और गुस्से में भर गया, उपर के कमरे में से आलमारी में पड़ा हुआ पिस्तौल लेने चला गया, साहव के मुसलमान वहरा, साहव के दिल की वात समझ गया। सेठजी का हाथ पकड़ कर वाग की पीछे की मौरी से भगा दिया और कह दिया जान वचानी हो तो भाग जावो, मौरी के ताला लगा दिया। वहरा गुसलखाने को साफ करने लगा अंग्रेज भरा हुवा पिस्तौल हाथ में लेकर आया कमरे वाग और वाग की वाहर की सड्क में चक्कर लगाने लगा वहरे से पूछा तो कह दिया मैं तो गूसलखाने को धोकर साफ कर रहा था, साहव दिन भर कुर्सी पर टैविल के सहारे पडा रहा, और वार वार मे कहता रहा मेंरा घाव भर गया था मारवाड़ी सेठ ने मेरा घाव हरा कर दिया मेरे मरे हुवे की याद ताजा कर दी।

इधर सेठजी अपने मकान का कमरा बंद करे पड़े रहे परमात्मा का धन्यवाद करते रहे, रात को वहरा आया सव वाते वताई। सेठजी ने मन मांगा इनाम दिया उसी रात को करांची छोड़ कर सेठ चिरंजीलाल जी टीवड़ेवाले झुन्झुनू के लिए रवाना हो गये। मेरा छोटा भाई मुन्शी गजानन्द वावलिया जी सेठजी के नौकरी करता था उनके साथ आगया अचानक काम वन्द करने से सेठजी को दो लाख का नुकसान हुवा, जो वगड़ वाले रूंगटों को चुकाना पड़ा।

मेरे मकान के आड़ोस में और सेठ चिरंजीलाल जी टीवड़ेवाले की हवेली के पाड़ोस में दादू द्वारा का स्थान था जिसमें स्वामी तोलारामजी रहते थे, वो ही उस स्थान के मालिक थे, हर वक्त दादूराम सत्यराम की धूनी होती रहती थी। वचपन से ही यह धुनी मेरे दिल में समा गई इसीलिए श्री दादूदयाल जी महाराज और उनके भक्ती में शृद्धा ग्रौर स्नेह है। संत वृद्ध हो गये स्वर्गवास हो गया रामगढ़ दादू द्वारा के संत उनके करीवी थे यह स्थान उनके अधिकार में चला गया था रामगढ़ के संतों ने लाला श्री भवानी चरणजी को किराये पर दे दिया था जो १२ साल रहे लालाजी के सात पुत्र थे, उनके नाम याद रहना कठिन था मैं ने लालाजी से कहा आपके पुत्रों के क्या क्या नाम है तो लालाजी ने एक पहेली सुनाई।

"सदो मदो ग्रौर भीसन, रामा विरजू ग्रौर किसन,
इनके वीच कन्हैयालाल यह सातों लाला जी के लाल,

मेरे को सेठ चिरंजीलाल जी टीवडे वाला ने कहा यह दादू द्वारा मिल जावे तो कन्या पाठशाला वना देवें। सेठ श्री जमनालालजी वजाज रामगढ वाले दादू द्वारे के सेवक थे।

मालूम हुवा सेठ जमनालाल जी वजाज सीकर आये हुवे हैं। पत्र लेकर में सीकर गया, वजाज जी ने पत्र पढ कर दुसरे दिन रामगढ़ गये, मेरे को भी साथ ले लिया, उन दिनों उंट देवता ही सवारी के साधन थे। संतो से सेठजी की वातचीत हुई। जोधादास जी साधू को मेरे साथ झुन्झुनू भेज दिया, पांच सात दिनो तक जोधादास जी झुन्झुनू रहे। महात्मा उदयराम जी और भंडारी रामरूपजी से बात चीत हुई दोनों संतो ने अपनी अनूमति दे दी। लाला जी भले आदमी थे सात दिनो में मकान खाली कर दिया। और सेठ चिरंजीलाल जी को दादू द्ववारा संभला दिया, । क्या दिया क्या लिया सेठ जमनालाल जी वजाज जाने या सेठ चिरंजीलाल जी या रामगढ़ के संत परन्तू दादू द्वारे का संत का उपयोग हुवा। दूसरे दिन राजपंडित श्री मूरलीधर जी मंहमिया को वुलाकर महुरत दिखाया गया दूसरे दिन का मुहंत निंकला, पं० जयनारायण जी दोलिया उस वक्त शेखावाटी के नाजिम थे जो ईश्वर भक्त और पहलवान, गायक, लौक प्रिय सज्जन थे। उनको वुलाया गया नगर के गणमान सज्जन पधारे पं० शिवचरण राय जी खाजपुरिया ने अच्छी कविता पढ़ी सेठ चिरंजीलाल को सूखी नदी मैं नाव चलाने वाला केवट वनाया गया। पुजा का समय हुवा परन्तु जजमान का आसन खाली था सेठजी ने आसन पर वैठने से इन्कार कर दिया, अपनी ९ साल की पुत्री लीला को आसन पर वैठाकर पुजा करवाई दान दक्षिणा और लाडू वांटे गये। उन दिनो सेठ चिरंजीलाल टीवड़ेवाला का हाथ तंग था। दो लाख रूपये रूंगटों को देने थे। अपनी माता से पचास हजार का गहना लेकर गिरवी रखा एक साल में स्कूल तैयार हो गया। स्कूल की नींव रखा कर काम नागरमलजी टीवड़ेवाला कोसम्भला कर वम्बई चले गये। चार लाख रूपये सट्टे में कमा लिये दो लाख रूपये रूंगटों को दे दिये पचास हजार का अपनी मांजी का

जेवर छुटा लिया कुछ धर्मशाला में और कुछ गउशाला में दे दिया वावा जी फक्कड़ के फक्कड़ ।

हर कारज में हर कृपा से वो मन वात निहारत है ।
मन मोहन अपनी कृपा से नित उनके काज संवारत है ।।

नई स्कूल का गाजे वाजे से उद्घाटन हुवा अपनी पुरानी स्कूल से लड़कियां नई स्कूल में आ गई । अव कन्या पाठशाला का भवन राज्य सरकार की तरफ से चल रहा है हजारों लड़कियां पढ़ चुकी हजारों पढ़ेगी स्कूल सेठ चिरंजीलाल जी और उनके पिता श्री नरसिंहदास जी टीवड़ेवाले की किर्ती वखान कर रहा है ।

थोडे ही वर्ष पहले झुन्झुनू नगर मे धार्मिक वृती के लोग वहूत थे । श्री मोतीराम जी हलवाई और श्री रामदीन जी वंका श्री भोलारामजी जलेवीचौर और श्री मूरलीधर मन्ना लालजी चौमाल एकादसी को श्री कल्याणरायजी के मंदिर में एका दशी का जागरण किया करते थे, सैकडों औरत मर्द आते थे, जन्म अष्ठमी जल झूलनी ग्यारस को तो विशेप आयोजन किये जाते थे । श्री भोलारामजी जलेवीचौर तो अपनी दुकान पर रामायण का पाठ करते थे । उधर जोशियों का गटा और इधर भगवानदास वंके की दुकान तक उनकी आवाज सुनती थी । उनकी आवाज मर्दानी थी वाजार मे इतना शोर गूल भी नही था । मै तो श्री भोलारामजी के साथ मैम्वर रहा हूं नगर पालिका का उस जमाने चैयरमैन नाजिम जी हुवा करते थे । श्री वलदेवदास जी वंका को रामलीला का वहूत शौक था । उस जमाने मे अयोध्या जी से अच्छे अच्छे संत महात्मा आते थे । भक्ति रस ही प्रधान था रामलीला वड़े मन्दिर में होती थी । महन्त श्री मथूरादासजी पुरा सहयोग

और सहायता देते थे। मेरे को रामलीला का शौक श्री बलदेवदास जी बंका ने ही लगाया था, श्री बलदेवदास बंका ने खडखडी गांव में मन्दिर बनाया था, भोग के लिये काश्त की जमीन भी चढाई थी। श्री अनेलाल जी पुजारी की औलाद के कब्जे में है श्री उमादान जी अनेदान जी बारठ का भी पूरा पूरा सहयोग रहा, वोह खडखड़ी गांव का मालिक था श्री बदरी दासजी खेताण बाजार झुन्झुनू का हीरो था कोई भी बड़ा आदमी बाज़ार में से जाता था, तो श्री बदरी दास की दुकान पर रूके बगैर रामा श्यामा किये बगैर नही जाता था। झुन्झुनू में जब नया नाजिम व तहसीलदार आता था तो बाजार में बाजा गाजा तीन सौ घोड़ी तीन सौ दादू पंथियो की जमात के साधू सात सौ सिपाही कमेदाम पंच पानों के वकील सब सवारी पर जाते थे। श्री बदरी दासजी अपनी दुकान नई दुलहन की तरह सजाया करते थे। उनको रामरमी करने का भी ढंग निराला ही था। नया नाजिम मोहित होता ही था एक पोस्ट मास्टर ने श्री बदरीदास जी खेताण पर मुकदमा कर दिया कि कैसा भगत है सोने भी नहीं देता है। श्री बदरीदासजी ३ बजे रात को उठकर अपने हवेली के गोखें पर बैठकर, रघुपति राघव राजाराम की धुनी लगाते थे। उनकी आवाज तेज थी पोस्ट मास्टर साहब का ही तबादला हो गया। श्री दुर्गादत्त जी खेताण उस जमाने मे चलती फिरती बैंक थे। हजारों रुपयों की हुंडी श्री बिड़ला जी और बगड़ के रूंगटों की आती थी। और भी दुकान दारो की हुन्डी आती जाती रहती थी।

श्री केदार मल मोदी की दुकान उनका हेड आफिस था, पता भी पन्नालाल सूरजमल की दुकान का ही दीया करते थे।

कुछ वर्षो तक श्री मखनलाल जी खेताण का भी नगर मे अच्छा चलन रहा, गरीबों और अमीरों की कामना पुरो होती थी। विवाह शादी मे चीज वस्त भी दिल खोल कर देते थे। सरदी के मौसम में तो ताजा जलेबी श्रोर दूध से जाने वालों की मनवार होती थी, दो लडने वालो को समझा बूझाकर राजी वाजी करते थे। कुछ अपने पास से भी खर्च करते थे, किसी ने पंच वनाया तो वगैर रु० रियायत के फैसला देते थे। सेठ चिरंजी लालजी टीवड़ेवाला के पास श्री भगतरामजी वैठे थे झुन्झुनू गौशाला की हालत वहुत खराव थी, रुपया पैसा कोप में नहीं था, श्री भगतरामजी वहुत मेहनत करके रुपया पैसा लाते थे सेठ चिरंजीलालजी टीवडेवाले उनके साथ थे। एक साल तक दोनो सज्जनों ने दौड धूप करके गायों कों मरने से वचा लिया। चिरंजीलालजी टीवड़ेवाला के पास एक युवक ग्राया और कहा श्री मखनलाल जी ने १००)रुपये ग्रापके भेजे हैं। चिरंजीलालजी ने कहा मेरे तो याद नहीं है श्री भगतराम जी ने कहा गउशाला में दे दो। गउशाला में दे दिये गये।

झुन्झुनू का ताल यानि गांधी चौक जो झुन्झुनू का नाक माना जाता है। श्री नरसिंहदास चिरंजीलाल टीवड़ेवाला की धर्मशाला है उसमें मुसाफिरों को हर तरह का आराम मिलता हैं। धर्मशाला में पुरा प्रवन्ध है। वाकायदा मैनेजर रहता है, लेटरीन, नहानघर, विजली, पानी, पलंग ठाकुरजी का देवरा, ढावा, वारात के लिये सव साधन धर्मशाला के कर्मचारी खुद तकलीफ उठाकर मुसाफिर को आराम देते हैं।

पड़ोस मे श्री ईसरदास जी मोदी की धर्मशाला है उसके ताले लगे हुये हैं। धर्मशाला में उल्लू बोलते हैं दिन-रात की प्याऊ थी वह भी वन्द कर दी गई है, मोदीजी के जमाने में आधी रात को भी कोई मुसाफिर

आवाज देता था तो फौरन धर्मशाला की मोरी खोली जाती थी, पानी पिलाया जाता था, चारपाई दी जाती थी। मोदीजी झुन्झुनू होते तो खुद धर्मशाला में जाकर मुसाफिरों से सुख-दुख की बात करते थे। धर्मशाला के बाहर श्री मांगोलाल टीवड़ेवाले ने पूरी साग की दुकान कर रखी थी गरीब मुसाफिर को मुफ्त पूरी और गूड़ भूगड़ा दीलाते थे। मोदीजी कितने त्यागी थे पहले धर्मशाला बनाई बाद में हवेली। मोदीजी के दोनों पूत्र श्री रामेश्वरदास जी और जगन्नाथ जी मोदी ने अपने पिता की मर्यादा को भंग नहीं किया, जिस तरह धर्मशाला का प्रवन्ध मोदीजी करते थे वही नियम बात व्यवहार निभाया। उस वक्त तो धर्मशाला पर गांठ से खर्च होता था, अब तो धर्मशाला कामधेनु बनी हुई है। हजारों रुपये महीने के किराये के आते हैं। अब तो तीसरी पीढ़ी की चाल-ढाल, रंग-रुप गोकुल से मथुरा न्यारी है। सबसे पहले (१) झावर मल जी टीवड़ेवालों ने दोनों धर्मशाला के बीच की गली में अपने नौहरे का दरवाजा खोला उन पर मुकदमा किया जो खारिज हुवा।

(२) श्री प्रसोतम दासजी जगनाणी अपनी जगह में दुकान बना रहे थे। दीवानी मुकदमा करके तामिर बन्द कराई कई दिनों चेजा बन्द रहा कौनसी हवेली का कूणा अड़ता था। आकाश में बिजली चमक और गधा लात मारे

(३) श्री रामकुमारजी टीवड़े वालों के सुपुत्र अपनी जर खरीद जमीन में दुकाने बना रहे थे उनपर भी मुकदमा करके चेजा बन्द कराया हजारों रुपये का नुकशान हुवा, तीसरे तीवाड़े आपका क्या नुकसान था, आपकी कोई अड़ोस पड़ोस में जायदाद भी नहीं थी मुकदमा चौथा मुज्जफरपुर वाले बंकों पर किया जो अपनी दिवार के अन्दर मकान

वनाते थे वीच में रास्ता आम है कई दिनों चेजा वन्द रहा काफी नुकशान पहुंचाया कितना अच्छा मकान वना है विवाह शादी हो या आड़े दिन मकान काम आता है। श्री मोहनलाल टीवड़ेवाला की सम्भाल करते है विना भेद-भाव जांत-पांत के मकान देता है लोग अपना काम निकालते है ऊपर ओम प्रेस है जो पेट सेवा और जन सेवा करती है। नीचे की दुकानों पर भले दुकानदार अपना कारोवार करते है यह चारों ही मुकदमें खारिज हुवे हार का मुंह देखना पड़ा जग हंसाई हुई, खर्चा देना पड़ा। पराये दुख दुवला वाली कहावत हुई। सलाहगीर भी शकर खोर को शकर खोर मिल ही जाता है। जयपुर के प्रसिद्ध वकील पं० तोताराम जी फरमाया करते थे। कि वोही वकील खुश किस्मत है कि जिसको हीये का आंधा और गठडी का पूरा मुवकिल मिल जाता है। पिछले दिन कुवे की गुरण को तुड़वाकर दुकाने वनाली, अव तो यह सुनने में आया है कि धर्मशाला का कुवा कोठा खेल को तुड़वाकर दुकान वनाने का महूरत दिखाया जा रहा है। शुभ काम का क्या महूरत यह यज्ञ भी कर लेना चाहिये। वालाजी पहले गूरण में थे अव कुवे पर है। आगे कहां भेजे जावेगें यह तो मुस्कराते हुवे हनुमानजी ही जानें। आदमी को तस्वीर के दोनो पहलू देखने चाहिये। ज़माना वदल गया है देश में जवरदस्त इन्कलाव आने वाला है। यह भी पुछा जा सकता है कि वीस साल में धर्मशाला के कितने रूपये किराये के आये। वोह कहां है, जनसेवा में धर्मखाते में कितना खर्च हुवे। अव रोकड़ वाकी क्या है। यह भी पुछा जा सकता है कि धर्मशाला व चवूतरे के वालाजी की दुकानों और नौहरे व हवेली के कुल मिलाकर वीस हजार रूपये माहवार के आते है। फिर धर्मादे खाते में जीरो, झून्झुनू में यहां धर्मशाला में एक प्याऊ भी नहीं। स्यारणापन की हद हो गई। कृपरणता की हद हो गई पासा फेंकनेवाले के हमेंशा पोह वारा पच्चीस ही

नहीं पड़ते तीन काने भी पड़ सकते है। खुद की अक्ल काम नहीं लेनी चाहिए प्यारे प्रसंगी यार दोस्त अपने हितेषी से भी सलाह लेनी चाहिये। आज वढती ग्रावादी की मांग है धर्मशाला का ताला खोलो रात-दिन की प्याऊ लगाग्रो। विजली पानी पचास पलंग पचास जेवड़ी की खाटें एक नोकर संभाल करने वाला हो इस काम में सहयोग देने वाले श्री मटरूमल मोदी के सुपुत्र भी पुरी नीगरानी रख सकते है। भले गृहस्थ के भाणा वेटी सगा सोई यात्री आ जाते है या कोई भला मुसाफिर ग्रा जाता है तो वड़ी मुश्किल हो जाती है। यह सेवा तो करनी चाहिये धर्मशाला के किराये का छटा भाग भी खर्च नहीं होता। गीताजी के दुसरे अध्याय श्लोक २७ में कहा है।

"जातस्यहि ध्रुवो मृत्यु ध्रूवं जन्म मृतस्य च।
तस्माद परिहार्येस्र्थे न शोचितुमर्हसि।

जन्म लेने वाले की मृत्यु जरूर होती है। ग्रौर मरने वाले का जन्म जरूर होता है। ऐसा ही गीताजी के १६वां ग्रध्याय श्लोक २१ में कहा है

त्रिविद्यं नरकस्येदं द्वारं नाशनमातमनः
काम क्रोध तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत

काम, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकार के नरक के द्वार ग्रात्मा का नाश करने वाले हैं अर्थात अधोगति में ले जाने वाले हैं। इससे इन तीनों को त्याग देना चाहिये

(१) आया था कुछ लाग को खोय चला सब मूल ।
फिर जावोगे सेठ पर पल्ले पड़ेगी धूल ।।

(२) न तो कुछ खाया खिलाया पुन्य ना कुछ कर गया ।
आप कर मूरख जगत में जोड़ कर धन मर गया ।।

(३) करले कमाई नेक बन्दे हराम खाना छोड दे ।
झूठा है संसार प्यारे दिल लगाना छोड दे ।।

कृपण कहें माया में तोसूं हेत लाया, अब अन्त समय आया ।
तूं संग चल मेरे ।

पेट में न खाई ना मैं अंग के लगाई,
बडी मुश्किल से कमाई सदा धूप देई तेरे,
मांगी नाही दीनी किसको पुन्य नाही कीनो,
सब भेली करलीनी भाग्यो चांदना अंधेरे,
अब तूं नेह पाल मोसूं तेरा सदा पांव धोसूं
तूं संग चाल मेरे ।

माया का जवाब

माया उठ बोली भोंदू क्यूं करे ठिठोली जा अब
जमहूं की पोली तूं देर क्यूं लगावे है,
मैं तीन रूप धारूं काम जगत का सवारूं
जां घर बहन होय पधारूं वोह नर पाछी ही मिलाव है
माता बन जावूं जाको गौद में बिठाउं

तांको कंठ से लगाउं वोह नर सदा चैन पावे है
तिन पुन्य कियो भारी तांकी वन जावूं नारी
वात नर करे तो विचारी झाल तीनू गूण वतावे है।

पिछले जन्म में अच्छे कर्म किये से मनुष्य शरीर मिला और अच्छ खान-दान पुत्र-स्त्री धन-ज़ायदाद आदि मिले इस जन्म में अच्छे कर्म नहीं होंगे तो शुकर-कूकर की योनी मिलेगी कूरड़ियों पर लोट पलेटे लगानी पड़ेगी।

अरे मन भलों न कर सके तो वूरे पंथ मत जाय।
अमृत रस चाखे नहीं तो विष काहे को खाय॥

खेताणों के मोहल्ले में श्री सुरजमल जी खेताण की धर्मशाला है, जो अनपीरी का पीर है। विना रोक-टोक हर आदमी धर्मशाला में ठहर सकता है। ज्यादा गरीवों के काम में आती है पानी, विजली, पलंगों का भी प्रवन्ध है। धमशाला की वनावट भी अनोखी है ऊपर श्री सत्य-नारायण जी का मंदिर है।

देह धरे का फल यह ही भज मन कृष्ण मुरार।
मनुष्य जन्म की मौज यह मिले न वारम्वार॥

तूलस्याणों के मोहल्ले में दानवीर भारत के प्रसिद्ध सेठ रायवहादूर श्री सूरजमल जी शिवप्रसाद झुन्झुनूवालों की धर्मशाला है उसमें श्री गजानन्द जी शास्त्री शर्णार्थियों की तरह डेरा डाले पड़े हैं। कभी विचार ही नही करते यह धर्मशाला है, सार्वजनिक सेवा के लिये है, धर्म शाला वनाने वाले की आत्मा को ठेस पहुंचती है। शास्त्री जी महाराज खुद विद्वान हैं आपकी सन्तान भी परम विद्वान है, सम्पन्न हैं, अपने घर

की झोंपड़ी वनाकर ही रहना चाहिये, धर्म स्थान का रूप नहीं विगाड़ना चाहिये।

रूखी सूखी खायकर ठंडा पानी पीव ।
देख पराई चौपड़ी क्यूं ललचाया जीव ।।

शास्त्री और महापुरुषों ने कहा है वृक्ष लगाने का वहुत धर्म है, खासकर वड़ का पेड़ लगाना तो अति उत्तम है।

झुन्झुनू नगर के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में भक्तों ने वड़ के पेड़ लगाये हैं। पूर्व मे स्वामी श्री सीताराम जी ने वड़ का पेड़ लगाया था। खुद सर पर वड़ी टोकरणी, हाथ में जैली लेकर रोजाना जाते थे। वड़ को सींचकर उसकी रक्षा के लिये वाड़ को ठीक करते थे। अब यह वड़ दार्शनिक है। मूनिजी महाराज ने अपना आसन्न वड़ के पेड़ के नीचे लगाया था अब तो आश्रम वन गया है। श्री सितारामजी स्वामी प्रसिद्ध संत श्री छोटूदास जी के गुरु थे। स्वामी जी के पैर की पींडो वहूत मोटी थी, फिर भी आपने वड़ लगा ही दिया।

रामाय राम भद्राय रामचन्द्राय वेधस
रघुनाथाय नाथाय सीताया पतये नमः

झुन्झुनू नगर के पश्चिम में भयानक टीवे फैले हुये थे उनमें श्री भीसनाराम कुम्हार ने आज के ५० साल पहले वड़ लगाया था, रोजाना सर पर पाणी का मटका हाथ में जैली लेकर जाता था। हम लोग पूछते थे भीसना ताउ कहां जा रहे हो तो कहता था कि वेटा गोद लिया है उसको पानी पिलाने जाता हूं। अव तो वहां नई कोर्ट की विल्डिंग वन गई है। इस कोट के पूर्वी और उत्तरी कोने पर मंडावा के रास्ते पर वड़ लगा हुआ है और भीसनाराम कुम्हार की कीर्ति वखान कर रहा है।

देह धरे का फल यह ही भज मन कृष्ण मुरार ।
मनुष्य जन्म की मौज यह मिले न वारम्वार ।।

झुन्झुनू नगर के दक्षिण में शमशान भूमि में श्री जीवनराम वन्दुकिया खाती की माजी और वालूराम जांगिड़ की दादी ने वड़ का पेड़ लगाया था । रोजाना सर पर पाणी की टोकनी लेकर भजन गाती हुई राम राम करती हुई वड़ को सींचने जाती थी । रास्ते में कोई औरत मिल गई उसने कहा दादस जी या सासूजी पांव लागू तो जवाव नहीं देती थी, जब वोह ही औरतें कहती थी मीरा दादी राम राम तो हंसकर जोर से कहती थी राम राम । हम वालक लोग भी मीरा दादी कहकर राम राम करते थे, तो वहूत राजी होकर राम राम करती थी । अब तो शमशान दूसरी जगह चले गये हैं । जांगिड़ वन्धुओं की एक सुन्दर वगीची है । मीरा दादी के परिवार में उनके पुन्य से भरा पूरा परिवार है । अच्छा हो वैसाख, जेठ के महिने में पांच सात पाणी की टंकियां डलवाई जावे, वड़ की साल संभाल रखी जावे ताकि मीरा दादी की आत्मा को शान्ति मिले ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे
दो वातन को भूल मत जो चाहत कल्याण,
नारायण इक मौत को दूजे श्री भगवान ।।

झुन्झनू नगर के उतर में मण्ड्रेला के रास्ते पर श्री भैराराम माली ने वड़ लगाया था । आज तो सौ गाय और सौ आदमी उसके नीचे वैठ सकते हैं । वड़ लगाने वाले को एक धर्मशाला वनाने जितना धर्म होता है । वड़ सदा व्रत भी होता है । हजारों परिन्दे वडवढा खाते हैं । वड़

की छाया सर्दी में गरम व गर्मी में ठंडी रहती है। अचानक ओले आ जायें तो वड़ उनकी रक्षा करता है। मनुष्य और पशुओं के प्राण वचा सकता है। श्री भैराराम माली के जाईन्दा औलाद नही थी। पुत्र की तरह इस वड़ को पाला था। हर मनुष्य को वड़ लगाना ही चाहिये। वड़ पांच-पांच पीढी व सात-सात पीढी तक कायम रहता है। सव दरखतों में इसकी उम्र ज्यादा होती है।

ग्रंथ पंथ सव जगत के वात वतावत तीन।
राम हृदय मन में दया, तन सेवा में लीन ॥
सव मगरुरी त्यागकर रटिये कृष्ण मुरार।
नौका वीच समुद्र के होय भजन से पार ॥
माला तो कर में फिरे, जीभ फीरे मुख मांय।
मनवां तो चारों दिशा फिरे यह तो सुमरन नाय ॥



झुन्झुनू की जाट बोर्डिंग

सरदार हरलाल सिंह दुलड ने झुन्झुनू में जाट बोर्डिंग बनाई, और झुन्झुनू में जाटों को प्रवेश कराया झुन्झुनू में फलसा बंद गुवाडी जाटों की एक भी नही थी, दूकान और व्यवसाय का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था, दूरदर्शि श्रीमान् ठा० भिसनसिंह जी बिसाउ ने दो बीघा जमीन जाट बोर्डिंग के लिये सरदार जी को देने का वादा कर लिया था। उस जमाने में सरदारान पंच पाना सरदार जी के जानी दुश्मन थे सीधी बात करना भी नही चाहते थे। मि० यंगसाहब उस जमाने मे जयपुर के इन्सपेक्टर जनरल पुलिस थे। वैसे उनकी सांठ गांठ भरतपुर रियासत से भी थी। भरतपुर वालों की मार्फत यंगसाहब से उनकी जान पहचान हो गई थी ठा. बिसाउ और यंगसाहब का झुन्झुनू आने का प्रोग्राम हो गया और तारीख समय तय हो गया। सरदार जी ने अपने साथियों श्री नेतराम जी गौरीर बूंटीराम जी किशोरपुरा, खेताराम जी हवलदार नरहड, श्री चौ० हरदेव जी पातूसरी, चौधरी घासीराम जी, वैगराज जी मांडासी यंगसाहब को बूला लिया गया था। चतुर सरदार ने एक जेवड़ी का पिडां मंगा कर सुलझा कर रखवा लिया था, ठा० साहब बिसाऊ और यंगसाहब मौके पर पधारे, सरदारजी को श्री सबलसिंह जी कामदार ने जमीन नापने के लिये सरदार जी के हाथ मे फिता दिया सरदार ने पैर के अंगूठे को हाथ से दबाकर फिता तोड़ दिया ठाकर साहब हंसने लग गये, सरदार जी ने कहा महाराज हमतो जाट है फिता कैसे पकड़ा जाता है खेतारामजी हवलदार ने मेरे को जेवड़ी का पिडां दिया मै पिड़े को लेकर श्री मीताराम टीवड़े वालेके कूवें की पट्टा शुदा जमीन तक पहुंच गया। यंगसाहब ने मेरे थपथपी लगाई ठाकर भीसनसिंह जी

विसाऊ ने मुस्कराके फरमाया । माले मुफत दिले वेरहम । मैंने अर्ज किया आप तो महाराज श्यामसिंह जी के वंशज है कई गांव और हजारों बीघा जमीन मंदिर चारन भाट ब्राह्मणों आदि को दी गई है, आप के ही काश्तकार जाटों के लड़कों के काम आवेगी, दयालू ठा० साहव हंस दिये उसी वक्त जमीन के गद लगवा दिये गये । सरदारजी और उनके साथी मेरे पर बड़े खूश हुवे । फिर धीरे धीरे मकानात बनने शुरू हो गये । इस तरह से झुन्झुनू में जाट वोर्डिगं वनी हजारो लड़के पढ़कर कोई लीडर कोई प्लीडर कोइ ओडीटर, मास्टर, पटवारी, इंजनीयर, डॉक्टर आदि बन गये फिर तो यह जाट वोर्डिङ्ग या विद्यार्थी भवन ही नही रहा राज़नीती का अखाड़ा भंगोड़ो का विश्राम गृह क्रान्ति कार्यो का घर शर्णार्थियो का शरण घर वन गया । वावू विश्वनाथ दास आर्य वीर कूम्भाराम जी चौधरी स्वामी हंसानंद और भी कई सज्जन जिन्होने अपने नाम वदल रखे थे । सरदार जी के मेहमान बनके रहें । चौधरी मौहनराम जी अजाड़ी उस वक्त घंटो तक घुमते हुवे मंत्रणा करते थे और सरदार जी की सहायता करते थे । एक दिन सरदारजो ने कहा वावलिया जी आप भी वोर्डिगं के पड़ोसी बन जावो, तो मैंने भी पड़ोस मे वलोदा के पाने में नोहरा वना लिया । और निकट का पड़ोसी वन गया । प्रजा मंडल का सत्याग्रह शुरू हुआ, सरदार जी को मारते पिटते वाज़ार से ले जाते थे । सर में खून वह रहा था, जूते पड़ रहे थे, वूरी वूरी गालियों की वोछाड़ हो रही थी, हम लोग हजारो आदमी भारत माता की जय, महात्मा गान्धी की जय, सरदार हरलालसिंह की जय वोलते उनके पीछे २ चलते थे । एक जमाना तो ऐसा आया था कि झुन्झूनू में जाटों का प्रवेश हीं वन्द हो गया था । पूछा ज़ाता था तू कौन है किसी ने कहा जाट, तो उघाड़

टाट जूते पड़ते थे। आज उसी तपस्या का फल है कि चारों तरफ जाट वन्धुओं का वोल-बाला है।

सुर्खरूह होता है इंसा ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हीना पत्थर से पिस जाने के बाद।।

कार्यकर्ताओं की एक वार जाट वोर्डिंग में मिटिङ्ग हो रही थी कई नई-नई बातें निकल रही थी। युवक श्री शीशराम ओला कई तर्क-वितर्क की अद्भूत बातें निकाल रहे थे। सरदारजी ने कहा यह युवक बड़ा होनहार निकलेगा और जिले का सबसे बड़ा होनहार नेता बनेगा, सरदारजी की भविष्यवाणी सच निकली। सरदारजी ने ३० साल तक जिले की नेतागीरी की, गरीबों की सेवा की, जांत-पांत की बिमारी से दूर रहे, घर बनाने की चेष्टा नहीं की, किसी मिनिस्टर या कलेक्टर एस. पी. के बंगले पर नहीं गये न सरकारी दफ्तरों में चक्कर लगाये जैसें आज के जमाने के नेता अपने स्वार्थ साधन के लिये चक्कर लगाते हैं। किसी को धोखा नहीं दिया, सत्य का आचरण किया। जिले के कलेक्टर और एस. पी. जाट वोर्डिंग में ही जाकर मिला करते थे। आप मिनिस्टर मैंकर भी रहे हैं। आपके चेले चांटी भी बहुत तेज तराट निकले हैं। श्री नरोतमलाल जोशी कानून मंत्री बने, राजस्थान असेम्बली के अध्यक्ष बने, क्या पता क्या २ बनते, जिले को ऐसे कार्यकर्ता विद्वान की इस वक्त जरुरत भी है मगर लाइन छोड़दी डांवा-डोल हो गये। राजस्थानी कहावत है

जरा जरा को मन राखतां वेश्या रह गई बांझ

चौधरी रामनारायण जी मंत्री बने। १९८१ के चुनाव में कुछ मामूली वोटों से हार गये मगर हारने के बाद भी ऐसी छलांग लगाई कि राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष बन गये।

गुरू गोविन्द दोनों खडे किसके लांगू पांव, ।
बलिहारी गरूदेव की जिन गोविन्द दीया मिलाय ॥

श्रीमती सुमित्रासिंह चार बार झुन्झुनू जिला से विधान सभा के चुनावों में शान के साथ जीतकर गई। उपमंत्री भी बनी, ईमानदारी से काम किया रिश्वत नहीं ली और किसी को झूठा बेटा नहीं दिया साफ कहना साफ रहना ही अपना धर्म समझा। १९८१ के चुनावों में दोनों बार शान के साथ हार गई। सच्चा मार्ग छोड़ दिया था।

पाय कूसंग चाहे कुसल तुलसी यह अफसोस,
महीमा घटी समुद्र की रावण वसो पडोस।
दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से,
इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।
खवाह साहब को तुम सलाम करो चाहे मंदिर में
राम राम करो।
भाइजी का एक मकसद है जिसमें रुपया मिले वोह काम
करो।

श्री स्वामी भागीरथमल जो एडवोकेट कांग्रेस (ई) के पक्के भक्त हैं ईमानदार कार्यकर्ता है, १९८१ में इनको कांग्रेस (ई) का टिकट नहीं मिला। कार्यकर्ताओं कोभी निराशा हुई मगर आपने कोई परवाह नहीं को और श्री भंवरसिंहजी

शेखावत के नवलगढ के क्षेत्र में देहातों में ईमानदारी और मेहनत से काम किया और श्री भंवरसिंह शेखावत को शान से वोट दिलाकर जीताया। इस क्षेत्र में जयादातर वोट गांवों में जाट भाइयों के हैं १९७७ में श्री नवरंगसिंह जातिवाद के नाम पर जीत गये थे। १९८० के एम. पी. के चुनाव में जातिवाद का जहर फैला दिया था, अच्छे २ पुराने कांग्रेसी भी गूमराह हो गये थे। कई स्वार्थी भाई ऐसा सोच रहे थे कि स्वामीजी को कांग्रेस (इ) का टिकट नहीं मिलने से खिलाफत करेंगे या खामोश होकर बैठ जायेंगे। ऐसा सोचने वालों को निराशा का ही मूंह देखना पड़ा। नवलगढ कांग्रेस आई की जीत को अपनी जीत समझा। यह है देश भक्ति।

देश हित पैदा हुये हैं देश हित मर जायेंगे।
हम हैं सर्मपित देश हित कुछ देश हित कर जायेंगे।

श्रीमति कमला वेनीवाल प्रसिद्ध किसान नेता श्री चौधरी नेतराम सिंह जी गौरीर की सुपुत्री है। आप अब भी मंत्री हैं और पहले भी मंत्री रह चुकी हैं। कई कारनामें करके दिखाये थे। नये बास के मीणा ने जनता को सताने में कसर नही रख रखी थी। तमाम भारत में ठगी, चोरी, डाका करने का जाल विछा रखा था। लोग बाग काफी परेशान थे। डिप्टी श्री देवीसिंह जी को तो नीमकेथाने में सोते हुये को कत्ल कर दिया था। चौरी की गाय, वैल, भैंस, ऊंट अपने घर में चोड़े धाड़े बांधते थे। क्या मजाल कोई उसको खोल लाये। पुलिस वाले भी डरते थे उनके पास आधुनिक हथियार गोला बारूद के भंडार थे। श्रीमती कमलाजी भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के पास गई और सब हालात बयान कर दिया। दयालू प्रधानमंत्री ने योजना बनाकर श्रीमती कमलाजी को राजस्थान में नीमकाथाना भेज दिया।

ऐसा एतिहासिक सवक सिखाया जो तीन पीढी याद रखेंगे, लाखों रुपये का जेवर हथियार वरामद किये खूब मरम्मत कराई गई। आज भी वच्चे धुम मचाते हैं तो औरतें वच्चों को कमला आई कमला आई कहकर डराती हैं। ऐसी हैं वहादुर नारी कमला जी।

तुश्वम तासीर शहीयते असर

नित हर भज हर भज रे वावा जो हर से ध्यान लगाते हैं
जो हर को आशा रखते हैं हर उनकी आश पुजाते हैं।

श्री शीशराम जी ओला शेखावाटी के सवसे वड़े कार्य कर्ता जन सेवक है गरीवों और असहाय के सेवक हैं, कथनी और करनी में अन्तर नहीं हैं, जो कहते है वोह करते भी है आप जातिवाद से कोसों दूर हैं, आप पहले राजपूत का काम करते है तो वाद में जाट का। आप किसान है हिन्दू मुसलमानों को अपने दोनो नेत्र समझते है। हरिजनों के तो आप प्राण है। आपका अरड़ावता कन्या महा विद्यालय इतना अच्छा और सुन्दर है जिसमें हर प्रान्त की वालिकायें आती हैं। भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल जी नेहरु और वर्तमान प्रधान मंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी इस विद्यालय में पधारी हैं और विधालय की सराहना की है। जगत विख्यात उद्योगपति वावू वनश्यामदास जी विड़ला और उनके परिवार के मेम्वर इस विद्यालय से वड़े प्रभावित है और कई वार पधार कर अपना आर्शीवाद दे चुके है जनसेवक होने के कारण श्री शीशराम ओला को अपना विश्वास पात्र मानते है। श्री ओला जी का चुनाव क्षेत्र खेतड़ी और चिड़ावा रहा है, १९८० में पहले ही कई वार झुन्झूनू क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ा या झुन्झुनू क्षेत्र को जनता ने आपके अच्छे व्यवहार और जनसेवक लोकप्रिय होने से अपने

वोट देकर शान के साथ प्रवल वहूमत से जीताया था, ग्राप कांग्रेस (ई) के परम भक्त है ग्रौर जनता श्रीमती इन्दिरा गांधी की परम सेवक हैं। यह सव श्रीमती इन्दिरा गांधी का प्रताप है।

मरद मैदा ग्रमल यकता शीशराम ग्रौला वीर है।
धर्म ग्रौर नीति की जीती जागती तस्वीर है॥
"इनसान से इनसान को किना नहीं ग्रच्छा
जिस सीने मे किनां हो, वोह सींना नही ग्रच्छा



उदयपुरवाटी में नई नजामत

उदपुरवाटी में काश्तकारों पर जुल्म हो रहा था खाशकर माली, काश्तकार वहुत दुखी थे। पीडियों से कुवे काश्त करते थे उनको कोई रसीद लगान या एसी कोई सनद नही दी जाती थी कि कौन काश्तकार कव से चाही जमीन काश्त करता है, पक्का मकान वनाने नहीं दिया जाता था, कूवे का भूण लाव चड़स भी रात को १२ वजे ग्रपनी कच्ची खूड्डी में जहा काश्तकार सोता था, टावर की तरह पास रखकर सोता था, उसी में वैल वंधा करते थे। खाट या चारपाई किसी के पास टूटी फूटी होती थी, काश्तकार को खाट पर वैठने का अधिकार नहीं था। वोरी का खोयला करके ओढते थे। लालटेन तो किसी किसी माली के पास होती थी। टूटी फुटी खुड्डी के सुराख से चांद या तारों की

रोशनी होती थी, जमीन में गूदड़ा बिछाकर पड़े रहते थे। फिर रात को तीन वजे पोह माह के जाड़े में, भूण लाव चड़स वैलों को लेकर कुवे पर जाते थे एक आदमी ढाण में चड़स पकड़ता था, पाणी में खड़ा रहता था वोह वारें बोलता था, वारिया कहलाता था और एक आदमी गौण में लाव पर वैठकर गौण में जाता था, उसे कीलिया कहते थे। एक आदमी क्यारी में नंगे पैर पानी सीचता था, उसे क्यारिया कहते थे जो १२ बजे दिन तक सीचांई करते थे। लाल मीर्च की चटनी जो की रोटी का कलेवा होता था, छाछ रावड़ी तो किसी किस्मत वाले माली को ही मिलती थी। गाजर प्याज के मौसम में उनका सहारा लिया जाता था वैसाख के महिने फसल तैयार होने पर लाटा निकाला जाता था, तो कुवे के मालिक सरदार अपनी अपनी चारपाई डालकर लाटे के चारों तरफ तलवार वरछी लाठी वन्दुख हुका लेकर पहरापति वैठ जाते थे। जिनकों हींठा कहा जाता था अनाज निकलने पर अपने अपने कामदार पटवारी आकर दूजारे का अनाज तौल कर ले जाते थे। फिर मीणे को नाज जो की कुत्रा वंधा रहता था, तौल दिया जाता था कामदार पटवारी अपने अपने हिस्से का अनाज तौल कर ले जाता था, फिर वोहरे का नम्वर आता था वोह अपनी सवाई डेढी वाडी लगा कर अनाज ले जाता था, फिर नाई, खाती, कुम्हार, चमार और लाग वाग वालों का नम्वर आता था, वोह ले जाता था, काश्तकार न हिसाव जानता न तौल मोल। कमी रह जाती थी तो वोहरे से खाता लिखवाता था, काश्तकार को जेठ के महिने में गला सड़ा पहले की फसल का अनाज दुवारा लेना पड़ता था मैं ने तो यह सव नजारा अपनी आंखो से देखा था। सरदार हरलाल सिंह जी काश्तकारी की यह दुःख भरी हालत देखकर रोने लग गये। ज़िले के नाजिम तहसीलदार ताल्कदार झुन्झुनू वैठे कुछ नहीं कर सकते थे तो जयपुर जाकर रोजाना रोया, सरदार जी का

सुझाव था कि उदयपुर में नजामत कायम करदी जावे उनके सुझाव पर नजामत कायम करदी, सरदारो की तरफ से कामदार मुन्शी वकील रहते थे। मगर काश्तकारों की तरफ से कोई अर्जी लिखने वाला भी नहीं था न काश्तकार डरते हुवे नजामत में जाते थे। नये नाजिम ने जयपुर रिर्पोट भेजी, कि काश्तकार या उनकी तरफ से कोई वकील भी नहीं आता है न मेरे पास कोई उनका आदमी आता है, सरदार जी को बुलाया गया, नजामत कायम कराके पांच हजार महिना सरकार का और खर्च वढा दिया। सरदारजी ने जाट वोर्डिंग में अपने साथियों को बुलाकर सलाह मसवरा किया, चौ० नेतरामजी गोरिर हरदेवसिंह पातुसरी वूंटीरामजी, खेताराम हवलदार और चौवरी घासीराम जी वगैरह सब मेरे मकान पर आये और उदयपुर जाने को मजबूर किया, कांग्रेस की इज्जत का सवाल पैदा हो गया था, मैं ने कहा ब्राह्मण को ही मरवाना है क्या, तो सरदारजी ने कहा ब्राह्मण मरेगा नहीं, सवारी का साधन नहीं १८ कोस ऊंट पर ही जाना पड़ता था। सात दिन से डाक अतिथी, डा० दयाशंकर छः महिने का, वुढी मां, २४ साल से नगर पालिका का मैम्बर जमी जमाई वकालत सौ से ज्यादा मुखतारनामे आम। मैं अपने कांग्रेस के साथियों का कहना नहीं टाल सका, सरदारजी तो मेरे गरू भाई है आर्य वीर सेठ देवीवक्सजी मंडावा के हम दोनों चले है। खैर मैं उदयपुरवाटी गया, प्रभू की कृपा से मौके पर मकान मिल गया नजामत के पास दोनो तरफ वाजार का रास्ता आम, मैं ने अपने मकान पर कांग्रेस का झण्डा लगाया। नगर में और वरगना उदयपुरवाटी में चारों तरफ चर्चा हो गई कि कांग्रेस का उदयपुर वाटी में जन्म हो गया है, भगवान की मेहरवानी से श्री रेखाराम रैगर मेरी सेवा में आ गया दोनों वक्त केवल रोटी खाने अपने घर जाते थे। और २४ घंटे मेरे मकान में रहते थे। उस वक्त

हरिजनों से बहुत नफरत की जाती थी, मेरा व्यवहार देखकर सब चकित रह गये। ठा० भंवरसिंह जी उदयपुर तो मेरा नाम ही रेगरिया वकील रख दिया था मेरे मकान से पूर्व में श्री रघुनाथजी का मन्दिर था परम भक्त स्वामी भगवान दासजी स्वयंपाकी उनके चेले श्रीरामजी दास जी थे हर वक्त दो भैंस दुध देने वाली रखते थे। दही छाछ की कमी नहीं थी। मकान की पश्चिम में कर्म-काण्डी पदम विद्वान पं० वशेसर लाल जी रहते थे उनके सुपुत्र वैध पं. हनुमान प्रसादजी सरल स्वभाव पर उपकारी रहने का स्थान सुरक्षित मिल गया। मैं कोर्ट में, वाजार में गांधीं सफेद टोपी पहन कर जाता था, मेरे देखू देख कई सज्जन गांधी टोपी लगाने लग गये। दुखिया माली भाई भी आने जाने लग गये। वस्ती के सज्जन आदमियों से मेल जोल वढने लगा। श्री सेठ मुखराम जी चीड़ीमार पूजारो श्री रूड़मल जी तो मेरे चेले वन गये। नगर के सरदारांन भोमियों को मैं खटकने लगा। नाजिम सहाव के साथ हवा खोरी का प्रोग्राम हो गया शैर शायरी होने लगी, दु:खी माली भाईयों को राहत मिल गई सहारा हो गया, थोड़ी जान आई, डर कम होने लगा। परगने के अच्छे आदमी मिलने को आने लगे कांग्रेस का प्रचार शरू हो गया उस वक्त दो ही वकील थे। श्री फुलचन्द जी श्रीमाल तो सरदारों, भोमियों के वकील थे मैं काश्तकारों का वकील थे भोमियों में आपस मे मुकदमें होते थे तो एक पार्टी मेरे को वकील करती थी। गावों में दंगा फिसाद होने लग गये, कार्य कर्ताओं पर झुठे मुकदमे वनाने शुरू हो गये। एक दिन गर्मी का मौसम था धूप का वक्त था, अमर शहीद श्री रामदेवजी गीला पर नाकाविल जमानत झूठा मुकदमा वनाकर गूढा थाने से पैदल चालान कर दिया था उदयपुर नजामत में पेश करने को। मेरे मकान के सामने से हथकड़ो लगाकर दो कान्स्टेवल ले जा रहे थे। मैं यह हालत देखकर हैरान हो

गया, एक कान्स्टेबल वाडो को ढाणीं का प्रभू सिंह जान पहचान का था, मैंने उनको अपने मकान में आने को कहा वोह मेरे मकान में आगये मकान बन्द करलिया हथकडी खुलवाई पसीना सुकाया गया, स्नान करा कर तीनों को भोजन कराया सिपाई भले आदमी थे श्री रामदेव सिंह को नाजिम साहब के पास पेश किया। मैंने जमानत की दरखवास्त दी जो मंजूर हो गई दो हजार की जमानत दो हजार का जातिमुचलका का हुकम हुवा वहां कोई जामिन मौजूद नहीं था, मैंने ही जमानत लेली ऐसे कई झूठे मुकदमे कार्य कर्ताओं पर बनाये जाते थे। नजामत में जामनी हो जाती थी, जमानत में कोई आंट सांट नहीं लगाई जाती थी, यह सिलसिला चलता रहा। आखिर को १९५२ के प्रथम चुनावों की तैयारी होने लगी। सवाल पैदा हुवा उदयपुर की टिकट किसको दी जावे। आज तो टिकटों के लिए भीड़ लग जाती है। उस वक्त तो टिकट लेने वालों की खुशामद करनी पड़ती थी। श्री हीरालाल जी शास्त्री ने सरदार हरलाल सिंह को कहलाया श्री चन्द्रभान जी भार्गव एडवोकेट झुन्झुनू को उदयपुर का टिकट कांग्रेस की तरफ से दे दिया जावे वोह योग्य और प्रभावशाली सज्जन है उदयपुरवाटी से जीत कर आवेंगे में उनको मिनिस्टरी मे लेलूंगा, श्री चन्द्रभान जी की जीत निश्चत थी, हम कांग्रेस कार्य-कर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई चुनावों से १५ दिन पहले श्री चन्द्रभान जी भार्गव ने चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया लोगों को ताज्जुब हुवा, अत्यन्त नम्रता भी आदमी को कभी कभी नुकशान पहुंचा देती है। कार्य-कर्ताओं मे निराशा छा गई।" खैर आखिर को गांधी वादी सत्य और अहिंसा के पुजारी श्री करनीराम जी एडवोकेट का नाम सर्वसम्मति से हुवा। उदयपुरवाटी के भावी नेता मान लिये गये। श्री करनी राम जी और श्री रामदेवजी, श्री भावरसिंह गीला मेरे पास उदयपुर आये, और कहा दादा राम राम हम आ गये हैं,

मैने कहा स्वागत इतनी देर नहीं करनी चाहिये थी, उन्होंने सब हालात बयान कर दिये मैने चुनावों की तैयारी कर रखी थी, उदयपुरवाटी के गांवों का नक्शा कार्य-कर्ताओं के नाम, उस वक्त तीन प्रकार के कार्य-कर्ता थे नंबर एक पांचे मारकर मैदान जंग मे कूदने वाले, जैसे पहलवान ताल ठोक कर अखाडे में कूद पड़ता है, दूसरे लुक छिप कर रात बिरात ओले छाने काम करनें वाले तीसरे इशारेबाजी और कार्य-कर्ताओं की फरीस्त देखकर खुश हुवे, और गांवो मे निकल गये पालियामेन्ट के उम्मिदवार श्री राधेश्याम जी मूरारका कांग्रेस के उम्मिदवार घोषित कर दिये गये थे। सरदार जी श्री नाहरसिंह जी शेखावत और श्री केशर देव जी मिन्त्र मूरारका जी को लेकर उदयपुर आये। मैने सरदार जी से कहा इस नाबालिक को कहां से ले आये तो सरदार जी ने कहा बड़ा काम का आदमी है। इङ्गलेंड यात्रा किया हुवा है। सोने की चिड़ियां है श्री केशर देव जी मिन्त्र ने कहा गामा पहलवान है, बाबलिया जी इनके पहलवानी के दांव पेच देखना। उस जमाने में कार्य-कर्ताओं की नेता खुशामद करते थे,। जबकि इस वक्त कार्य कर्ता नेताओं की खुशा-मद करते हैं। गांवों का दौरा शुरू हुवा सभायें होनी शुरू हुई। २७ दिसम्बर १९५१ को हमारी सभा पचलंगी पापडे के बीच में तालाब है उस जगह हो रही थी लोगों मे जोश था करनीरामजी बोल चूके थे मै बोलने लगा तो चौधरी श्रीरामनारायण जी को दर्शको मे बैठा देखा था, वोह सुन भी रहे थे कुछ नोट भी कर रहे थे। मगर हमारे खेमें में नही आये। न चुनाव के दिनो में फिर कभी उदयपुरवाटी मे नजर आये।

दादूपंथी नागा स्वामियों का कांग्रेस को पूरा समर्थन रहा श्री भूरदास जी स्वामी पचलंगी का डेरा हमारा चूनाव का अखाडा बनाया था ता० ४ जनवरी १९५२ से ता० १४ जनवरी तक वोट पड़े, पहला

चूनाव पचलंगी पापडे से शुरू हुवा था, हम लोग ता० ३ जनवरी को पचलंगी पहुंचे तो स्वामी भूरदास जी के डेरे मे तिल रखने की जगह नही थी सरदार लोग पीला साफा हर एक के हाथ में तलवार राम राज की जय के नारे लगाये जा रहे थे, हमारी जीप पहुंची, मै करनी राम जी रामदेव जी और युवक भगवान सिंह मुन्शी को देखकर भूरदास जी स्वामी वाहर आये अपनी मजबूरी जाहिर की। मेरा श्री करनी राम जी वहुत खयाल रखते थे । मेरे को पापड़ा की सरहद में श्री चेतराम हवलदार जाट की गुवाडी में भेज दिया, और खुद और रामदेव सिंह पकोडो ढाणी मे श्री लादूराम जाट के यहां जा रहे थे। श्री भगवान सिह महोरीर के १० राजपूत चारो तरफ घीर गये उस गरीव को वागोली की नदी में छोड़ आये। सर्दी कडाके की पड़ रही थी, चेत राम हवलदार का छोटा सा परिवार था खुद और उसकी वुढ़ीया माता और दो वकरी वारा वोर की एक भरी हुई वन्दुक हवलदार जी ने दो वाजरे के फौजी रोट वनाये और वकरीयो का दूध गर्म करके मेरे सामने रख दिया, वोह भोजन इतना अच्छा लगा सत पकवानी भी उसके सामने तूछ थी। रात को दो वजे पापड़े का एक खाती आया उसने सव वातें वतलाइ, अपने को परची वांटने की जरूरत नहीं है अपने को वोट देने वाले, दूसरो पार्टी के पर्चे से ही वोट देगें किसी को वोटों के लिये कहने सुनने की जरूरत नही पड़ेगी। एजेन्ट भी अपना किसी जगह वैठेगा या वगैर एजेन्ट के भी काम चलेगा, हम जव पचलंगी पहुंचे थे तो कई जगह दरवाजे वन्ध रहे थे दासियां मंगला चार गा रही थी कलश लिये महिलायें खडी थी। राम राज्य के उम्मिदवार श्री देवीसिंह जी मंडावा का इन्तजार था । यही ही हाल पापड़े गांव का था। वहां ठा० श्री सूरजवक्ससिंह जी गूढ़ा के इन्तजार में दरवाजे मंगलाचार हो रहा था, ऐसा वातावरण हो रहा जैसे राम राज आ ही गया है। हम लोग

८ बजे पोलिंग स्टेशन पर पहुंचे पेटियों पर शील लगाई गई, वोट शान्ती पुर्वक हो रहे थे कांग्रेस का कोई भी आदमी फर्जी वोटों को पकड़ने वाला नहीं था श्री मूरारका जी आये पोलिङ्ग अफसरों से शिकायत की दो बजे तक और जाति की महिलाये तो वोट डाल गई थी मगर राजपूत सरदारो की मीटिङ्ग चल रही थी, कि जनाने मरदार वोट दे या नहीं, ज्यादातर वोट न देने के पक्ष मे थे। इतनी देर में श्री देवीसिंहजी मय अपने साथियों के आगये उन्होंने वोट देने के पक्ष में अपना निर्णय दे दिया, फिर तो पड़दायतो की लाईन लग गई जिन्होंने अपने रावले के बाहर कदम नहीं रखा था वोह धर्मशाला के चौक मे घंटो तक खड़ी रही थी और पोलिङ्ग अफसरो को अपने सवालो का जवाब देती रही। महात्मा गांधी का भला हो हजारो वर्षो के बन्धनो से मुक्त करा दिया। इस हालत मे भी कांग्रेस को ४० फीसदी वोट मिले। उस रोज एकादशी का व्रत रहा दुसरे दिन हम लोग मंडावरा छापोली पहुंचे, हमारे पास डरते हुये कोई नागरिक नहीं आ रहे थे। चुन्नीलाल अहीर छापोली में हमारा कार्य-कर्ता था। एक दिन छोड़ कर ता० ६ जनवरी को वोट शुरु हुये। गीगावड़ी और छापोली की ढाणी कूवों से हमारे वोटर्स को नहीं आने दिया रिपोर्ट भी की गई, शिकायतें ज्यादा थी प्रबन्धको की कमी थी। ४०० वोट इसी झगड़े में रह गये। श्री रामदेवजी और सावरसिंह गीला के धक्का-धूमी मार-पिटाई हुई, लंबी चौड़ी रिपोर्ट लिखाई गई मगर नतीजा कुछ नहीं। ता० ८ जनवरी को कस्बा उदयपुर और डेरे के वोट पड़ने थे। उदयपुर का तो रंग ही निराला था। स्वामी करपात्रीजी महाराज आ गये फार्म का खूब प्रचार, सूरज का निशान, रामराज परिषद का था। जो सूरज भगवान को वोट नहीं देगा वह विधर्मी है हिन्दू नहीं है। सबसे पहले ब्राह्मण और महाजन स्वामी नाच रहे थे। गली-गली में पीला साफा और तलवार, ऐसा चुनाव आजतक नहीं हुया

स्वामी करपात्री जी ने तो धर्म का विष फैला दिया था। कांग्रेस के वोटों को तो ११ बजे दिन तक नहीं आने दिया। उनके नाम के झूठे वोट डाल दिये। एजेन्ट विचारे अनुभव-हीन माली थे। वाहर का एजेन्ट वोटर्स को पहचान नहीं सकता था। कई जगह धक्का-मुक्की गाली गलोच हुई। ता० १४ जनवरी १९५२ को मैं सींगडोद गांव में था, धर्म-शाला में पोलिङ्ग था। श्री सेठ मोहनलालजी पटवारी की दूकान राम-राज का अखाडा था। वोट प्रभावशाली और आम जनता के काम आने वाले सज्ज़न थे, राजा साहव का खेतड़ी का दौरा भी हो चुका था श्री मोहनलालजी पटवारी के यहां टी-पार्टी हो चुकी थी, दुसरे श्री जौर जी घावाई खेतड़ी के जागीरदार भी अपने को कम सुरमा नहीं समझते थे। उनका भी काफी प्रभाव था, मास्टर किशोरीलाल जी शर्मा नवल-गढ वालों का सींगड़ोद में काफी असर था, वह कट्टर रामराज के भक्त थे। हमारी तरफ श्री परसरामजी गौरजी गोदारा और उनके साथी थे। करीव ९ वजे श्री मोहनलालजी की माता वोट डालने आई एक थाली में चौपड़ा जिसमें रौली, चावल, दो चूरमें के पीन्डिये, एक पानी की घंटी यह सब अपने ओढने में छिपा रखे थे। मत पेटी के पास पहुंची सूरज भगवान की प्रार्थना की, रोलीमोली चावल चढ़ाये। इतनी देर लगी तो मत अधिकारी अन्दर गया उसने सब हालात देखे। सूरज भगवान को चलू कराने की तैयारी थी, वह कुछ मिनट नहीं पहुंचता तो मत पेटी पानी से भीग जाती। ऐसा धार्मिक प्रचार किया गया था। चूरमें के लड्डू मत अधिकारी जी गला-गप्प कर गये। उस रोज मकरसंक्रान्ति का पर्व था। १४ जनवरी १९५२ की मकरसंक्रान्ति तो हमेशा याद ही रहेगी, दिन-भर भूखे रहे। हालांकि श्री मोहनलालजी पटवारी व जौरजी घावाई का मैं वकील भी रह चूका था। भोडकी के मीणों को सींगड़ोद के वहादुर लोगों ने अच्छा सवक सिखाया था। थस मुकदमें में सींगरोद

के ४० आदमियों का वकील था। वैसे भी टीवड़े के मोहल्ले में इनके सम्वन्ध थे, मगर चूनावों में विरोधी थे। शाम को मत पेटी के शील लगाने के वाद एक प्रहलाद नाम का जाट एकाक्षी वालाजी की पूजा भी करता था। एक वाजरे गुड़ का चूरमें का पींन्डिया लाया था, उससे व्रत खोला गया। इस चुनाव में केवल १७०० सौ वोटों से कांग्रेस उदयपुर वाटीं में हारी थी। जागीरदारों और तानाशाही ताकतें पावर में थी। इस हार को हम लोग हार नहीं मानते हैं। गरीवों की झूपड़ियों, दूखी काश्तकारों के घर पर जाने का मौका मिला आगे का दूख निवारण हुआ, दूखी भाई नजदीक आये। श्री झावरसिंह गीला और श्री रामूसिंह गीला हमारे खेमें में वहादूर निर्भव दिन-रात सवारी न मिली तो भी पेंदल दौड़ने वाले वीर थे। वहुत काम किया। चुनाव के वाद भोमियान उदयपुरवाटी का सवाल आया कि माली काश्तकारों से संधि करदी जावे पैदावार का छठा हिस्सा भोमियों को दे दिया जावे, हम काश्तकारों को लगान की रसीद देदेगें। श्री करनीरामजी को यह प्रस्ताव मानना पड़ा उनका ख्याल था, पीढी दरपीढी जो काश्तकार कूवे वाह रहे हैं उनके पास काश्तकारी का सवूत तो हो जायेगा। गलती इतनी हुई यह काम उदयपुर कस्वे में वैठकर होना चाहिये था। चूरा जाने का प्रस्ताव मंजूर कर लिया। श्री दूलीचंदजी जैन नाजिम ने २० आर्म फोर्स के जवान और पं० रामसिहजी डिप्टी को साथ भेज दिया। २०० सौ कार्यकर्ता किसान भी साथ गये। मैं साथ जाने लगा तो श्री करनीरामजी ने कहा कि आप उदयपुर हैड क्वाटर पर रहो, नाजिम साहव को रिपोर्ट देते रहो ता० १३ मई १९५२ को सदल वल चूरे पहुंचे। भोमिया सरदार भी गांव के अन्दर एक मील के फासले पर मौजूद थे। श्री करनीरामजी रामदेवजी अपने साथियों और पुलिस के जवानों को छोड़कर अकेले सेडू गूजर की ढाणी में चले गये तो रामेश्वर दरोगा और गोरधनसिंह ने

दोनों वीरों को गोली से उड़ा दिया और दोनों फरार हो गये। पुलिस वाले और २०० कार्यकर्ता साथी मूंह की तरफ देखते रह गये। पुलिस में रिपोर्ट हुई मगर इन दोनों हत्यारों का नाम भी नहीं आया। मुकदमें को राजनीति रंग दे दिया गया। सब वरी हो गये मगर इन शहीदों का खून रंग लाया, गरीब काश्तकारों का हमेशा-हमेशा का दुःख निवारण हो गया। परगने के अच्छे-अच्छे सरदारों की गिरफ्तारियां हुई कुछ फरार हो गये। वातावरण दूषित हो गया। पार्लियामेन्ट के चुनाव में कांग्रेस जीत चूकी थी। श्री राधेश्याम मूरारका दिल्ली की पंचायत में झुन्झुनू जिले के भागीदार वन गये थे। अफसोस तो इस वात का है कि श्री करनोरामजी व श्री रामदेवजी की धर्मपत्नियों कों राष्ट्र सम्मान न सरकार ने दिया न समाज ने। ता० १३ मई को हर साल शहीदों की चिताओं पर मेंला जरुर लगता है। हमारे जैसे पुराने साथियों को कोई याद ही नहीं करते है खैर, हमने जो सेवा को हमारा कर्तव्य समझकर की, किसी पर अहसान नहीं किया था।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का यह ही वाकी निशां होगा।

ता० १३ मई को ४ वजे शाम श्री भंवरसिंह जी उदयपुर के ठाकर मेरे मकान पर आये और कहा आपके दोनों जाट नेता तो स्वर्ग सिधार गये हैं। आपको भी वुलाया है। मैं इस रहस्य को समझ नहीं सका, ६ वजे शाम को नजामत में श्री रामसिंह जी की रिपोर्ट आ गई कि श्री करनीरामजी रामदेवसिंह जी की हत्या कर दी गई, लाश झुन्झुनू ले जा रहे हैं। नाजिम साहव वहूत दूखी हुये। जयपुर रिपोर्ट भेजी गई खूद मौके पर चूर गये, मेरे पास दूखी जनता की भीड़ इकट्ठी होने लगी सव रो रहे थे। रात को ९ वजे मेरे पास श्री सरदारसिंह जी राजपूत

गिरावडी आये और कहने लगे दोनों हत्यारे कोटड़ियों में मौजूद हैं। आप मकान छोड़कर भाग जाओ, मैं श्री भगवानदास जी के मंदिर की छत पर छुप कर बैठ गया। करीव ११ वजे रात को १० आदमी तलवार, लाठी, फरसी लेकर आये और दरवाजे के किवाड़ के बड़ा पत्थर मारा, किवाड टूटकर गिर गये। श्री रेखाराम रंगर की जमकर पिटाई हुई। सव मकानों की तलाशी ली और कहा 'वकीलड़ा कहां है' वताओ। श्री रीखाराम रेंगर ने कहा लूहागरजी का वैशाखी पर्व है स्नान करने गये। वाह! लूहागर भी गये। कातलों के साथियों ने उन से जाकर कहा पुलिस आपका पीछा कर रही है तो पहाड़ों में चले गये। उधर झुन्झून की जाट वोडिङ्ग में दोनों शहीदों का सम्मानपूर्वक दाह संस्कार हो गया। आज भी उनकी प्रतिमायें जाट वोडिङ्ग झुन्झुनू में मौजूद हैं। कह रही हैं हमारा अधूरा कार्य पूरा करो। वतन में इन्कलाव लाओ मगर उनके उतराधिकारी स्वार्थ सिद्धि और धन वटोरने में लगे हुये हैं।

"दारा रहा न सिकन्दर रहा हैं, तुम्हारा दावा तो चीज क्या है,
मिलेगी दो गज जमीन आखिर यह हिस्सा तो वस हरएक का है
मौहिया गरचे सब सामान मूल्की और माली थे।
सिकन्दर जब गया दुनियां से तो दोनों हाथ खाली थे॥



सत पुरुषों का संग

संसार में सत पुरुष तलाश करने से मिल ही जाते हैं। तलाश लगन, मेहनत तैयारी से होनी चाहिये। कुछ लोगों का ख्याल है कि सत पुरुष भाग्य से भी मिल जाते हैं।

हो रहेगा कुछ न कुछ तकदीर से,
मूंह न मोड़ा चाहिये तहबीर से।

जेठ का महिना था रात को एक बजे पिलानी के लिये रवाना हुवे ऊंटवाला रास्ते का जानकार हो, न उंघनेवाला हो, अपनी और ऊंट की रक्षा करने वाला हो। ऊंट के पीछले आसन पर बैटने वाला मुसाफिर भी उंघने वाला न हो रास्ते में किसी दरखत के डाले डाली से बंचना जरुरी है। श्योदानसिंह राजपूत कूलोदवालों का ऊंट था। १।। रुपया आने जाने का तै हुआ था। चांदनी रात थी। काटली नदी में एक काला नाग रास्ते में सो रहा था, ऊंट वाले को पांच कदम की दूरीं से सांप नजर आ गया, मेरे से कहा छोरा हुस्यार हो ज़ाना ऊंट छलांग लगायेगा। चतुर ऊंट और सवार ने सांप को बचाकर उसके उपर से छलांग लगा दी, सांप पर पैर रखने से बचा लिया। ऊंट के पैर की आहट सुनकर सांप बैठा होकर जोरों से हुंकार मारने लगा, ऊंट वाले ने ऊंट की मोरी संभाल कर ऊंट को दौड़ाया २०-२५ पांवडे तक सांप की फूंकार सून रही थी। सांप को कोई चोट नहीं आई थी न ऊंट के पैर से उसका कोई अंग दबा था। ऊंट का पीछा नहीं किया। सांप छेड़ने से या दबा होने से ही खाता है। ६ बजे दादूद्वार पिलानी पहुंचे। दयालू संत श्री सेवादास जी ने ऊंट को फूस डला दिया

हम दोनों को नहाने के लिये बाल्टी रखवा दी, भोजन करने लगे जब सांप वाली कथा सुनाई। महात्माजी को आश्चर्य हुआ। फरमाया—

जाको राखे साइया मारन सके न कोय।
बाल न बांको कर सके जो जग वेरो होय।

महात्मा जी ने कहा सौ जावो रात की नींद है। हम दोनों सो गये करीब ५ बजे महात्मा जी ने बुलाया और पूछा कैसे आना हुआ है तो मैंने कहा ५०) रु० की जरुरत है। बाबाजी ने कहा पचास रुपये के लिये आये हो, यह तो झुन्झुनू में महात्मा उदयराम जी से ही ले लेते। मैंने कहा पचास रुपये महिने के अछुत पाठशाला चलानो है। तो मेरे को साथ लेकर दानवीर बाबू जूगलकिशोर जी बिड़ला की हवेली ले गये। बैठक में छोटे बड़े पचास आदमी बैठे थे। महात्मा सेवादास जी को देखकर बिड़लाजी ने खड़े होकर सतराम किया। स्वामी ने आशीर्वाद दिया। मेरे लिय पूछा तो कहा यह हनुमान प्रसाद बावलिया भुन्भूनू का है तो बिडलाजी ने पूछा पं० केदारनाथजी बावलिया तुम्हारे क्या होते हैं तो मैंने कहा मेरे सागी ताऊजी हैं। यहां भी श्री केदारनाथजी बावलिया के नाम ने मेरी सहायता की। स्वामीजी ने ५०) रु० महिने के अछूत पाठशाला के लिये देने को कहा, उसी वक्त श्री सुखदेव जी डालमिया मूनीम को बुलाकर कहा पचास रुपया महिने को महिने इनके नाम का मनीआर्डर कर दिया करो। जो ४५ साल तक रुपये आते रहे। श्री स्वामी रात वाली सांप की घटना सुनाई और कहा कितना अच्छा सगून हुआ था दिशावर चला जाता तो निहाल होकर आता। श्योदानसिंह ऊंटवाले को बूलाया उनसे सारी कथा सूनी बडे खुश हुये ऊंटवाले को ११) रुपये एक धोती जोड़ा और १० सेर गूड

२ सेर फिटकड़ी दिलाई। ऐसे थे महात्मा सेवादासजी, बिडला परिवार में उनका जो हुकम था।

देना होता है जिसे खुदा देता है
देने का जरिया भी बना देता है।
मगर इन्सान की आदत में दाखिल है फलड
हर काम में टांग अपनी अडा देता है।।

झुन्झनू में दो बड़े महात्मा हुये। नगर मे पूर्व में टीले पर श्री चंचलनाथ जी और नगर से पश्चिम में दरगाह में श्री कमरदीशाहजी यह दोनों ही पहुंचे हुये संत थे। श्री कमरदीशाह जी कायमखानी सरदार थे। श्री कायमसिंहजी के वंशज थे। ठा० श्यामसिंह जी बिसाऊ के विश्वास पात्रों में बहादुर सरदार थे। यह उनके अंग रक्षक भी थे। रात को सोते थे तो यह उनकी निगरानी करते थे। तीसरे पहर रात को उठकर अपने विश्वासी दो, राजपूतों को पहरा संभलाकर जंगल में चले जाते, ज़रूरी बात से फारिग होकर पास के एक कूवे पर चले जाते, कूवा बेकार था पानी नहीं था। उसके ढाने में बठकर हाथ-मूंह धोते, कूवा उपर तक पानी से भर जाता था तो स्नान करते थे। इबादत करने को बैठ जाते, ब्रह्म मूहूर्त होने पर गढ में आ जाते थे। यह क्रम वर्षों तक चला। एक दिन एक राहगीर भटकता हुआ आया वह प्यासा था। उसी कूवे पर पहुंच गया, कूवा ढाणे तक भरा हुआ था। धोवा भर-भर कर पानी पिया; पानी क्या था, मीठा गंगाजल था। पहुंचे हुये दुखेस अपनी इबादत में मस्त थे। राहगीर कूवे से थोड़ी दूर पर जाकर बैठ गया। इबादत खत्म होने पर संत गांव में जाने लगे, राहगीर और पानी पीने के लिये कूवे पर गया तो सुखा देखा पानी नीचे चला गया था। राहगीर को बड़ा अचरज हुआ तो वह उनके पीछे-पीछे गढ तक

गया । संत अपने काम में मसरुफ हो गये । दिन निकल आया, राहगीर श्री भानीसिंह जी किलेदार के पास गया, उसने कूवेवाली घटना उनको सुना दी, किलेदारजी चक्कर में पड़ गये गढ़ में ऐसा करामाती कौन सज्जन है। राहगीर भी टांई का ही राजपूत था । किलेदार जी ने दरवाजे के संतरी को बूला कर पूछा "तड़काउ गढ में से कौन निकल कर जाता है" ? पहरायति ने कहा कमरदी खांजी हाथ-मूंह धोने के लिये सदा हो तड़काउ बाहर जाते हैं । किलेदार ने यह घटना ठा० श्री श्याम सिंह जी को बतलादी । ठा० श्यामसिंह जी भी अचरज में पड़ गये । शाम की मशाल जलाई जाती है, सब लोग दरबारी, घरबारी, कर्मचारी, नौकर-चाकर इक्ठे होते हैं और ठाकर साहब को राम-रमी करते हैं, रावलों में भी मंगलाचार व प्रभु स्तूती होती है । सब लोग राम-रमी करके जाने लगे तो ठाकर साहब ने श्री कमरदी खांजी को रोक लिया और अपने साथ कमरे में कुर्सी पर बैठाकर बहुत सम्मान के साथ बातें करने लगे । कमरदी खाजी ने मन में विचार किया आज तो कुछ दाल में काला है, तुम्हारा राज़ जाहिर हो गया है । रात को भोजन भी अपने पास चौकी लगाकर कराया । इजाजत लेकर आखरी सलाम करके अपने डेरे पर आ गये, जानमाज और अपना कमंडल लेकर लोगों की आंख बचाकर जंगल में निकल गये । झुन्झुनू में जहां अब दरगाह है वहां पहाड़ी थी, एक बड़ा जाल का दरखत था, उसके नीचे आसन्न जमाकर बैठ गये, भक्ति में मस्त हो गये । उधर श्री चंचलनाथ जी टीले पर चमकने लगे ।

कस्बे झुन्झुनू में जहां अब जोशियों का गट्टा और नीम है वहां एक बहूत बड़ा पीपल का पेड़ था । उस पेड़ के नीचे धूरी बनाकर एक मस्तराम बाबा रहा करते थे । भगवान का भजन करने वाले थे उनका

व्रत था दिन में एक वार रोटी खाते थे, एक ही अन्न खाते थे, मीठा भी एक ही खाते थे। अन्न में बाजरा, मीठे में गूड़। शाम को आरती के वक्त एक महिला दो रोटी और गूड़ की डली लेकर आती थी और मस्तराम बावा को दे जाती थी। महिला सैन भक्त की विरादरी की थी और बांझ थी। महात्माजी अपनी घूरी वन्द कर लेते थे। रात को दो वजे घूरी खोलते थे। एक पानी का मटका और एक तूंवा वाहर रखते थे। गोवर माटी का एक छोटा सा चवूतरा था। थोड़ी देर में दो पहूंचे हुये संत आते थे एक पूर्व की ओर से, दूसरा पश्चिम की तरफ से। वह सतसंग की वातें करते थे। मस्तरामजी भी लाभ उठाते थे। ४ वजे दोनों चले जाते थे और मस्तराम वावा अपनी घूरी वंद करके भजन गाने लग जाते थे। एक रात जो फकीर पश्चिम की तरफ से आते थे वह नौहत्था सिंह की सवारी करके आये। मस्तराम डर गया, इतनी देर में पूर्व की ओर से आनेवाले महात्मा आ गये। उन्होंने सिंह के सिर पर हाथ फेरा तो हिरन वनकर दौड़ गया। दूसरे दिन पूर्व से आने वाले महात्मा एक पत्थर की सीला पर वैठकर सतसंग की वातें करने लग गये। जाने लगे तव पश्चिम से आने वाले महात्मा ने सिल पर हाथ फेरा, सिल वहीं रह गई। पूर्व से आने वाले महात्मा का नाम था श्री चंचलनाथ जी और पश्चिम से आने वाले का नाम था श्री कमरदीशाहजी। दोनों ही महात्मा मस्तराम जी की कूटिया पर ही मिलते थे। न उन्होंने टोला देखा, न इन्होंने दरगाह देखी। एक सीतारा पूर्व में चमकता था, दूसरा सीतारा पश्चिम की ओर। एक रोज महात्मा मस्तराम जी ने भक्त महिला से कहा त्रिया चरित्र क्या होता है दिखलाओ। महिला ने कहा संत को इस प्रपंच में नहीं पड़ना चाहिये, परन्तु वार-वार कहने पर महिला ने कहा कल दिखलाउंगी। दूसरे दिन महिला ने दोनों रोटी. गूड़ मस्तराम वावा को देदिया, जो छींके पर रख दिया।

महिला वार घाल कर जोर से रोने लग गई। राहगीर और पड़ोसियों ने देखा मोडे ने इसको छेड़ा है, तो वावा मस्तराम जी की खूब पिटाई करने लगे। इतनी देर में एक वढे जोशीजी रोला वैदा सुनकर ग्रा गये ग्रौर कहने लगे इस महिला से पूछो तो सही, वावाजी ने क्या किया। जव महिला से पूछा गया कि क्या हुग्रा, तो महिला ने कहा जव मैं रोटी देने ग्राई तो वावाजी का सिर एक तरफ पड़ा था ग्रौर धड़ एक तरफ पड़ा था, देखकर डर गई ग्रौर रोने लगी। तव तो मारने वालों ग्रौर गाली गलोच करने वालों को वडा पश्चाताप हुवा वावा मस्तराम से माफी मांगने लगे उस दिन के वाद वावाजी का मान सम्मान ज्यादा हो गया। रात को २ वजे दोनों सन्त आये श्री कमरदीशाहजी ने पुछा देख लिया त्रिया चरित्र मस्तरामजी शरमा गये, शाह साहव ने कहा त्रिया तो खुद ही एक चरित्र है। सर्व शक्तिमान परमात्मा की कृपा से और वावा मस्तरामजी के आशीर्वाद से वांझ महिला नेवगण के एक पुत्र हूवा जिसके वसंज दीजा नाई के वास में है। और जिस सिला पर श्री चंचलनाथजो महाराज वैठकर ग्राये थे, वोह सिला श्री लावरेश्वर महादेव का कूवा है उसके ढाणे में ग्रव भी मौजूद है।

है चाह फकत एक दिलवर की, फिर ग्रौर किसी को चाह नहीं,
इक राह उसी से रखते हैं, फिर ग्रौर किसी की राह नहीं।
सागिद नहीं उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, ग्रावाद नहीं,
है जितनी बातें दुनियां की, सब भूल गये कुछ याद नहीं।
दिन रात मगन खुश बैठे हैं, ग्रौर ग्राश उसी की भारी है,
बस ग्राप ही वह दातारीं है, ग्रौर ग्राप ही वह भंडारी हैं।
होठों पर राग तमाशे का, ग्रौर गत पर वजती ताली है,
हर रोज वसंत ग्रौर होली है, ग्रौर हर एक रात दीवाली है।

हम चाकर जिसके हुस्न के हैं, वह दिलवर सबसे आला है,
उसने ही हमको जी बख्शा, उसने ही हमको पाला है।
हर आन हसी हर आन खुशी. हर वक्त अमीरी हैं बाबा,
जब आशिक मस्त फकीर हुये, फिर क्या दिलगीरी है बाबा।

एक माननाथजी संत थे दोनों पैरो में नीली पीली लाल हरी कपड़ों की लीरी बान्धा रहते थे। दोनों हाथों में चुड़िया और काजल भी घाला करते थे, एक पैर में घूघरा बाधे रहते थे टोपी लम्बी झन्डी-दार हाथ में एक छड़ी जिस पर ध्वजा लगी रहती थी, तोतर की सी तरमर तरमर चाल चलते थे न किसी से बोलते थे बोलते थे न कुछ कोई देता था, तो लेते भी नहीं न कही बैटते थे। अपनी चाल में मस्त थे। नाथजी के टीले से आ रहे थ, एक मालन अपने घर का चौक झुक कर टेडी कमर कर के बहार रही उसकी पीठ पर बैठ कर घूघरु बजाने और तुर मुर तुर मूर गाने लगे। अडोस पडोस की औरते सब देख रही थी, झाड़ू निकालने वाली औरत बच्चों की तरह घोड़ी बन गई, कुछ नहीं बोली। नौ महिने बाद उसके एक लड़का हुआ, विवाह के बीस वर्ष बाद। भोखा घोसी की बकरी के एक मरा हुआ बच्चा हुआ था, उस बकरी के बच्चे को भाननाथ जी अपने दोनों खवों पर डालकर तीतर की सी चाल चल कर बाजार की तरफ आ गये। श्री जैसाराम जी दर्जी की दुकान में जाकर कान में कूर-कूर करने लग गये। श्री जैसाराम जी दर्जी का मकान, दुकान बाजार में थी, जिसमें मोहनलाल साह ने मकान बैठक बनाली है। श्री बजरंगलाल वर्मा पर भी नाथजी की कृपा थी। श्री जैसाराम जी ने गाजर, गजरा अपनी बकरियों के लिये रख रखा था। गाजर तो खुद खा गये और गजरा खवे पर बकरिया था उसको पटकर ज़मीन पर डाल दिया, सारा गजरा खा गया। नाथजी इनको

दुकान आते रहते थे। नाथजी जाखल गांव के जोहड़े में जाकर रहने लगे। एक सरदारों की कोटड़ी से दो रोटी, एक रावड़ी छा का कूलडिया उनके लिये आठ बजे आ जाता गांव में नहीं जाते थे। एक दिन १० बजे तक रोटी रावड़ी नहीं आई तो गांव में गये। जिस कोटडी से रोटी आती थी उनकी जवान घोड़ी मर गई थी। उसके गाडने का खड्डा खोदा जा रहा था। घोड़ी, घोड़ा जहां मरता है उसी जगह गाडा जाता है। नाथजी ने पहले तो उस घोड़ी के तीन परिक्रमा लगाई और फिर घोड़ी के कान में कूरर-कूर किया, घोड़ी बैठी हो गई। नाथजी ने जाखल गांव छोड़ दिया, फिर उनके दर्शन नहीं हुये। उनका जाट कुल हैं खतेहपुरा गांव में जन्म हुआ था। झुन्झुनू आते थ तो नाथजी के टीले में रहते थें।

मान कहे महादेव सब, करे न व्यर्थ विचार।
देव विचारे आपनो, तो भवसागर पार॥
सब देवन को देव है, महा एक आत्म देव।
और देव सब छोड के, करिये आत्म सेव॥



दादूपंथी महात्मा श्री ईसरदास जी

महात्मा इसरदासजी करनावत राजपूत के कुल में जन्मे थे आप ६ फुटे जवान थे शरीर भरा हुआ था, केवल एक लंगोटी ही बदन पर रखते थे जुते भी नहीं पहनते थे, कड़ाके की सर्दी हो भयंकर गर्मी हो। वोह राजपूत के घर की ही रोटी खाते थे, एक वार उनका श्री द्वारका जी यात्रा पर जाने का विचार हुआ, यात्रा पर निकल गये। एक दिन जंगल में पहुंचे दिन छिप गया। कुछ ग्वालिये अपनी भेड़ वकरी चराकर जारहे थे, तो महात्मा जी ने उनसे पुछा कोई राजपूत का घर भी आस पास है। तो ग्वालिया ने कहा यह सांगा ग्वालिवा राजपूत है, इसकी ढाणी पास ही है। महात्माजी सांगे के साथ चले गये। उसकी माता ने दो बाजरे की मोटीं रोटी और वकरीयों के दूध का कटोरा भर दिया, महात्मजी ने सांगा को भी अपनें पास विठा कर भोजन कराया, महात्मा जी जाने लगे तो सांगा गौड ने कहा, महाराज आप वापस भी इसी मार्ग से आवे में आप को कामली दूंगा। महात्माजी द्वारकाजी रवाना हो गये कुछ दिनों वाद सांगा गौड वकरीया चरा रहा था, अचानक नदी आगई, और ग्वालिये तो नदी के किनारे पहुच गया मगर सांगा नदी में बहगया। साथियों से आवाज देकर कहा। मेरी मां से कह देना कि महात्माजी को कामली जरुर दे दे।

जल डूबन तो जाय सांगा संदेशो दियो,
कहजो मेरी माय कवि ने देवे कामली।

ईसरदासजी को रास्ते में कोई राजपूत का घर नहीं मिला था, द्वारका पहुचे तो दोपहर हो गई पट वन्द हो गये, पुजारीयों से दर्शन

करने को कहा पुजारीयों ने कहा आप भोजन कर लीजियें, शाम को दर्शन होंगे तो महात्माजी ने सभा मंड में जाकर कहा।

ईसर आयो इसरा खोलदे परदा यार।
मैं आयो तुझ कारने दिखलादे दीदार।।

यह कहते ही द्वारकाधीशजी के सभा मंड के पट खुल गये, भगवान के सामने एक थाळ मिठाई का भरा हुआ चौकी पर पडा था, पुजारी और भक्त लोग यह देखकर चकित रह गये महात्माजी ने सब को भोग दिया और खुद भी कोने में वैठकर भोजन करने लगें। फिर महात्माजी भेट द्वारका जी चले गये। भेट द्वारका के चारों तरफ समुद्र है वीच में दो मील में जमीन हैं। नोका से जाना पडता है। में भी पांच साल पहले श्री द्वारकाधीश की यात्रा पर गया था तो भेंट द्वारकाजी भी दर्शन को गया था। वहां पर वहुत वडा मन्दिर और रूकमणीजी का महल है। रूकमणीजी के महल पर लिखा हुआ है।

देख सुदामा की दीन दशा, करुणा करके करुणानिधी रोये।
पाणी की परात के हाथ छुयो नहीं नयन के जल से पग धोये।

महात्मा इसरदासजी इस पूरी में १५ दिन अज्ञात वास से रहें, किसी से मिले नहीं। कुछ दिनों वाद वापस आये तो सांगा गोड की ढाणी में गये, सांगा की माता ने आदर सतकार किया स्नान ध्यान के वाद माता ने चौकी पर भोजन रख दिया। महात्माजीं ने कहा सांगा कहा है हम तो उसके साथ वैट कर भोजन करेंगे, सांगा की माता ने सोचा महात्मा जी से कहूगो कि सांगा तो नदी में वह गया तो संत भोजन नहीं करेंगे। महात्मा जी ने दूवारा कहा कि सांगा को वुलावो तो सांगा की माता की आखों में आंसू वहने लग्रें। महात्मा जी ने कहा क्या वात है तो

क्षत्राणी ने कहा महाराज वोह तो एक महिना हो गया नदी में बह गया, महात्मा जी ने सर्व शक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना कि तो क्या देखते है कि चार आदमी सांगा को अपने साथ लेकर आ रहे हैं। कहने लगे नदी में बहता हुआ जा रहा था, हमारे गांव के पास किनारे पर आया तो हमने इसको निकाल लिया। कई दिनों तक वैहोश पडा रहा, कल होश आया तो अपनी माता और ढाणी का अता पता बतलाया, अब इसकी माता को सम्भलाने को आये हैं। माता ने हृदय से लगा लिया, सांगा ने महात्माजी को प्रणाम किया। आगन्तु सज्जनों को भोजन के लिये कहा उन्होंने कहा पहले महात्मा जी को भोजन करावो हम वाहर कूवे पर स्नान करते है। महात्मा जी ने अपने पास विठा कर सांगा के साथ भोजन किया, माताजी ने वाहर कूवे पर जाकर देखा तो चारों सज्जनों का पता नहीं कहां गये खोज भी नजर नही आये कौन थे दूसरे दिन संतजी जाने लगे तो सांगा ने कामळी भट की। महात्माजी ने कहा—

छल से ठगाय गयो दानव विचारों बल,
तीन पेन्ड नाप लीनी हरि त्रिभवन को,
सूयोधन कोष पर अयेल ज्यू ही आज्ञा रही,
कैशव बखान कैसे करे कर्ण को,
राम महाराज की वह दानता में राजनीति,
भेद लेन काज दीनी लंक विभिषण को,
कामली न भूल्यो मंझधार में वहत जात,
कहेंगे ऊदार सांगा गोड से सजन कों।



महात्मा गुलाबनाथ जी सकराय

सांकम्वरी माता साकाहारी देवी है ब्रह्माणी रुद्राणी है। यहां मांस मदिरा की सख्त मनाई है, गुलावनाथजी महाराज माताजी के मुख्य सेवक प्रवंधक थे। चारों तरफ पहाड़ जगंल नाहर भघेरे रहते थे। ऊंट की सवारी से ही उदयपुर शेखावाटी से जाना पडता था, एक दीसावरी यात्री अपनी पत्नी के साथ एक वारह महिने के वच्चे को लेकर आया माताजो का जडूला उतराने को। दूसरे दित वालक को अचानक तकलीफ हो गई। वालक वेहोश हो गया, सांस की गति रुक गई वच्चे के माता पिता रोने लग गये वालक को माताजी के सामने रख दिया उसकी माता श्री गुलावनाथजी के पास रोती हुई आई और कहा महाराज वच्चे को देखो नाथजी महाराज मन्दिर में गये। वच्चे पर अपनी चादर डालदी पांच मिनट आंख मिचकर प्रार्थना करने लगे वालक हंस कर वैठा होगया। वोह वच्चा वहुत वडा सेठ होगया, अपने वेटे पोतों को साथ लेकर यात्रा को आता है नवरात्रा दान पुन्य कराता है

संकराय गांव ठाकुर भानुप्रताप सिंह जी श्यामगढ़ का था, वहां आपका वाग और महल वना हुवा है, देवीजी के भक्त हैं। आप नवरात्रा करके माताजी की धोक खाने गये थे। श्री गुलावनाथ जी से कहा पुजा करा दीजिये। ठाकुर साहव ने पुजा कराके धोक खाई तो नाथजी ने कहा राजन खुशी रहो तो ठाकर सहाव ने कहा कि मैं तो वारां गावों का ठाकर हूं। राजा नहीं हूं सितापुर उतर प्रदेश में आपका ननीहाल था। राजा सहाव का अचानक स्वर्ग वास होगया ठा. श्यामगढ़ का उनको उतराधिकारी राजा वना दिया, अंग्रेजों की तरफ से १९ तोपों

की सलामी थी वाइसराय के दरबार में कुर्सी थी, बाद में आप सीतापुर रहने लग गये, माताजी के एक कुंआ बाग चढाया गया, यात्रा के लिये आते जाते हैं। मैं किशोर अवस्था से ही माताजी की सेवा में जाने लग गया था। उदयपुर से सकराय तक पैदल ही जाता आता था। एक दिन आसोज सुदी १५ सरद पूनम को गया तो महात्मा श्री गुलाबनाथजी समाधि में बैठे थे में बाहर कोटडी के पास बैठ गया, नाथजी समाधि से उठकर बाहर आये तो मेरे पर उनकी निगाह पडी, मैंने प्रणाम किया तो मुस्कराके मेरे तीन बार थपथपी लगाई और एक गूंद का कुटमपाल लाडू दे दिया जिसके खाने से चौबीस घन्टे भूख नहीं लगती थी। एक दिन नाथजी ने पुछा छोरा यो गांधीजी कूण है जो अंग्रेजा स टकराव जब के वड़ा वड़ा राजा महाराजा अंग्रेजा क आग हाथ जोड़या खड़या रहवे है। चरखा चलाने और मार खाने से गोरा क्या भाग जावेगा। मैंने कहा महाराज गोरा कंस है और गांधी जी कृष्णजी और चरखा शुदर्शन है मार खाने से अग्रेजों का घड़ा पाप से भर जावेगा तो नाथजी ने हंस कर कहा मेरे भी याही जचने लगी हैं, गांधी जी दिल्ली के तख्त पर नहीं वैठेगा। परम हंस योगी राज १२५ वर्ष के महात्मा पं० मदन मोहन जी मालविया जी के गुरु उनके मित्र पं० मोतीलालजी नेहरू के पुत्र रूप में पैदा हुवे है वोह दिल्ली की गद्दी पर वैठेगा। जिनका नाम पं० जवाहरलाल नेहरू है। नाथजी के आस पास वैठे हुवे लोगो को नाथ जी की बात सुनकर अचरज करने लगे। साकमरी माता का नया सभा मंड शिखर वंद कई तिवारे श्री रामगोपाल जी डिगायच नवलगढ़ वालों ने लाखों रुपये लगाकर वनाये थे, उद्घाटन के वक्त सैकडों पंडित वूलाये नवरात्र कराये ब्रह्मपुरी कराई सकराय और आस पास के गांव वालों को जीमाये व दान दक्षिणा दी गई, यात्रा समाप्त होने पर सेठ नवलगढ जाने को तैयार हुवे तो गठ जोडा की रवानगी की धोक खाने माता जी

के मन्दिर में गये नाथ जी पास खडे थे। सेठ रामगोपाल जी डंगायच माता जी की भक्ति में मस्त थे। माता जी देहली पर सर रखकर प्रार्थना की कि माताजी मेरे को तो आपके चरणों में ही रख लिजिये नाथजी ने पिछे से सेठजी का कोट खैंच कर कहा प्रार्थना वदलो, मगर भक्त की आत्मा तो माताजी के चरणों में समा गई। सब लोग और उनकी पत्नी माताजी की प्रार्थना करने लग गये, नाथ जी भगवती की माया को देख कर पसर गये आधा घंटा के वाद चेत हुवा। अपने छोटे भाई श्री वालक नाथ जी को अपना उतराधिकारी घोषित कर के समाधी लगा कर वैठ गये। अपना ज्यादा समय ध्यान योग में लगाने लगे। श्री वालक नाथ जी अच्छे प्रशासक और वहादुर आदमी थे चोर डाकू उन पहाड़ो में न चोरी करते थे न डकैती न पनाह पाने की हिम्मत करते थे यदि कोई चोरी होती तो चोरों का पिछा करते थे, थाने में फौरन रिपोर्ट करा देते थे। खुद भी अंग्रेजी वन्दूक और देशी हथियार रखते थे। एक दिन पांच डाकू वडा डाका डालकर श्यामगढ की तरफ से आये डाके के धन की पांच गांठ वांध रखी थी अंग्रेजी दो बन्दूक खोल कर गांठ में बांध रखी थी सैंकडों कारतुस पेट में बंध हुवे थे। उनका इरादा था मन्दिर में से सैंकडों तोला चांदी के छत्र और नाथजी को मार कूट कर सोने के जेवर आदि ले जावे पांचों डाकू मन्दिर में आ गये। चतुर नाथजी ने भांप लिया डाकू तो खतरनाक है, खडे होकर उनका सत्कार किया। नौकरों, सरदारों को घड़े का ठन्डा जल पिलाओ रसोइये से कहा जल्दी सी भौजन तैयार करो डाकूओं से कहा सामान सामले तिवारे के कौने में रखदो। और आप कूण्डों में स्नान करके माताजी की आरती करो। नाथजी के इस आदर भाव से डाकूओं के दिल में सहानभुति हुई। नाथजी ने दो आदमियो को गांव और कूवों पर भेज दिया जल्दी से जल्दी माताजी के मन्दिर में आजावो और एक

आदमी को थाने उदयपूर में रिपोर्ट लिख कर वडे वडे डाकू मय माल मशरूका के मन्दिर में मौजूद है मेरी भी जान को खतरा है। आधी घंटा में ही ५० गूजर वीर मन्दिर में पहूंच गये। वीस जवानों को तो जिस तिवारे में पोटली गांठडी पडी थी उसके दरवाजे में विठा दिया और दस दस आदमियो को दोनों दरवाजों में वैठा दिया और दस आदमियो को अपने पास वैठा लिया। एक डाकू ने जिसमें वन्दूख कारतुस थे उस पोटली की तरफ जाकर खोलना चाहा तो नाथजी ने कहा आप पोटली या गांठडी के हाथ नहीं लगावें, जाते वक्त आपकी गांठली ले जावे। इतनी देर में रसोइये ने आवाज दी कि भोजन तैयार है। नाथजी ने कहा सरदारों के लिये चौकी लगादी है यहां भोजन ले आओ कई दिनों से पेट भर कर भोजन नहीं किया था, रसोइये ने हलवा, पुरी साग, आचार रखा। मनवार करके नाथजी ने इतना ठूंस कर भोजन खिलाया कि डाकू भागने दौड़ने के काविल नही रहे। फिर चिलम भरवादी थोडी थोडी आड टेड करने लगे। इतने में ही २० जवान और थानेदार साहव आगये। नाथजी को ही डांटने लगे। आपने डाकूओं को पनाह दी है। नाथजी ने कहा जोधाना के सरदार हैं, यात्रा को आये है। पांचों डाकूओं के हथकड़ी वेडिया डालदी। गांठडी खुलवाई तो एक गांठडी में दो अंग्रेजी वन्दूक और सौ कारतुस और दूसरी गांठडियों में सोने चांदी के जेवर कीमती दुसाले साड़िया निकली। हजारों रुपये के नोट चांदी के वरतन सोने गिन्नी गर्जे के लाखों रुपये का माल था, थाने उदयपुर में ले गये सीकर से एस, पी. साहव और जवान आगये उनको सीकर ले गये। नाथजी महाराज को उनकी सूझ बूझ और कारगूजारी का सर्टिफिकेट दे दिया। ऐसे थे वालक नाथजी। एक वार आसोज के नवरात्र समाप्त हुवे थे। यात्री वच्चे औरतें, पंडितगण वापस जा रहे थे कोई एक कौस के फासले पर वस दस हाथ निचे गिर गई सड़क का एक

भाग टूट कर जमीन में धंस गया था। किसी भी यात्री के चोट नहीं आई नाथजी और मैं भी उनके साथ पच्यासी आदमी मौके पर गये कई यात्री दरखतों के निचे बैठे थे कई मोटर के पास। सब माताजी को धन्य वाद दे रहे थे। दुसरी मोटर मंगाकर यात्रियों को उदयपुर पहूंचाया गया। उस मोटर का ड्राइवर फरार हो गया था। किसी भी यात्री के एक खरूंस भी नहीं आई ऐसी है शक्तिशाली। साकमरी माताजी।

श्री बालक नाथजी को सतरंज और गाने का बहुत शौक था। घंटों तक ही हरमोनियम पर गाते रहते थे सतरंज पर बेठ जाते थे तो दिन छिपा देते। एक दिन अचानक ही प्रातः काल देवी के दर्शन किये हार्ट फैल हो गया, बहादुर और चतुर नाथ संसार से विदा हो गये, उनकी जगह अब इसी यादव कुल के राजपुर के श्री गुलाबनाथजी के खानदान के श्री दयानाथजी महाराज गद्दी पर बैठे हैं, आप शिक्षित है गम्भीर और सफाई पसन्द है यात्री की सेवा करने वाले मधूर भापी है। आशा है आप श्री गुलाबनाथजी महाराज के पद चिन्हों पर चलेगे और अध्ययन बढावेगे। माताजी के बड़े-२ पन्डित और विद्वान विचारक आते है। हर वर्ण में विद्वान बढते जाते है लड़किया भी बी. ए., एम. ए., डॉक्टर वकील हैं। आचार्य-शास्त्री ज्योतिषाचार्य पंडित माताजी के सेवक है। माताजी भी ब्राह्मणी है। आशा है नाथजी भी जमाने के साथ होड़ लगाने में पिछे नहीं रहेगे। भजन भाषण अध्ययन जनसेवा का अभ्यास करेंगे। विद्वानों की सर्वत्र पुजा होती है। यह स्वर्ण अवसर पुर्व जन्म के सत कर्मो का फल है।



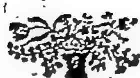
जयपुर में दादू जयंति

जयपुर में दादूजी महाराज की जयन्ति मनाई जारही थी, दादू महाविद्यालय रामनिवास बाग में अजायबघर से दक्षिण में था, श्री स्वामी लच्छीरामजी वैद्य सभापति थे। स्वामी जी भारत में उस वक्त आयुर्वेद के प्रथम आचार्य वैद्य थे। श्री यादवजी महाराज को भी बुलाया गया था। भारत के हजारों संत महात्मा आये थे। स्वामी के भाषण के बाद यादवजी महाराज का भाषण हुवा, सर पुरोहित गोपी नाथजी दादू वाणी पर आधे घन्टे तक बोले। स्वामी मंगलदासजी जयराम दास कई संत बोले। उस जमाने में दादू समाज में महात्मा और मंडलेश्वर पंडित बहुत थे स्वामी सेवादासजी, स्वामी अदभूतराम जी कथा वाचक स्वामी श्रीं बलदेवदास जी श्री ईसरदास जी महात्मा उदयराम जी और कई अज्ञात महात्मा थे। फिर ऐसे महात्माओं के दर्शन और सम्मेलन देखने को नहीं मिला। इस जमाने में सन्तों का अभाव हो रहा हैं। कई दादू द्वारे सन्तों के अभाव में खाली पड़े है। स्वामी मंगलदास जी थोडे दिनों पहले ६२ साल की आयु में स्वर्ग सिधार गये। जयपुर के बाहर से जो विद्वान आते थे। स्वामी श्री मंगलदास जी शास्त्रार्थ करके संतृप्त होकर जाते थे। मेरे पर तो उनकी बहुत कृपा थी। पचास वर्ष तक मिलना जुलना रहा सतसंग का लाभ उठाया। अब बड़ागांव जिला झुन्झुनू में एक दादूजी का भक्त सेठ श्यामसुन्दर ओमप्रकाश महाजन है जो हर साल जेठ वदो ८ अष्टमी को एक सप्ताह का आयोजन कराता है लाखों रुपये का दादू द्वारा बनवाया है। नराणे के महन्त श्री हरिराम जी और महा मंडलेश्वर श्री आत्मारामजी बगड़ जो वर्तमान में प्रमुख कथा वाचक है। आप चार माह तक जब चतुर्मासा करते हैं

हर रोज नया नया प्रवचन करते, एक वार आपका प्रवचन सुनने के वाद रोजाना जाना ही पड़ता है। स्वामी सुरजनदासजी परम विद्वान संत भी पधारते है और भी कई भक्त महात्मा आते है। सेठजी की तरफ से ८ दिनों तक भोजन चाय दूध का प्रवन्ध रहता है कलकत्ता से इसलिये एक साल से आते है। में भी सतसंग का लाभ उठाने को वड़ागांव जाता हूं। कलकत्ते महानगर में भी वड़ागांव वाले सेठ के मकान का नाम ही दादू भवन है। वड़ेगांव वाले दादू द्वार में संत न मिलने से एक पंडितजी से पुजा आरती कराई जाती है। सेठ सव प्रवंध करने को तैयार है। एक जमाना ऐसा था, संतो को स्थान नहीं मिलते थे। संवत १९९८ में महात्मा स्वामी चमेलीदास जी स्वामी की ढाणी श्री मुखरामदास जी स्वामी के गुरु का स्वर्ग वास हो गया था, झुन्झूनू से दादू पंथियों नागों की जमात वाजा गाजा पट्टा खेलती हुई गई थी, रास्ते में गांव वाले कहते यह जमाते कहां नावड़ती होगी। में भी उस जमात के साथ गया था। श्री स्वामी भागिरथमल जी एडवोकेट छोटे से ही थे। क्या जमाना था। संतों का। स्वामी भागीरथमल जी गृहस्त होते हुए भी भक्त है दादू वाणी का पाठ करते है सद विचार सद आचरण रखते है और कांग्रेस (ई) के सक्रिय सदस्य देश भक्त है।

मौज करी गुरुदेव दया करी शब्द सुनाय कह्यो हरि नेरो
ज्यो रवि के प्रकटे निशि जात सुदूरी कियो भ्रम भान अंधेरो
कायक वाचक मानस हूं करि है गुरुदेव ही वन्दन मेरो।
सुन्दर दास कहे कर जोरि जु दादू दयाल को हूं नित चेरो।
पूरण ब्रह्म विचार निरन्तर काम न क्रोध न लोभ न मोहै।
श्रोत त्वचा रसना अरु छाया सुदेखी कछु कहु नैन न मोहै।

सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादू दयाल ही मोरि ने मोहे।
धीरज वन्त अडिङ्ग जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान गहयो दृढ अदू।
शील संतोष क्षमा जिनके घट लागी रहयो सु अनाहद नादू।
भेष न पक्ष निरन्तर लक्ष जु और नहीं कछु बाद बिवादू।
यह सब लक्षण है जिन मांही जो सुन्दर के उर है गुरु दादू।
वेद थके कहीं तन्त्र थके कहि ग्रन्थ थके निशिवासर गाते।
शेष थके शिव इन्द्र थके पुनि खोज कियो बहु भांति विधाते।
पीर थके अरु मीर थके पुनि धीर थके बहू बोलि गिराते।
सुन्दर मौन रिद्धी सिद्धो साधक कौन कहे उसकी मुख बाते।
योगी थके कहि जैन थके रिषी तापस थकि रहे फल खाते।
सन्यासी थके बनवासी थके जो उदासी थके बहु फेर फिराते।
शेष मसायक और उलायक थके रहे मन में मुसकाते।
सुन्दर मौन गहि सिद्ध साधक कौन कहे उसकी मुख बातें।
बिती गये पिछले सब ही दिन आवत है अगिलो दिन नेरे।
काल महाबलवन्त बडो रिपु साधि रहयों शर उपर तेरे।



चौधरी झूझाराम नहरा

शहर झुन्झुनू के पश्चिम में है नहरो पहाड़,
वहा पर वूढो चौधरी मिल गयो सुबक २ कर रोवे यार।
मैं समझायो धीरज दीनी परिचय दे दे सरजन हार,
नाम मेरो है झुझाराम चौधरी जाति को हू मैं जाट,
गोत मेरो है नहरो जो जाटों में है विख्यात।
मैं रहता हूं नहरो पहाड़ में जहां विराजे महात्मा शंकरदास
मेरी जात का मने विसरायो या वडी है दुख की वात।

शहर झुन्झुनू वहुत पुराना है, नवावों के जमाने में चौधरी झुझाराम थे उन्हीं के नाम से झुन्झुनू शहर वसाया गया है। झुन्झुनू आवाद रहेगा, जब तक चौधरी झुझाराम का नाम रहेगा। चौधरी झुझाराम नहरा घुड़सवार और वहादुर सिपाही भी था, नवावों का काम काज सव सम्भालता था। जव दिल्ली को जो सालाना के मामले का रुपया दिया जाता था, तीन साल का चढ गया था। वरावर तकाजा आने लगा, मगर मुगलिया खानदान की हकूमत कमजोर पड़ने लगी तो नवावों को भी रिआया माल जमीन का लगान आदि देने में देर करने लग गई। चौधरी झुझाराम ने नवाव साहव को दिल्ली जाने की सलाह दी और मुआवजा मुआफ कराने और सहायता के लिये फौज की टुकड़ी देने को कहने के लिये भेज दिया। उधर दिल्ली से रुपया और ५ सौ सवार भेजने का तकाजा आगया। नवाव साहव का रास्ते में इन्तकाल हो गया। चौधरी झुझाराम नहरा ने श्री शार्दूलसिंह जी शेखावत को

उदयपुर शेखावाटी से बुला लिया। नवाव की बेगमें श्री शार्दूलसिंह जी से पर्दा नहीं करती थी। उनका आना जाना भी था।

नवाव दिल्ली गये हुवे थे। पिछे से साजिश करके नवाव की गद्दी पर कब्जा कर लिया, औलाद थी नही, कई हकदार मैदान में आ गये, बेगम ने सब भाई बेटों को कह दिया कि चालिसे पर जो नजदीकी हकदार होगा, सर्व समिति से पगड़ी बाध दी जावेगी वोह हीं नवाव दिल्ली जाकर बादशाह को नजर कर आवेगा। छोटे नवावों में आपस में फुट हो गई। श्री शार्दुलसिंह जी की मदद पर पांच हजार राजपूत उदयपुर वाटी से आ गये, ३ हजार घोड़े, २ हाथी आ गये। चालिसे पर शहर खाना दिया, छोटे मोटे नवाव श्री शार्दुल सिंह जी के साथ हो गये। नवाव अमानूला खां ने जोरावर सिंह जी पर वार किया तो श्री शार्दूल सिंह जी ने कहा बेटा खाना पुत्र पर क्या वार करता है। शार्दुलसिंहजी और उनके सबसे बड़ पूत्र श्री जोरावरसिंह जी एकसे ही सगते थे। फिर नवाव अमानूलाखां ने शार्दूलसिह जी पर तीन वार किये जो खाली गये नवाव सहाब ने कहा शार्दूला हमारा दिन ही बदल गया विधाता रूस गई जोर तो वो ही है। एक जटीया खड़ा था, नवाव ने उस पर तलवार का वार किया जटीया पड़ गया फिर अमानूलाखां ने खुद कसी करली, फौज भाग गई। कक्रू गांव में ६० साल पहले तक रोहनी बोलती थी। इस तरह श्री शार्दूल सिंह जी झुन्झुनु के नवाव के उतराधिकार राजा बने। दोनों बीबीया सम्मान पूर्वक महलों में रही, चौधरी झुझाराम मुसाहिब बना। यह कहना बिल्कुल गलत है कि सब नवावों को मार कर चौधरी झुझाराम को उनके ऊपर मार कर गिराया गया है। चौधरी झुझाराम अपनी मौत १०१ वरस के होकर मरे थे।

सतरह सौ सतासीयो अगहन मास उदार
सादो लीनी झुन्झुनू सुद आठे शनिवार।

नवाव की दोनों वेगमें वृद्ध हो गई थी चौधरी झुभाराम की जिन्दगी में मर गई थी, उनकी वाकायदा ब्रह्मपुरी हुई इस खवर से कि झुन्झूनू का राज नवावों के हाथ से निकल गया है और श्री शार्दूल सिंहजी राजा वन गये तो रावजी ने श्री फतेहपुर के नवाव पर हमला कर दिया श्री शार्दूलसिंहजी रावजी की मदद पर गये। फतेहपुर के नवाव के और वेगमों के अलावा एक तैलन वेगम थी वह वड़ी चतुर थी राज काज में भी दखल रखती थी। खजाना, सीले खाना, तोप खाना पर उसका ही अधिकार और हुक्म था। उसने नवाव को धोखे से मार दिया। दो सौ तीन सौ आदमी मरे, किले पर रावजी का कब्जा हो गया। नगर और गावों में रावजी की दुहाई फिर गई। इस तरह झुन्झूनू और फतेहपुर पर शेखावतों का झण्डा फहराने लगा।

समय वरावर कभी न रहता रही हमेशा से यह चाल
समय वदलते ही मानव की हवा पलटी है ततकाल।
मोसम वदलता है तो चाहें भी वदल जाती हैं,
मंजिल वदलती है तो राहें भी वदल जाती हैं।
वक्त वदलता है तो निगाहें भी वदल जाती है,
कोसमत वदलती है तो सितारे भी वदल जाती है।

पुराने जमाने में चौधरियों को वहुत अधिकार थे। वड़े वड़े वोड़, जोहड़े गोचर भूमि के लिये चौधरी ही छोड़ते थे। मंदिर और ब्राह्मण स्वामी, चारण, भाट, जोगी, जोतसी, गुसाई आदि को जाट चौधरी ही

जमीन देते थे। नया गांव और वास वसाते थे तो दूसरे गांव ब्राह्मण को लाकर वसाते थे। मंदिर बनवाके देते थे। काश्त के लिये जमीन देते थे सब लाग वाग व लगान मुआफ। पूजारी को गांव में से सीधा देते थे। राम की प्यारी चौधरन मूठा भर-भर कर आटा देती थी १५-२० सेर चन आता था। विवाह-शादी, लड़का पैदा होता था तो रुपया लाग का घर बांध रखा था। वयो वृद्ध के मरने पर भी रुपया दिया जाता था। गाय, भैंस के ब्याने पर जब पहली पोत विलोवण घालते तो एक कूलिया दही का सीधे के साथ दिया जाता था। ब्राह्मण की लड़की के विवाह में घरगेल १)रुपया दिया जाता था। गांव वाले खड़े होकर सब काम कराते थे। यदि कोई वृद्ध ब्राह्मण मर जाता था, नुकते में १)रुपया देते थे। उस जमाने में एक रुपया हाथी का खोज था। जिस-के पास १००) रुपया इकट्ठा हो जाता था वह गांव में भगवान कहलाता था। नये वास वसाये गये। जैसे दूलडों का वास, नानग का वास, पीपल का वास, सोभा का बास, भोजासर का वास, आवूसर का वास, ढेवाका वास, कव डेऊ का वास, वगेरह-वगेरह। चौधरी भी नामी गामी हुये हैं। जैसे भीवांराम जीवनराम चौधरी हमीरी, श्री खेतारामजी चौधरी आवूसर, श्री नानगराम मोहनराम चौधरी अजाड़ी, श्री रामनाथजी कटेवा वख्तावरपुरा, श्री रामसिंह चौधरी कवरपुरा, श्री गणेशाराम राणासर, चौधरी सीथल, श्री किसनाराम चौधरी तोगड़ा, गोरीर के चौधरी और श्री जालूराम देवरोड आपके हाथ में तो हमेशा माला ही रहती थी। झुन्झुनू में संवत् १९८० में जाट महासभा का अधिवेशन कराया गया। चौ० भैरुसिंहजी जयपुर न्यू होटल वाले सभा-पति थे। चौ० श्री हरिरामजी मथूरा, छत्रसिंहजी भरतपुर, भोलानाथ जी आदि अच्छे-अच्छ चौधरी और भजनिक पधारे थे। हाथी पर चढ़ा कर सभापति का जुलूस निकाला गया था, दस हजार जाट इकट्ठे हो

गये थे। सरदारान पंचपाना ने आपति उठाई कि झुन्झुनू के बाज़ार में जाट को हाथी पर चढ़ाकर जुलूस निकालना, सरदारान पंचपाना का अपमान है। हज़ारों ही पंचपाने के सरदारों के आदमी इकठ्ठे हो गये। नाजिम शेखावाटी पं. मनमोहन लालजी अटल के पास दोनों तरफ से शिकायतें पहुंचा, तो उन्होंने सात सौ सिपाही कूमेदानजी के तहत में और तीन सो नागा स्वामी श्री रामरुपजी भडारी और तोन सौ घुड़-सवार हथियार वंद और दो तोप खाना वाजार में से परेड तक जुलूस निकाला और राज की शक्ति का प्रदर्शन किया। श्री भींवाराम चौपदार नाजिम साहब की घोड़ी के आगे-आगे घोड़ी पर सवार था। न की वह वोल रहा था "शेरान शेर बहादूर सावधान निगह रखो"। जयपुर से भी जुलूस निकालने के पक्ष में ही इशारा था। सर चौधरी छोटूरामजी श्री महाराजा भरतपुर का सहयोग था। श्री चौधरी भैरुसिहजी को हाथी पर वैठाकर जुलूस निकाला गया। आर्यवीर सेठ देवीवक्सजी सराफ मंडावा आगे आगे घोड़ी पर चढ़कर हाथ में तलवार गले में पिस्तौल लगाये हुय शान से चल रहे थे। झुन्झुनू के बाजार में श्री द्वारकादासजी तुलस्यान, श्री केदारमल मोदी और श्री रंगलाल जी गाडिया व श्री सागरमल जी कयां का पूरा समर्थन था। जुलूस के साथ चले दस हजार जाट वीर और भुन्भुनू की जनता जय जयकार कर रहे थे। गरमा गरम भाषण हुये। नाज़िम साहब सदल वल मोडे पहाड़ के पास डेरा डाले रहे। सभा खतम होने पर सदल वल नजामत में चले गये। अपने साथियों को धन्यवाद दिया। खबरनवीस न पर्चा खबर जयपुर भेज दिया। इस जलसे के कर्ता-धर्ता श्री पन्नेसिंह जी देवरोड़, श्री रामसिंह जी कंवरपुरा और मा० रतनसिंह जी रोहतक थे, मेरे यह तीनों सज्जन मित्र थे। आर्यवीर सेठ देवीवक्स जी मंडावा गुरु थे।

आज तो चारों तरफ जाट वीरों का बोल-बाला है। हर क्षेत्र में अग्रसर है। शिक्षा; सर्विस, जवान, किसान, नेता और अभिनेता, हर पार्टी में अग्रसर हैं। मेरी इन सज्जनों से प्रार्थना है कि श्री चौधरी झुम्भाराम नहरे का झुन्झुनू में एक स्मारक बनावें और छत्री प्रतिमा और एक बाग लगावें। पांच बीघा जमीन जिसके चारों तरफ दीवार और पक्के बोझे लगे हुयें हैं। रुपये पैसे की भी कमी नहीं रहेगी। पांच वीर पांयचें टांगकर दृढ़ व्रत होकर आगे आये। झुन्झुनू बसाने वाले वीर को याद करें।

कौम की तारीख से जो बेखबर हो जायगा।
रफ़ता-रफता इन्सानियत खोकर खर हो जायगा॥

एक दफा बादशाह अकबर शिकार खेलने जंगल में गया था, हिरन के पीछे घोड़ा लगाया। अपने साथियों से बिछड़ गया। जंगल बहुत बडा था, दोपहर का समय हो गया, खुद और घोड़ा पसीने में तर-बतर हो गये। जंगल से निकला तो थोड़ी दूर पर एक जाट के खेत में पहुंच गया। जाट से कहा रामराम, तो चौधरी रामरमी का जवाब दिया। सिपाही समझकर घोड़े को जांटी के बांध दिया, हरा घास डाल दिया। जीन उतार दी, सिपाही को एक खाट दे दी चौधरन छाबड़ा भरकर (छाक) रोटी, छा, राबड़ी लाई थी। एक कचौला राबड़ी, छा का और दो रोटी सिपाही को देदी। दोनों रोटी, राबड़ी खा पीकर सो गया। ऐसी सुखिया नींद आई, श्याम हो गई। सिपाही ने कहा ऐसी नींद मेरे जन्म में पहले कभी नहीं आई, मेरे सर में बिमारी थी वह भी मीट गई। कई हकीम वैद्य इलाज कर चुके थे। जब सिपाही जाने लगा तो चौधरी को लिखकर दे दिया आगरे आओ तो

मेरे से जरूर मिलना। उस स्लेट पर लिखा था 'जो भी सख्स इन फरमान को पढे चौंधरी को मेरे पास पहूंचा दे' बिला ताखीर यह लिखकर नीचे अपने दस्तखत कर दिये। जलालूद्दीन मोहम्मद अकबर। अकबर तो उपनाम था, अकबर के माने है 'बड़ा'। चौंधरी ने कहा फसल तैयार हो जावेगी, दिवाली के बाद सर्दी पड़ने लगेगी तब गाबा चीलडा लेने को आगरा आवूंगा। फसल तैयार हुई, दिवाली आई, चौंधरी आगरे जाने लगा तो चौधरन ने वह स्लेट दे दी और कहा सिपाही से मिलकर आना तो चौंधरी ने कहा मैं कहां ढूढता फिरूंगा, पत्नी के कहने से स्लेट अपने साथ ले गया। हाथ में जेलो खवे पर दोड़। जाट का यह स्वभाव होता है कि कितना ही कोमल कपडा हो उसको नीचे रखकर बैठता है। चौंधरी आगरे पहुंचा तो शहर का कोतवाल घोड़े पर चढा पचास घोड़े उसके पीछे। जनता की शिकायत सुनता था, उसी वक्त फैसला सुना देता था। शहर कोतवाल को सूली देने का अधिकार था। दोनों तरफ रिआया खड़ी हो जाती थी, अदब से सलाम करती थी। चौंधरो ने शहर कोतवाल के घोड़े को लगाम पकड़ कर कहा राम राम सा, सलेट दिखाकर कहा यह सिपाइड़ा भी इनमें है या? शहर कोतवाल फौरन घोड़े से उतरा और चौंधरी से कहा घोड़े पर चढ जाओ उन सिपाही जी के पास ले चलूंगा। चौंधरी ने घोड़े पर चढने से इन्कार कर दिया, कभी चढा हुआ नहीं था। आगरे के किले में ले गया, किलेदार को सलेट देकर बैठ गया। इस तरह से सात पहरे थे। सातवां पहरा महल का था। बादशाह नमाज पढ रहा था। चौंधरी पीछे की तरफ जेलो ठोडी से लगाकर चुपचाप खामोशी से खड़ा देखता रहा, यह क्या करता है, कभी उठता है, कभी बैठता है। चौंधरी ने पहले किसी को नमाज़ पढते नहीं देखा था। जब नमाज खत्म हुई बादशाह ने दोनों हाथों की हथेलियों से दुआ मांगने लगा तो चौंधरी ने

ऊंचा होकर ध्यान से देखा कि यह किससे, क्या मांगता है। नमाज पढकर वादशाह उठा, चौधरी के बांथ घाल कर लिपट गया। वेगमें, साहवजादी और मुल्ला दूपयाजा यह देखकर हैरान हो गये। महल में ज़नानखाने में जेली लेकर आ गया और वादशाह प्यार मोहव्वत से मिल रहा है। आज तक किसी से नहीं मिला। दूध का गिलास, मेवा, मिठाई के थाल आ गये। चौधरी से कहा पीवो खाओ। चौधरी अपनी खवे वाली दोड फर्श पर रखकर उस पर वैठ गया और वादशाह से कहा पहले मेरी वात का जवाव दे दो। वादशाह ने कहा फरमाइये। चौधरी ने कहा 'आप ऊंचा नीचा होकर कभी उठ रहे थे कभी वैठ रहे थे और वाद में दोनों हाथ जोड़कर धोवा करके किससे, क्या मांग रहे थे'? वादशाह ने कहा 'यह खुदा की ईवादत है, पूजा है। हाथ जोड़कर खुदा से मांग रहा था तू रवउलआलमीन है।' चौधरी खड़ा होकर अपनी दोड को खवे पर डालकर जाने लगा तो वादशाह आगे खड़ा हो गया, तो चौधरी ने कहा जिस खुदा से तू मांग रहा था, उसी खुदा से मैं भी मांगूगा। झूठण नहीं लेता। यह कहकर चौधरी ने कहा—

डमडमी में डमडमी और डमडमी में डम।
मगते के पास मगता मांगे उसकी अकल गम॥

मांगन मरण समान है मत कोई मांगो भीख।
मांगण से मरना भला यह सतगुरु की सीख॥

तूलसी कर पर कर करो करतर करे न करो।
जां दिन करतर कर करो वां दिन मरण करो॥

दस्ते सवाल सैकडो ऐबों का ऐब है।
जिस दस्त में यह एब नहीं वह दस्त गैव हैं॥

उसी से मांग जो कछ मांगना हैं ए अकबर।
यही वह दर हैं कि जील्लत नहीं सवाल के वाद।

जाट भाई अपनी जैली दोड लेकर चला आया वादशाह आवाज देता ही रह गया।

कर्मवीर जौहरी पं० माँगीलाल जी व्यास सीकर

पुरुष सिंह कब चाहते औरों का आधार ।
अपने ही उद्योग से करते बेडा पार ।।

श्री मांगीलाल जी जौहरी व्यास का जन्म लक्ष्मणगढ (सीकर) में हुआ था, आप सीकर में श्री लादूराम जी व्यास के गोद आ गये। साधारण परिवार के युवक थे मगर थे प्रतिभाशाली और विद्वान अपने पैरों पर खड़े होकर कुछ हाथ का काम जेवर आदि का अपने साथी सुनार के सहयोग से काम में परिपक्व हो गये। जयपुर चले गये। जवाहरात का काम करने लग गये। आप ब्राह्मणों में पहले जौहरी थे। आपका जौहरी बाजार में ईमानदारी समय पर काम करने से बाजार में साख जम गई, बड़े बड़े ठिकानेदारों और राजा महाराजाओं के विवाह शादो का काम आने लग गया जयपुर रियासत का ही नही अजमेर मारवाड़ के सरदारों का काम आने लगा। एक बार आप की दुकान पर ग्राहक आने पर दूसरी जगह जाता ही नहीं था आप मधुर भाषी व्यवहार कुशल जौहरी थे। बड़े बड़े राज घरानों में जनानी ड्योडियो में भी प्रवेश हो गया सीकर राजकुमार श्री देवीसिंह जी की नेपाल नरेश की शादी में लाखो रूपये का जेवर भी आपकी मारफत बना था। शादो में नेपाल गये जो आपके धार्मिक गुरु थे। नेपाल नरेश से भी आपकी दोस्ती हो गई थी आप समाज सुधारक सनातन धर्मी और आर्य समाजो भी थे। जिस समाज में अच्छी अच्छी बाते थी वोह ग्रहण कर लेते थे। गंगा गये गंगादास जमुना गये जमनादास, बाल विवाह के

कट्टर विरोधी शिक्षा का प्रचार ब्राह्मणों के बालकों को पढाने पर जोर दिया आपने सीकर में राजस्थान ब्राह्मणों का सातवां अधिवेशन भी कराया था। बाहर के वड़े वड़े विद्वानों को वुलाया था, आप इस सम्मेलन के मंत्री थे। तीन महिने पहिले ही अपना सब कारोवार छोड़कर सम्मेलन की सफलता में लग गये। श्री पं० सूर्यनारायण जी शर्मा आचार्य जयपुर महाराजा कॉलेज के प्रोफेसर को सभापति बनाया गया था। पं० वुलाकी राम जो महाराजा भरतपुर के राजनीति गुरू थे पं० वालचन्द जी शास्त्री वावा हरिश्चन्द्र जी एडवोकेट जयपुर के पिता नेता व पं० मोतीलालजी उतर भारत के वैदों के पंडित कविता के पिता को वूलाया गया था। पं० गंगाधरजी शर्मा आदि वड़े विद्वानों को वुलाया गया। अच्छा अधिवेशन हुआ। राव राजा श्री कल्याणसिंह जी जो इश्वर भक्त थे। खुद पधारे, एक हजार रुपया दिया, अपना सरकारी लवाजमा हवन में पधारे। अच्छे-अच्छे भाषण हुयें लोगों पर अच्छा असर हुआ। वाल विवाह कूप्रथा रूकी। श्री मांगीलाल जी के वडे पुत्र श्री नरसीलाल जी व्यास जोहरी ने स्वयं सेवकों के नेता वनकर व्यवस्था की, आने जाने वालों का आदर सत्कार, भोजन आदि का प्रवन्ध करते। सम्वत् १९८३ कार्तिक शुदी की बात है पं० श्री मांगीलाल जी जोहरी ने अपनी पोती का विवाह महामना पं० मदनमोहन जी मालवीया जी के पौते श्र गिरधरजी मालवीया से किया। मारवाड़ी ब्राह्मणों अन्तर प्रान्तीय में विवाह किया। ब्राह्मणों और दकियानुसी लोगों की परवाह नहीं की। पं० गोविन्द मालवीया भूतपूर्व एम. पी. के पुत्र से श्री मांगीलाल जी जोहरी के दूसरे पुत्र श्री वालकिशन जी व्यास की पुत्री श्रीमति कान्ता एम. ए., से विवाह किया। श्री वालकिशन जी जोहरी परम विद्वान सुलझे हुए सज्जन हैं। श्री मांगीलाल जी जोहरी को मकानात वनाने का वहुत शौक था। आपने सीकर और जयपुर में

लाखों रुपये की इमारत वनवाई। सीकर में ग्रापकी वगीची के पास पानी की वहुत कमी थी, कुवा वनाकर चौवीस घंटे ग्रादमियों और जानवरों के पानी पीने का खेल और प्याउ वनाई। वगीची में शिवालय वनाया, उसी शिवालय के पास एक कच्चा चवूतरा वना दिया और वसीयत करदी कि मैं कहीं भी मरू' मेरा दाह संस्कार सीकर में मेरे वगीचे शिवालय में, जहां मैंने कच्चा चवूतरा वनाया है, वहीं होना चाहिये। ग्रापके स्वर्गवास के दो महिने पहले तक ग्राप मजदूरों के पास खड़े रहकर चेजा का काम करवाते थे। मेरे को भी सीकर की वगीची, शिवालय और वह जगह भी दिखलाई कि यहां मेरा अन्तिम संस्कार होगा। आप कूटम्वपाल थे ग्रौर प्यारे प्रसंगियों के दुःख सुख में काम ग्राते थे। ग्राप शिव भक्त थे। कई वार तो दो-दो दिन तक उपवास कर जाते थे। शिवजी की पुजा करके ही प्रसाद पाते थे। थोड़े वर्ष पहले उनका सौ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ था। जयपुर में मामूली वुखार हुआ। व्रह्म मूहरत में आप स्वर्ग सिधार गये। उनके सुपुत्रों ने सीकर ले जाकर उनकी वसीयत के मुताविक वाजे गाजे से दाह संस्कार किया। हजारों हिन्दू मूसलमान उनके चलावे में थे। नगर में वे वयो वृद्ध ग्रौर प्रतिष्ठित महापुरुष थे ग्रौर संसारिक कार्य भी उनके रुप के अनुकूल ही हुये। ग्रापके तीन पुत्र, कई पोते, पड़ोते, सड़ोते, दुहते, भानजे. वेटी, पोती, पड़ोतियां, जवांई, गर्जे के भरापूरा परिवार है। सैंकड़ों आदमी उनके वंश में हैं। मेरे को तो ऐसा दूसरा परिवार नजर नहीं ग्राया है। आपके वड़े सुपुत्र पं० नरसिंह लाल जी जौहरी व्यास ग्रापके पद चिन्हों पर चल रहे हैं। आप गो भक्त भी हैं। २ घंटे रोजाना गायों की सेवा करते है और अपने पिताजी की आन वान चाल-ढाल को निभाते हैं। वोही कुटुम्वपाल अपने रिस्तेदारों से सम्मानपूर्वक व्यव-

हार निभाते हैं। आपके दोनों छोटे भाई विद्वान श्री बालकिशन जी जौहरी व्यास और श्री शिवदत्तराय जी जौहरी व्यास आपके आज्ञाकारी हैं। सर्व शक्तिमान परमात्मा इस वंश की कीर्ति बनाई रखे।

उमा कहुं मैं अनुभव अपना।
सत्य हरि भजन जगत सब सपना॥

सारे जगत के जौहरी मिलकर इकट्ठे हो कहीं।
बिन ज्ञान रत्नों के मगर उनकी प्रतिष्ठा है नहीं॥
अबलागणों का भी हमें करना परम सत्कार है।
जिनके बिन शुभ कर्म का हमको नहीं अधिकार है॥
वेदादिका पढना हमारा मुख्य यद्यपि धर्म है।
पर सामयिक शिक्षा बिना इस काल में नहीं शर्म है॥
संस्कृत हमको सदा धर्मार्थ पढना चाहिये।
लाभार्थ इंगलिश में भी हमको खूब पढना चाहिये॥
इंगलिश बिन उच्च पद मिलना असम्भव जानें।
विज्ञान का भी बोध इसके बिन न सम्भव मानें॥
इतिहास गणितादिक तथा इसके बिना नहीं पूर्ण है।
वृतान्त इससे लोक के सब जानते अति तूर्ण है॥
श्रुति शास्त्र रक्षा पर हमारा वर्षों का अधिकार है।
छोड़ दें उसको तो हमको सर्वथा धिक्कार है॥
परमान्यता के हेतु हमको और भी कुछ कार्य है।
करना द्विगुण उद्योग विप्रो सर्वथा अनिवार्य है॥
उद्योग दूवा देहके सामर्थ विन होता नहीं।
ब्रह्मचर्यादिक बिना सामर्थ्य क्या होता नहीं॥

इस वाल्य परियापने हमारा देश दुर्वल कर दिया।
वल वीर्य मेघादिक हरे सर्वस्व सारा हर लिया ॥

क्षेत्र संस्कृत है नहीं हां वीज भी कच्चा निरा।
घोर संकट में हमारा हाय जीवन आधिरा ॥

किस भांति फिर सन्तान फल कहिये जरा उत्तम वने।
सोलह वर्ष के माता पिता सन्तान अच्छी क्या जने ॥

वाल विधवा घोर क्रन्दन कर हमें अकुला रही।
इस देश के दुखों की जग में एक भी न तुला रही ॥

सर्वनाशक वाल्य परिणय कुप्रथा को छोड़ दो।
मोह के दुर्वन्ध को उत्साह करके तोड़ दो ॥

पापघट पाषाण तटपर चट पटक के फोड़ दो।
व्रह्मचर्यादिक प्रथा की और मन को मोड़ दो ॥

कोकिलों का संघ यदि सहकार तरु पर मिले।
पंचम अलापे विन कहो मानव हृदय कैसे खिले ॥

भंग पीने की प्रथा भी हानि भारी कर रही।
सिग्रेट से भी हाय जीवन शक्ति प्रतिदिन मर रही ॥

हुक्का तमाखु भी हमें अत्यन्त लज्जित कर रहा।
दुष्ट व्यसनों से न खाली एक भी अव घर रहा ॥

छोड़कर इनको हमें वलवान होना चाहिये।
जगने का आया काल अव हमको न सोना चाहिये ॥

अधिकार जो चिरसिद्ध है उसको न खोना चाहिये।
फलवान जिससे वृक्ष हो वह वीज वोना चाहिये ॥

ज्ञान सम्वन्धी हमें उद्योग लेना चाहिये।
ग्रन्थ रचना की तरफ अव ध्यान देना चाहिये ॥

पत्र सम्पादन कला भी व्राह्मणों के योग्य है।
विज्ञ पुरुषों के लिये सव लोक ही उपभोग्य है ॥

कानून पढकर भी हमें अधिकार पाना चाहिये ।
मातृभाषा में हमें सब ज्ञान लाना चाहिये ।।
लौक शिक्षण तो हमारा जाति का अधिकार है।
इस हेतु ही तो शास्त्र में द्विजका कहा अवतार है ।।
करना चिकित्सा भी हमारी लाभदायक वृति है ।
डाक्टरी का ज्ञान भी उत्कर्ष की दृढ मिति है ।।
वास्तु विद्या में हमारे ग्रन्थ अति सुख बोध है।
इंजीनियरी नाम से उनके हुए अब शोध है ।।
रखते हुए निज धर्म को सीखो कला भी वालको ।
वृध वनिता व्याधितों के सर्वदा परिपालको ।।
जिमनवार आदिक में मत खर्च करना माल को।
वुद्धि से पहचानना प्रियवर जगत की चाल को ।।
अवलाजनों की भी हमें शिक्षार्थ देना ध्यान है ।
शिक्षा विना संसार में करता न कोई मान है ।।
कुल अङ्गनावों को नहीं अश्लील गाना चाहिये ।
रास्तों में वैठकर खाना न खाना चाहिये ।।
वाल पालन की कला इनको परम उपयुक्त है ।
स्वास्थ्य रक्षा शास्त्र भी इससे सदा संयुक्त है ।।
धन्य हैं वे नारिया जो सर्वदा पतिभक्त हैं ।
मातृभाषा पठन में जिनके हृदय अनुरक्त हैं ।।
गोटा किनारी आदि की सीखो कला भी प्रेम से ।
जिससे धनार्जन कर सको जीवित रहो सुख चैन से ।।
घर की व्यवस्था तो सभी गृह देवियों के हाथ है ।
है धर्म निष्ठा गृहनी तो धर्मयान गृहनाथ है ।।

धेनु पालन भी हमारे धर्म का सर्वस्व है ।
धर्म धन भी धेनु सेवक है न तो वह निःस्व है ॥
धेनु के सब गात्र ही भरपूर हैं सुरवग से ।
धेनु सेवा से सुलभ पुरुपार्थ सब अपवर्ग से ॥
धेनु सा उपयुक्त कोई भी न जग में जीव है ।
धेनु का गुण जो नहीं जाने वही निर्जीव है ॥
गो मुत्र गोमय दुग्ध दधि घृत आदि भेषज सिद्ध है ।
गो दुग्ध पायो स्वस्थ दृढ बलवान वीर समृद्ध है ॥
अस्पृश्य सेवक भी हमारे सर्वदा प्रतिपाल्य हैं ।
हित स्वास्थ्य का उपदेश दे करना दया अविचाल्य है ॥
भर पेट भोजन मिल सके गृह वस्त्र का भी ढंग हो ।
श्रीराम के शुभ नाम का कीर्तन तथा सत्संग हो ॥
विश्व तर्पण यज्ञ में सब आस करके आ रहे ।
जगदीश के भण्डार से सब ही सभी कुछ पा रहे ॥
बाधा उपस्थित कर कभी नहीं पाप लेना चाहिए ।
बन जायतो निज हाथ से कुछ दान देना चाहिए ॥
है कला युग ज्ञान में सब ही कला के लग रहे ।
शास्त्र पढने से स्वयं हो दूर व सब भग रहे ॥
गौरव कलानिधि भी स्वयं पाता कला के साथ है ।
क्षीण होती जब कला पुजता न रजनी नाथ है ॥
भगवान इस द्विज जातिका गौरव रखेगें सर्वदा ॥
जब तक जगत में वह रही गंगोत्र यमुना नर्मदा ॥
चारित्र शिक्षण में सदा यह जाति अग्रसर रहें ।
संकल्प इसके भद्र हों यह भारती भी शुभ कहें ॥

मुकद्दर के सिकन्दर पंडित श्री तोताराम वकील, जयपुर

जहां में जिनकी उम्मीदों के वेड़े पार होते है।
वोह खुश इन्सान दुनियां में फकत दो चार होते है।

पं० तोताराम जी वकील खुश किस्मत थे। आप हाजिर जवाव ला जवाव, खुश मिजाज खुश अखलाक खुश पोशाक और खुश नसीव और खुश खत थे। आपकी सुझ वूझ अनोखी थी, जो पासा फेंका पोह-वारा पचीस हो आये तीन काना तो पडे ही नहीं, आप को मुवकिल भी वड़े वडे मालदार जागिरदार ठिकानेदार मिले। आप फरमाया करते थे वोह ही वकील खुश किस्मत है, जिसको हिये का अन्धा और गांठ का पुरा मुवकिल मिले और हर साल नये नये मुकदमा लावे। ठा. वागसिंह जी नवलगढ पिलानी के ठाकर थे। विड़लावो से जमीन के मन मांगे रुपया लेकर पट्टा करते थे। जव तामीर शुरू होती जव चेजा रोक देते थे। और हैरान व परेशान करते थे। आखिर में टकराव हो गया, मुक-दमे वाजी शुरू हो गई, जयपुर में पं० रामचन्द्र जी विड़ला जी के मुनिम थे। पं० तोताराम जी को वकील किया गया, सव मुकदमों में विड़ला जी जीतते चले गये, आखिर में ठिकाने वागसिंह जी पर मुन्शरमी कायम हो गई, इसका श्रेय पं० तोताराम जी वकील को मिला, विड़ला परिवार का रिकार्ड है, किसी भी मुकदमे में हाजिर नहीं हुवे। न वकील के मकान पर, मुनीम गुमास्तो और वकीलों को अख्तीयार था जो चाहे सौं रुपया खर्च करों। पं० तोताराम जी की शेखावाटी के सेठाणों में और ठिकाने दारों में प्रसिद्धी हो गई, मुकदमे वाला दौड कर पंडित

जी के पास आता था और उनको रोक लेता था, मुवकिल को विश्वास हो जाता था कि अव तो मुकदमा जीतेगें ही। दूसरा मुकदमा आया ठिकाने ईसरदा का राजकंवर मोरमुकट सिंह जी को महाराजा कंवर श्री मानसिंह जी को वनाया, आपकी गोद नशीनी पर ठिकाना झीलाय आदि ने उज्रदारी की थी दो तीन राजा महाराज इनकी मदद पर थे। उस मुकदमे में पं० तोताराम जी ठिकाने ईसरदा के वकील थे, श्री खवास वालावक्स जी और श्री पिरोहित गोपीनाथ जी ने महाराजा सहाव श्री माधोसिंह जी ने गोद लेने की लिखा पढी की थी वोह मसोदा भी पं० तोताराम जी की सलाह से ही वनाया गया था, जो वाईसराय को पेशी तक मंजूर हुवा, झीलाय आदि ठिकानों की उज्रदारी खारिज हुई। राजकंवर मोरमुकट सिंह जी से, महाराज कंवर श्री मानसिंह जी जयपुर वन गये। महाराजा श्री माधोसिंह जी भी ठिकाना ईसरदा से ही गोद आये थे। वोह पं० तोताराम जी से वहुत खुश थे। पं० तोताराम जी ने उन दिनों खाना पीना सोना आराम करना वंद कर दिया था रात दिन मुकदमे की पैरवी में लगे रहें। उसी का यह फल है स्टेशन रोड़ पर श्री माधो विहारी जी का मंदिर मांजी साहव श्री तंवरजी ने पं० तोताराम जी को दे दिया जो करोड़ों रुपयों की सम्पति है हजारों रुपये महिने के किराये के आते है। मांजी सहाव श्रीमति तवंरजी ने मंदिर में रहने के लिये महल मालिये वनाये थे वोह भी सव पं. तोताराम जी को दे दिये। पंडित श्री तोताराम जी ईश्वर भक्त भी थे। एक संत का उनको आशीर्वाद भी था, वोह छोटे मोटे मुकदमे नहीं लेते वे शेर की शिकार ही, करते थे।

एक मुकदमे में पं० तोताराम जी वकील चितोडा ठाकर साहव की अदालत में वहस कर रहे थे। वहस सुनने के वाद ठाकर साहव ने

फरमाया कि आज तो आपने माकूल वहस नहीं की, तो पं० तोतराम जी वकील ने कहा, हम हाकिम देखकर वहस करते है। ठाकर साहव मुस्करा के चुप रह गये।

एक झुन्झुनू के सेठो का ही मुकदमा था, ठा० प्रतापसिंह जी नाईला की पेशी में जो अपील के हाकिम थे। पं० तोताराम जी वकील ने अपने मुवकिल को पहले ही समझा दिया था, कि में वहस करु तव वार वार मेरी अंगरखी को खेंचते रहना, आवाज पड़ी, पं० तोताराम जी वहस करने लग गये, उनके मुवकिल ने अंगरखी खेंचना शुरु कर दिया तो ठाकर साहव ने कहा अंगरखी क्यों खेंचते हो। तो पंडित जी ने कहा यह कहता है क्यू लम्बी चोडी वहस करते हो। हाकिम साहव को तो अपील मंजूर करने का अधिकार ही नहीं है। तो ठाकर साहव ने रजिस्टर पैसी में जायजा दे दिया कि अपील मंजूर तजवीज मातहत मंसूख, रिस्पाडेन्ट के वकील मिर्जा झटपट वैग और मुन्शी लादुराम जी जैन थे हाकिम साहव के मुंह की तरफ देखते रह गये।

एक दिन पिरोहित मुन्शी मदनलाल जी वकील वाहर रूम में वैठे थे पं० तोताराम जी वकील और मीर अहशानुलहक जी वकील भी पास में थे। शेखावाटी का मुवकिल था, पिरोहित जी ने सौं रुपये मह-नताने के मांगे थे। मुकदमे वाले ने पिचेहत्तर रुपये चांदी के श्री मदन लालजी पिरोहित वकील के सामने रख दिये, पिरोहित जी ने फरमाया ऐसे चुतिया शिकार पुर में बसते है, तो पं० तोताराम जी वकील ने कहा इसने तो चौमू के लिये सुन रखा है। मीर अहशानुलहक जी वकील हंसते हंसते लोट पोट हो गये। पिचेहतर रुपये जेव में डाल लिये। पं० शीतला प्रसाद जी वाजपेई के सामने पं० तोताराम जी वहस कर रहे थे। दोसा का मुकद्दमा था, वूढा पंडित उनका मुवकिल अपीलांट

था। वाजपेई साहव वहस सुनते वक्त वकीलों को मुवक्किल को और निचे की अदालत को डांट डपट लगाते थे। ऐसे वैसे वकील तो उनके सामने टिकते नहीं थे। वीच वीच में सवाल पूछते रहते थे। वाजपेई साहव खुद तैयार होकर माहौल देखकर आते थे। लिखित वहस सुनना पसन्द नहीं करते थे। वाजपेई साहव गर्म हो रहे थे। वूढा पंडित श्री तोताराम जी वकील से कह रहा था। मौका दिखलाया जावे। वाजपेई साहव पं० तोताराम जी वकील से कहने लगे वूढा क्या वकता है। तो वकील जी ने कहा कि वुढा कहता है कि घरवालो ने गल्ती की इनका नाम सीतलाप्रसाद जी रख दिया इनका नाम तो ज्वालाप्रसाद जी रखना चाहिये था। मुकदमा दुसरे दिन पर रख दिया, दुसरे दिन पंडित जी की अपील मंजूर करली। पं० तोताराम जी वकील कितने भाग्यशाली थे उनके पुत्र परम विद्वान हैं श्री महेशचन्द्र जी वारएटला है। जो मंदिर के महन्त है भक्त और विचारक है। ऐसे काविल मंदिरो के महन्त हो जावे तो भारत के वडे वडे मंदिरों की हालात वदल जावे। आपके दुसरे पुत्र श्री रमेशचन्द्र जी शर्मा थे जो अच्छे उच्चकोटी के वकील थे। अपने पिताजी के से गुण रखते थे हमारे साथ दो साल झुंझुनू में वकालत की, वामजाक योग्य सज्जन थे वावू चन्द्रभान जी भार्गव श्री प्रेमनाथजी दत्त श्री श्रीमीनचंद्र जी वकील उनके साथी थे। श्र पं० शिवकिशोर जी तिवाड़ी जज थे जो परम सुधारक थे झुंझुनू स्कूल कन्या पाटशाला, अछुत पाटशाला व ई और भी सुधार के काम किये थे। तिवाड़ी उस जमाने में भी सव काम हिन्दी में करते थे। पं० तोताराम जी वकील के तीसरे पुत्र श्री हरिप्रसाद जी और उनके पुत्र नामी एडवोकेट है। पं० तोताराम जी के पोते स्वामी दिनेशचंद्र जो कई वर्षों से राज्य सभा के मेम्वर है श्रीमति इन्दिरा गांधी के मरजी दानो में है आपका भविष्य वहुत सुन्दर और उज्जवल है।

यह प्रतिष्ठा की अनोखी धाक है।
यह नहीं तो जिन्दगी बेबाक हैं।
कोई पिछे से न इसको टालले।
इसलिये आखों के निचे नाक हैं।



जयपुर के रत्न-

श्री रामकिशोर जी व्यास

श्री रामकिशोरजी व्यास सकल गुण निधान थे। आप पुराने एड्वोकेट, संस्कृत के पंडित, फारसी, उर्दू के तो आप उस्ताद थे। वज़मे अदव जयपुर के कई सालों तक सदर रहे थे। राजस्थान के मशहूर सायर श्री चांदबिहारीलालजी (सवा) साहव तो व्यासजी को अपना उतराधिकारी मानते थे। जिस महफिल में नामी गायिकायें नृत्य करके गाती थो उस महफिल में अगर व्यासजी होते तो संभलकर चौंकन्ना होकर गाती थी क्योंकि वह घुंघरों की गत और तालसुर के माहिर थे। जयपुर का मशहूर और मारुफ कव्वाल श्री सादिक अली तो व्यास जी के दोनों चरणों को छूकर सलाम करते थे। जिस नजलिश में श्री व्यासजी विराजमान होते थे उसमें आला दर्जे की कव्वाली मस्त होकर गाता था और कहते थे कव्वाली गाकर तवीयत खुश हो गई।

यही हालत नकालों की थी, व्यासजी को देख कर अपनी बोल-चाल हंसी मजाक के फंवारे छूट जाते थे। दाद देने पर गाल बजाकर झुक-झुक कर सलाम करते थे। श्री व्यासजी खूश मिजाज और खुश अखलाक सज्जन थे। आप परम देश भक्त और स्वतंत्रता सेनानी भी थे। जब राजस्थान कांग्रेस की हकूमत बनी तो आप मंत्री और राजस्थान को विधान सभा के अध्यक्ष भी बने। ग्राप खूबसूरत ग्रौर हंसमुख थे। असेम्बली में चमकते थे। भारत में कुछ महिनों के लिये जनता पार्टी नामक हकूमत आगई थी। नाम तो जनता को लुभाने के खातिर (जनता पार्टी) रखा मगर थी जनता से कोसों दूर।

किसी अन्धे का नाम नयन सुखदास,
किसी टूंटे का नाम चतुर्भुज,
किसी महामुर्ख का नाम विद्यासागर,
किसी लड़ोकड़े का नाम सुखदेवदास।

सबसे पहले तो जनता पार्टी ने सोने का भंडार बांट खाया। माल मुफ्त दिले बेरहम फिर स्याह कमीशन, सफद कमीशन बिटलाय। मसखरों को किराये पर रखे गये कांग्रेस की खिल्लियां उड़ाई गई प्रेस और करोड़ों आदमियों का टाईम बर्बाद किया, करोड़ों रुपये बर्बाद हुये दुनियां में भारत को निचे दिखाने, नजरों से गिराने के काम किये गये। पूंजीपति, अमीरी के दलाल बन गये। चिकमंगलूर में पालियामेंट का चुनाव कराया, जनता पार्टी ने ऐडी से लेकर चोटी तक जोर लगाया। श्रीमति इन्दिरा गांधी ७८ हजार वोटों से जीत गई। पालियामेंट में उनका चुनाव रद्द घोषित करके उनको जैल भेज दिया। दुनियां भर के विधानों में ऐसी कोई व्यवस्था नही है चुनाव जितने वाले को जैल कर चुनाव रद्द कर दें, मगर इन छैलों की तो अदा ही निराली थी।

इन्दिराजी की गिरफ्तारी से लाखों आदमी जैलों में चले गये और राजस्थान में वीर योद्धा श्री रामकिशोर जी व्यास ने कांग्रेस (ई) का झंडा उठाया, बहादुरी से आगे बढे। जिला झुन्झुनू से ही एक हजार देश भक्तों ने गिरफ्तारी दी थी। मैं भी श्री शीशरामजी ओला के साथ जैल गया था। जनता सरकार घबरा गई। झखमारकर श्रीमति इन्दिराजी को जैल से रिहा किया गया। दो-दो उपप्रधान मंत्री बनाये गये। मुख्य झगड़ा था सोने के बंटवारे का जो फर्जी नामों से बेचा गया था। डाकू डाका डालते वक्त तो एक हो जाते हैं मगर डाके के धन का जब बंटवारा होता है तो आपस में बूरे ढंग से लड़ते हैं। यही हालत इस जनता पार्टी की हुई। सताईस महिने में देश को तहस नहस करके पंद्रह साल पीछे धकेल कर भाग गई।

पाप की टहनी कहीं फलती नहीं,
नाव कागज की कहीं चलती नहीं,
फैसला होता है नेकी और बदी का हरदम,
दिल को इस सीने में छोटी सी अदालत समझो।

१९८० के चुनाव में श्रीमति इन्दिरा कांग्रेस को प्रबल बहुमत मिला, देश की जनता ने कांग्रेस को जीता दिया मगर २७ महिने जो देश की अर्थ व्यवस्था बिगाड़दी थी योग्य अधिकारियों को हटाया गया था। सिफारसियों को ऊंचे पदो पर बैठा दिया था इससे ही यह कानून और हुकम की अवहेलना हुई। श्री रामकिशोरजी व्यास को मणिपुर का उपर ज्यपाल बनाकर भेज दिया था। आसाम की गुत्थी उलझ रही है। श्रीमति इन्दिरा गांधी ने अपने विश्वास-पात्र श्री रामकिशोरजी व्यास को आसाम का राज्यपाल मुकर्रर किया था मगर विधि का

विधान तो विधाता ही जाने देश भक्त श्री रामकिशोर जी का अचानक स्वर्गवास हो गया। देश का परम योग्य सेवक चला गया। इन्दिराजी को भी वहुत दुःख हुआ, सर्व शक्तिमान परमात्मा ने उनको दुख-सुख सहन करने की शक्ति दी है। वह हमेशा गीता रुपी ज्ञान गंगा में स्नान करती है। व्यासजी ने अन्त समय संसार से रुखसत होते हुये यह श्लोक पढा था (गीता ८-१३)—

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्माम, नुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहम् सः याति, परमाम, गतिम् ।।

श्री रामकिशोर जी व्यास मेरे पच्चास साल से स्नेही थे। झुन्झुनू रेल्वे स्टेशन से पच्चीस मील उंटगाडी में सफर किया था। ग्यांगास वारात में पधारे थे। दूसरी उंटगाडी में पं० दुर्गासहायजी ईमानदार जज विराजमान थे। जज साहव का नियम था कि ब्रह्म मुहुर्त में उठकर संध्या वन्दन करके इक्कीस माला गायत्री का जप करते थे और फिर श्री गोविन्ददेव जी के दर्शन करके, संसारी कामों में प्रवेश करते थे। मैं इन दोनों उंट गाडियों की चौकीदारी करता हुआ उंट पर सवार था। यह वारात जौहरी पं० श्री मांगीलालजी व्यास सीकर वालों के सुपुत्र श्री शिवदत्तरायजी जौहरी की थी। आज से पांच साल पहले व्यासजी अपने पोते श्री दिनेशकुमार की शादी में झुन्झनू पधारे थे भाई श्यामसुन्दर पिरोहित की सुपुत्री सत्यवती के विवाह में मेरे को तो श्री व्यासजी की सेवा में ही रहकर शैर शायरी सुनने का काम सौंपा गया था। स्थानाभाव से व्यासजी के साथ जयपुर को गोठ घूघरो और महफिलों की वातें लिखने से मजबूर हूं।

दुनियां अजब बाजार है कुछ जिन्स यांकि साथ ले।
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले।।
मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले।
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफत ले।।
अपने नफे के वास्ते मत और का नुकशान कर।
तेरा भी नुकशान होवेगा इस बात उपर ध्यान धर।।
खाना जो खा देखकर पानी पिये तो छान कर।
यां पाव को रख फूंककर और खौफ से गुजरान कर।।
कल जूग नही कर जुग है यह या दिन की है और रात ले।
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले।।
जो चाहे ले चल इस घड़ी सब जिन्स या तैयार है।
आराम में आराम है आजार में आजार है।।
दुनियां न जान इसको मियां, दरिया की यह मंझधार है।
औरों का बेडा पार कर तेरा भी बेडा पार है।।
कर चुक जो कुछ करना है अब यह दम तो कोई आन है।
नुकशान में नुकशान है अहसान में अहसान है।।
तूहमत में यहां तूहमत लगे तूफान में तूफान है।
रहमान को रहमान है शैतान को शैतान है।।
तूं और की तारीफ कर तुझ को शना खवानी मिले।
कर मुश्किल आसां ओर की तुझको भी आसानी मिले
तूं ओर को मेहमान कर तूझ को भी मेहमानी मिले।
रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले।।
यां जहर दे तो जहर ले शक्कर में शक्कर देख ले।
नेकों की नेकी का मजा मूजी की टक्कर देख ले।।
मोती दिये मोती मिले पत्थर में पत्थर देखले।
अगर तुझको यह बावर नही तो तूं भी करके देखले।

झुन्झुनू का तीर्थ स्थान-

जीत का जोहड़ा

झुन्झुनू के उत्तर की तरफ मोडा पहाड़ हैं, यह सिद्ध पीठ स्थान है इस पहाड़ में बडी बडी गुफाये है संत महात्मा रहते थे, पहाड़ के दक्षिण पुर्वी कौने पर एक महात्मा का बगीचा था, इसमें नींबू संतरा अनार बहुत होते थे। जो स्वामीजी के बाग के नाम से मशहूर था, पहाड़ से उत्तर की भूमि में हजारों पेड थे। गऊवे और जंगली जानवरों का घर था, पानी की कमी थी, तो सेठ जीतमलजी सराफ झुन्झुनू ने आज से सौं साल पहले एक सुन्दर मजबूत तालाब बना दिया जो दार्शनिक है। पायतन और गऊ के चरने को सौं बीघा जमीन पट्टा कराके छोड दी। आस पास के गांव ब्राह्मणों की ढाणी दोनों, हमीरी, भुरासर और बास और भी पडोस के निवासीयों के आराम हो गया नहाने धोने और जानवरों को पानी हर वक्त मिलने लगा, थोडी बारिस से भी तालाब हमेशा भरा रहता है, चौधरी श्री भींवारामजी, जीवनरामजी हमीरी इस सरोवर की पूरी संभाल रखते थे। पेड कोई भी नहीं काट सकता था, न पानी गंदा करने देते थे। शहर झुन्झुनू के सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण सौंमोती अमावश्या, श्रावणी कर्म पर बडे बड़े पंडित श्रावणी कर्म कराते थे धार्मिक जनता पर्व मनाती थी पहाड़ का शुद्ध पानी आता था।

एक गवालिया गायों को चराकर तालाब में पानी पिलाने जाता था, उस गायों के चुण में एक गाय सफेद रंग नांदिया के से डील डोल की आती थी, छः महिने तक उसकी चराई पिलाई नहीं आई तो गवा-

लिया ने सोचा यह गाय किस की है। उस गाय के पिछे पिछे गया तो मोडे पहाड के उत्तर पश्चिम की कौने में एक पहाड की टोल में गुफा में चली गई, गवालिया गाय के पिछे पिछे चला गया, वहां पांच चार स्वामी मोडे वैठे थे। एक पानी की तलाई थी ठाकुरजी का देवरा था, गाय अपने स्थान पर वछड़े के पास वैठ गई। गवालिया ने कहा महाराज में आपकी गाय चराता हूं चराई मिलनी चाहिये, वृद्ध साधू ने एक छाज़ला जौ का भरकर गवालिये को कम्वल में डाल दिया। वाहर आकर गवालिये ने जौ समझकर गुफा के सामने डाल दिया, जव घर पहुंचा तो वीस तीस दाने जौ के कम्वल के चिपके रह गये वोह हीरे मोती थे। गवालिया भागकर गया तो अन्धेरा हो गया था, न गुफा का दरवाजा मिला न वोह जौ समझकर फेंके थे वह मिले न फिर वो गाय आई, यह गवालिया दीना धोबी का दादा था। सन् १६०१ में श्री माधोसिंह जी राठौड़ शेखावाटी के नाजिम वनकर आये थे वो कई बार रात के तीसरे पहर अकेले ही तालाव पर चले जाते तो उनको दो महात्मा जोड़े पर मिला करते थे। उन्होंने ऐलान करा दिया कि इस तालाव को और पायतन को खराव करेगा या दुरुपयोग करेगा तो राम राज दोनों का गुनहगार होगा।

श्री प्रहलादराय पुत्र जीतमलजी सर्राफ ने कुछ रेवड़ वाले क़साइयों के मुचलके कराये थे उसमें उस फरमान की नक़ल पेश की थी। मैं भी प्रहलादरायजी सर्राफ का दस साल वकील रहा हूं। चौथमल खेताण इस तालाव और ज़मीन के चौकीदार थे। श्री प्रहलादरायजी ने १ कूंवा और धर्मशाला आदि मकान भी साधू संतो के ठहरने को वनाये थे। सेठ प्रहलादरायजी सर्राफ़ को कम सुनने लग गया था, एक भोगळी लगा कर सुनते थे। कागज़ पत्र नक़ल हुक्म सव सावधानी से रखते थे वो मेरे

पास आते तो पहले से ही दो या तीन सवाल लिखकर लाते थे, उसका जवाव मिलते ही चले जाते थे, सेठजी जव भी भागलपुर से आते थे तो तालाब पर गोठ कराते थे। कुंवा धर्मशाला की मरम्मत कराते। श्री चन्द्रभानजी भार्गव जज हाईकोर्ट डॉ० ताराचन्द्रजी गंगवाल श्री गणेशनारायणजी शर्मा एडवोकेट श्री गोकुलप्रसादजी शर्मा एडवोकेट तो आज भी जिन्दा है गोठ जीमने वाले श्री प्रहलादरायजी सर्राफ झुन्झुनू के केवल एक ही लड़की थी, जो श्री राधाकिशनजी सांगानेरीया, मलसीसर को व्याही थी श्री राधाकिशनजी सांगानेरीया की सर्राफजी तारीफ करते थे। अब उनके सन्तान तो वतलाते है, मगर श्री सर्राफजी की कीर्ती की तरफ आँख मीचुनी किये हुये है। निरंजनलाल तुलस्यान के श्री मुरलीधरजी तुलस्यान के पोते ने श्री जीतमल सराफ के तालाव पर नाजायज कब्जा कर लिया है। धर्मशाला कुवा तालाव और पायतन का रुप विगाड़ दिया है तपो भूमि को भोग भूमि वनाली है। अपनी आरामगाह वनाली है गायों को मार मार कर भगाया जाता है तालाव के पानी से वाग सींचा जाता है। धर्म के रक्षक धर्म के भक्षक वन गये। मालिक वन कर वैठ गये। धर्मशाला महात्माओं का स्थान था खुद वावाज़ी वन गये, गाड़ी वैल किसी के यारों का टिचकारा लावारिश देखकर मन चला लिया है, जव कोई पुछता है तो कहते हैं प्रहलादराय जी सराफ के दुहतों ने मेरे को वेच ही दिया है, किसी को कहते है धमार्थ दे दिया है श्री सांगानेरिया जी को धमार्थ स्थान न तो वेचने का अधिकार है न दान देने का, इसके मालिक तो जनता जनार्दन या गवेंया चरीन्दे परिन्दे है। कोइ लाओलाद मर जावे तो दूर दराज के रिश्तेदारों का धर्म है कि उनकी कीर्ती नष्ट न करें। उन महान पुरुषों की आत्मा की वद दुआवों से भी डरना चाहिए। तालाव गोचर भूमि सव की है। भोग भूमि नहीं है।

तरवर सरवर संत जन चौथा बरसण मेह
परमार्थ के कारण चारों धारी देह

तालाव पर आक्रमण करियों के खिलाफ जव जिलाधीश झुन्झुनू के पास विरोध स्वरुप में जनता का जुलस निकला था तो हजारों आदमी हिन्दु मुसलमान ज्यादा संख्या किसानों की थी, नारे लगाते हुवे जा रहे थे। उनमें कुछ नारे यह भी थे।

"के जोड़ो तेरे बाप को रे के तू बैठ चिनायो,,
जोड़ो जितमल सराफ को तू क्यू मन चलायो
वूरा भले के होत है बिगड़ जात है बंस
बहलोंचल के बल भयो उग्रसेन के कंस
कमाकर खावो, वाह्मणों साधुओं को मत सताओं
सराफ खानदान की कीर्ती को कलंक मत लगावों
खाते पीते दुहतों को नाना का तर्पण का अधिकार है
उनकी कीर्ती नष्ट करनेका नहीं

आदि आदी जितने मूंडे उतनी ही बातें। जुलूस में वोली भी श्री मुरलीधरजी को मरे तीस साल हो गये श्री व्रजमोहन जी बीस साल से लक्वे की वीमारी से पीड़ित है। श्री मुरलीधरजी जीवित होते और व्रजमोहनजी खड़े पगों होते तो इस पाप के दल दल में नहीं फसने देते। श्री व्रजमोहन जी वहुत भले आदमी है इस जन्म में तो उनको वड़ाई ही है. पूर्व जन्म की विधाता जाने। श्री व्रजमोहन जी की सेवा जो पुत्र कर रेहे है उनकी सर्वत्र प्रसंसा है, आज तक किसी ने इतने लम्वे समय तक सेवा नहीं की। परमात्मा की माया परमात्मा ही जाने।

अवश्य मेव भोग तव्यं, कृतयं कर्म तक्रनंम कर्म
शुभा शुभम् नाभुक्त क्षीय.ते कर्म कोटी कल्य सतैरपि,

श्री मुरलीधर जी तुलस्यान बहुत विचारक और दूरदर्शी सज्जन थे। उनको घुमने का भी शौख था। जब झुन्झूनू में रेल्वे स्टेशन की जगह कायम की गई झंडी गाडी गई तो देखने को गये मेरे को भी साथ ले गये। मैंने कहा स्शटेन बहुत दूर बनेगा। तो उन्होंने कहा आधे मील और आगे बनना चहिए, आज उनकी बात याद आ रही है स्टेशन नजदीक मालूम हो रहा है। उनकी दुकान मीठाई की कपड़े बाजार में थी, उनके साझेदार श्री सुरजमल जी मसखरा थे, वोह बैंक के ही मस-खरा नहीं थे। स्वभाव के भी मसखरा थे। जब कोई धार्मिक जलूस जाता था तो वोह दुकान छोड़कर नृत्य करने और भजन गाने लग जाते थे। कितने आत्मा के साफ सज्जन थे।

"यह सहद बूरा है लालच को इस मीठे को मत खा प्यारे,
यह सहद नहीं यह जहर निरा इस जहर पर मत जा प्यारे,
जो मखी उसमें आन फंसी फिर पंख रहे लिपरा प्यारे,
सर पटके रोवे हाथ मले हैं लालच बूरी बला प्यारे,
यह लोभ तेरी पत खोता है इसको भी लालच मारे की,
ह लोभ चमक खो देता है, हर आन चमकते तारे की,
एक पिनक कर लालच पर बन शुरत लाल अंगारे की,
र याद मदन मतवारे की जय बोल कन्हैया प्यारे की,
र हिरस हवाके फंदे मे तूं अपनी उम्र गंवा वेगा।
खाने का फल देखेगा न पानी का सुख पावेगा।

एक दो गज कपडे तार सवा कुछ साथ न तेरे जावेगा।
ए लोभी वन्दा लोभ मरे तूं मर कर भी पछतावेगा।
इस हिरस हवा की झोली से हैं तेरी शकल भिखारी की।
पर तुझको अब तक खबर नहीं ऐ लोभी अपनी खवारी की।
संतोखो साध सरदें, तज मिन्नत नर और नारी की।
ले नाम कृष्ण मनमोहन का जय बोलों अटल बिहारी की।

श्री तुलसीदासजी के तुलस्यान वंस में कई महापुरुष हुवे है। श्री धर्मदासजी ने झुन्झुनू में वावडी वनवाई और उनकी यादगार में झुन्झुनू में धर्मदास भवन है, श्री सेवारामजी तुलस्यान ने करीव सौं साल पहले झुन्झुनू के वीड में एक खुबसुरत तालाव वनवाया, जिसमें हजारों चरीन्दा परीन्दा जल पीते है मनुष्य स्नान ध्यान करते है। हर वक्त भरा रहता है। तुलस्यान वंस में जगत प्रसिद्ध सेठ रायवहादुर श्री सुरजमल शिवप्रसाद झुन्झुनू वालों ने हर वडे तीर्थ स्थान में वडी वडी धर्मशालाये वनवाई, रिषीकेश में उनका लक्ष्मण झूला प्रसिद्ध है, जो अग्रवाल अपने नाम के आगे झुन्झुनूवाला लिखता है वोह तुलस्यान है श्री तुलसीदासजी का वंसज है। सेठ चिमनलाल मोतीलाल झुन्झुनू वाले मलसीसर सिलवर किङ्ग ने झुन्झुनू में कॉलेज वनाई है। हजारों लडकों ने अपना जीवन सुधारा है। दूर क्यों जावों ! झुन्झुनू में ही श्री द्वारकादास तुलस्यान ने चालीस साल तक श्री राणी सतीजी की निस्वार्थ सेवा की है। सुरज छिपने के वाद वहां कोई नहीं जाता था, पुजारी जेठमल जी जोशी भी शाम होते ही धुप दीप करके आ जाते, रात को रोहनी वोलती थी, श्री द्वारकादासजी तुलस्यान का नियम था की श्री राणी सती मंदिर में भोजन नहीं करना चाहे सगा प्रसंगी हो या वरावर के

भाई, आपने ऐसा प्रवन्ध करवाया सैंकडो आदमी स्नान करते पुजा पाठ करते यात्रियों को ठहरने ग्रौर उनकी सेवा के लिये नौकर रसोइये का प्रवन्ध कर दिया श्री तुलस्यान जी कहते की आम का पेड लगाने वाला ग्राम नहीं खाता है, आने वाली पीढी ही उस के फल को खाती है। श्री पेमराज द्वारकादास तुलस्यान की वाजार में कपडे की दुकान नामी गिनी जाती थी, ईमानदारी का व्योपार था, सवसे पहले झुन्झुनू में समाचार पत्र भी ग्राप की दुकान पर ही ग्राना शुरू हुवा था। आप जन सेवक थे। मुदई और मुदाईला दोनों ही आप पर भरोसा करते थे आप लडते हुय को राजी वाजी देते, सौं पच्चास रुपया ग्रपने पास से भी खर्च कर दिया करते थे। आप के साथी श्री पेमराजजी तुलस्यान शान्त स्वभाव के सज्जन थे आप ने विवाह नहीं किया था, वाल ब्रह्मचारी थे। पेमराजजी के छोटे भाई श्री नेतरामजी तुलस्यान वडे परिश्रम और महनती दुकानदार थे। आखरी दिनों में सव काम काज छोड दिया था, आप शिव भक्त थे, वावलियो की वगीची में शिवजी की पुजा करने जाते थे। तीयासी साल की उम्र में उनका अचानक स्वर्गवास हो गया।

मैं यह पुस्तक उनको भी भेट करने वाला था, मगर विधाता को मंजूर नहीं था, उनके पांच सुपुत्र है, जो योग्य हैं। सम्पन्न है। भले ग्रादमी है। ग्रच्छा कार वार चलता हैं। पोते पडोते भी हैं। हरा भरा परिवार हैं।

सिताराम सिताराम कहिये।
जांहि विधी राखे राम तांहि विधी रहिये।
मुख में हो राम राम सेवा हाथ में।
तूं अकेला नहीं प्यारे राम तेरे साथ में॥ सिताराम....
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पावेगा।

होगा प्यारे वोह ही जो रामजी को भावेगा ।
फल आशा छोड शुभ कर्म करता रहिये ।
जांहि विधी राखे राम तांहि विधी रहिये ॥ सिताराम....

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के ।
महलों में राखे चाहे झुंपडी में वास दे ॥
आशा एक रामजी से दूजी आश छोड दे । सिताराम....

नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड दे ।
साधू संग राम रंग अंग अंग रंगिये ।
काम रस छोड प्यारे राम रस पीजिये ॥ सिताराम....



श्री जगन्नाथ सागर

उर्फ शाहों का कूंवा

श्री जगन्नाथजी गोकलचन्दजी शाह ने यह कूंवा संवत् १९४६ में वनवाया था, आप कलकत्ता से झुन्झुनू दूसरी सगाई करने आये थे, अपने जोशी श्री सितारामजी वावलिया से कहा कोई लड़की देखो महिने दो महिने फिरने के वाद अपने जजमान से कहा ऐसी देखली है जो कभी मरेगी ही नहीं, जजमान को ताजूव हुवा ऐसी लडकी कौन है, श्री जगन्नाथजी शाह की उम्र चालीस साल की हो गई थी । शाह जी ने कहा की लडकी दिखलावो, में सात सौं रुपये कलकत्ते से लाया हूं । जोशी जी ने कहा इस मोहल्ले में पानी की वहुत कमी है, वडा धर्म होगा । वोह विनणी तो तुम्हारे अकेलों के काम आवेगी, यह विनणी

सबके काम आवेगी, शाह जगन्नाथजी को यह बात जच गई, कूंवा बनाने की हामी भरली तो श्री सीतारामजी बावलिया ने अपने बडे भाई श्री डूंगरदासजी व श्री सेडमलजी बावलिया जो तीनों ही श्री हनूतराम जी बावलिया के सुपुत्र थे। अपनी बगीची के पूर्वी दक्षिण की कूंट में कूंवा बनवा दिया गया जिसका पानी गंगा जल था, झुन्झुनू भर में शाहों का कूंवा सरनाम था, शाह परिवार का नाम उजागर कर दिया सपुत के तो सात पीडी वाला अपना है, कपूत के दूसरी पीढी वाला पराया है। इस कूंवे के निचे पच्चास विघा बाडी भी थी दक्षिण में कूंवे के ढाल के निचे जो अब श्री दत्तूरामजी शाह की संतान के कबजे में श्री बलदेवदास और जीवणराम पुत्र श्री गोकलचंदजी ने इस बाडी का मुकदमा भी लडा था कि हमारे कूंवे की बाडी है। कई वर्ष मुकदमा चला मगर वोह कलकत्ते के रहने वाले थे। बग जीते सुरा हारे। बलदेवदासजी और जीवणरामजी शाह के औलाद नहीं थी, श्री कन्हीरामजी शाह श्री जगन्नाथजी शाह से सात पीढी दूर थे, कूंवा बना जब दो तिबारे व शिवालये भी उसी वक्त बने थे। श्री हनुतरामजी की औलाद में बगीची के बारे में मुकदमा चला था जिसमें श्री बलदेव-दासजी, झुमारामजी, श्रीरामजी शाह के बयान हुवे थे। बगीची श्री हनूतरामजी बावलिया की मानी गई थी। शिवालय व बालाजी का मंदिर है। बगीची में कूंवे के दो गुभारीया पश्चिम में खुलते हैं- इकरार में बगीची को दे दी थी। माह सुदी ६ संवत् २०४६ में कूंवे को बने सौं साल हो जावेगें। कूवा पिचासी साल तक नगर को मोटा गंगा जल पिलाया अब भी पानी है। मगर नगर में टूटी लगने से पानी अकट हो गया। श्री कन्हीरामजी शाह श्री जगन्नाथ शाह से सात पीढी दूर है। श्री कन्हीरामजी शाह की सन्तान में भी परमात्मा की कृपा से विद्वान धनवान, विचारक भक्त भी है, आशा है श्री जगन्नाथजी शाह की कीर्ति स्थम्भ के रूप को नहीं बिगाडोगें।

जमाने में बहुत जल्दी परिवर्तन आने वाला है, किराया भाडा सब बंद होंगें। जैसे जागिरदारी खतम हुई किरायेदारी भी बहुत जल्द खतम होगी। मकान दुकान जो रह रही है उसी की हो जावेगें, आने वाली सरकार उसका किराया लेगी, मालिक मकान दुकान को मुआवजा दिलाया जावेगा। जो भो किश्तों में। बगीची में जो भी शिव भक्त आवे हर वक्त द्वार खुले है। जांत पांत का कोई भेद भाव नहीं है। पूजा पाठ भजन किर्तन कर सकता है कबूतरों को अनाज गिरा सकता हैं। पिछले दिनों में तो कुछ भक्तों ने पचास २ वर्ष के पेड जांट कीकर जाळ कटवा दिये जांट के पेड पर सौं घुग्साळे चिडियो के थे कीकर में पच्चास घूसाले कमेड़ियों के थे। पांच-सात मोर रात्रि विश्राम करते थे जाल के नीचे गर्मियों में मोरनी अण्डा देती थी। गर्मी में बीसों मोर आराम करते थे। हमारे लोगों को गैर हाजिरी में कटवा दिये। दौलत का नशा, शराब के नशे से भी बूरा होता है। वह बोझा कटवाने में ही अपना धर्म समझते हैं, बोझा लगाना पाप समझते हैं अगर उनकी चले तो इन्दिरा सरकार वृक्ष लगावो अभियान चलाती है उसको रद्द करके दरखत कटाओ अभियान चालू करदें। पुण्य कई तरह के होते हैं। वृक्ष कटाने के पाप का प्रायश्चित तो जरूर करना चाहिये था। चार दरखत कटवाने के बदले आठ बड़े दरखत लगाने चाहिये। बगीची में ही जैसे बड़, पीपल, नीम, जाळ, बील, आवला, जांट वगैरह। नहीं तो यह पाप बढता ही जावेगा। बगीची श्री हनूतरामजी बावलिया झुन्झुनू की सन्तान की मिलकियत है उन्हीं का कब्जा है, जो भी भक्त स्वयं इच्छा से धर्मार्थ कुछ लगाना चाहे तो छूट है। शाह श्री जगन्नाथ सागर ताल और स्टेशन रोड पर चौराहे पर होने से प्रसिद्ध है। साहों के कुवे के नाम से अड़ोस-पड़ोस में पत्र आते हैं। सेकड़ों आदमी साहों का नाम लेते हैं। खेल में पानी भरा रहता है, केवल चारसौ-पांचसौ रुपया साल

का खर्चा है स्वयं इच्छा से पानी का खर्चा वंद न करेंगे, तव तक ठीक है नही तो दूसरे कई गऊ भक्त पानी का विल चुकाने को तैयार हैं। संवत २०४६ में इसको सौ साला जयन्ति मनाई जायेगी। श्री जगन्नाथजी साह की यह कीर्ति है वह सब ही साहों की कीर्ति है। केवल यह कुवा ही उनकी सम्पति में रह गया है और जायदाद तो खुर्द-बुर्द हो गई। श्री जगन्नाथजी साह को इस कुवे के पुण्य से मौक्ष मिल गई है। जीवन मरण से मुक्त हो गये हैं। उनकी आत्मा को परमात्मा शान्ति दे। कोई ऐसा कार्य नहीं कि उनकी आत्मा हो को ठेस पहुंचे।

देह धरे का फल यही भज मन कृष्ण मुरार।
मनुष्य जन्म को मौज यह मिले न बारम्बार॥



कैलाश भारत का ही अंग है।

अब मैं अपने श्री शिवजी महाराज के विवाह की कथा भक्तों को सुना रहा हूं।

पहले नाम गणेश का लिजे शीश नवाय।
जासे कारज सिद्ध हो सदा सूरत लाय॥
बोल वचन आनन्द के प्रेम प्रोत और चाह।
सुनलो यारो ध्यान धर महादेव का व्याह॥
जोगी जंगी से सुना वह भी किया व्यान।
और कथा में भी सुना उसको भी प्रणाम॥

सुनने वाले भी रहे हंसी खुशी दिन रैन।
और पढे जो याद कर उनको भी सुख चैन ॥

और जिसने उस व्याह की महिमा कही वनाय।
उसके भी हर हाल में शिवजी रहे सहाय ॥

यों कहते हैं इस दुनियां में एक राजपति हिमाचल था,
वोह धर्मी अदल नेक जोव मुख चंद दिलावर भूज वल था।
इस राजा हिमाचल के घर में एक नामी सुन्दर वेटी थी,
मुख उसका चंद्रलल्न का था नाम उसका गौरा पार्वती।
हो शाह पिरोहित चलने को इस शहर से जव तैयार हुये,
यों जल्द चले उस नगरी से जूं पवन सहर के वक्त चले।
हर द्वीप गये हर नगर गये हर शहर वसे हर देश फिरे,
पर एक न पाया वर ऐसा जो राजा के पसन्द पड़े।
मकदूर तलक तो देख फिरे और अपने वस तो ढुढ चुके,
तदवीर वहुत सी की लेकिन जो चाहे सो तकदीर करे।
जो वात लिखी हो कर्मों में हर तौर वही आकर होवे,
जो चाहे फेरे कोई उसे क्या ताव जो तिलभर फेर सके।
जव खिची वाग नसीबों फिर उसके आगे हार गये,
वां फिरते फिरते आखिर को कैलाश के ऊपर जा पहुंचे।
क्या देखें वां कैलाश ऊपर शिव आप अकेले हैं वैठे,
कि अस्तुत और खुश वक्त हुये सुख पावे उनके दर्शन से।
जव मन को सुख आनंद हुई फिर थोड़ी सी वां केसर ली,
कर टीका उसका जल्द वहुत खुश होकर माथे शिव के।
जव वैठे शिव की शादी में कुल तैतीस करोड़ देवता,
विष्णु आप थे आये और ब्रह्मा और इन्द्र नारद मुनि उसजा,।
और शुक्र और व्रहसपत भी और नाव सनीचर भी जिनका,

वो रुप स्वरूप और पोशाकें वोह उंची शाने जैव फिजा ।
उस वक्त खुशी से मन्दिर पर शिवजी वैठे वनकर दुल्हा,
मुख पान की लाली कर मेंहदी और आंखों वीच लगा कजरा
हर नारी निकली छोड मन्दिर रख मन में चाव तमाशे की,
और वुढ़िया वुढे तिफल जवां और कुवड़े लगडे वहरे भी ।
जव साअत फेरों की तव ठहरी उस जा राह खुवी,
घर भी वुलाया दुल्हा को और फेरों की तैयारी की ।
कुछ वैठे लोग इधर उधर सव अपने वीच खुशी,
जो फर्स मूकर्र है उस पर आ वैठे दुल्हा दुल्हन ।
जव दुल्हा दुल्हन मिल वैठे तव रीत हुई गठजोडे की,
वोह पंडित आये होम किया सव लाकर उसकी चीज ।
सव पंडित आये वह पढे और वैठा डाले घी,
रखी गणेश की पुजा करके वा फिर पूजा नौग्रह की ।
फिर थाल जवाहर नेग मिले में जल्द स्वासी और नेगी,
और लेलें नेग दुआयें सव दुल्हा और दुल्हन को वैगी ।
शुभ साअत नेक महुरत से वो दुल्हा दुल्हन रुप भरी,
इस तौर फिरे मिल आपस में है रीत जो होती फेरों की ।
जव फेरे चार हुये आकर कुल ऐश व तरव धूम मची,
हर चार तरफ चमकी झमकी खुशहाली खुवी खुशवकती ।
जव शिव ने वां हुक्म दिया तैयारी हो अव चलने की,
जिस वक्त वराती वैठ चुके तव राजा ने वां लोगों को,
यह हुक्म दिया अव खुशी से इन सव को लाकर भोजन दो,
जव चाकर नौकर जल्द चले और जनवासे में आकर वो यों वोले
अउ सव कृपा कर ज्योनार मंदिर के वीच चलो,
तुम भी जीमो और उनको दिलवाओ जिन्हे दिलवाने हों,

है मुकते ढेर मिठाई के दरकार हो जितने इतने लो।
इस बात को सुनकर वह बोले है खूब पर इतनी बात सुनो.
यह दो बालक जो बैठे हैं तुम इनको जिमवादो।
वोह गोद उठाकर खुश हुये जिमनार में लाय दोनों को,
थे जितने वां अमवार लगे और ढेर मिठाई को जावे।
एक डेड नवाला कर बैठे फिर मचले अब कुछ और रखो,
हैरान हुये और चुप रह गये मन बीच बहुत शर्मिन्दा हो।
और आप मंदिर के बीच गये तो हुवे विदा वां दुल्हन की।
यह बात विदा की सुनते ही वां गौरा की माँ यूं बोली,
सब तौर तुम इसके मालिक हो यह चेरी मैंने तुमको दी।
मन इसका बहुत ही रखियो खुशी मत मैला किज्यो इसका जी,
यह प्यारी है मन की मेरी और रोशनी में मेरी आंखों की।
यों कहकर बोली गौरां से मिल मुझ से मेरी पारबती,
जब गौरां प्यारी दौड़ गले वां अपनी मां के आ लिपटी।
वोह मां भी रोई देख उसे और रोईं जितनी घर की थीं,
मां देख कर रोई गौरां को कर प्यार बहुत यो कहती थी,
तूं आंखे रो रो लाल न कर मैं तेरे मन की बलिहारी,
कुछ अपने मन के बीच न ला में तुझ को जल्द बुलाउंगी,
फिर आखिर वां उस रात को कर प्यार बहुत सा घड़ीघड़ी
चंडूल मंगाकर ड्योढि पर वां सबने रोती बिठलाई
सच पुछो तो मां बाप के तई है बेटी से यां प्यार बहुत
जिस वक्त वोह ब्याही जाती है जब होते है लाचार बहुत
जब डयोढी से चंडूल उठा दरवाजे पर सौ खूबी से
निछावर इतनी की उस पर कुल मोती फूल जरी बिखरे
उस वक्त बहुत खुशवक्ती से शिव शंकर भी असवार हुवे

वो खूबी हसमत चार तरफ सब साथ वराती जेब भरे
असवारी दुल्हा की आगे चंडूल दुल्हन का था पिछे
वो वाजे लाये साथ जो थे सब हरदम वजते साथ चले
असवाव दिया जो राजा ने थे उसके जाते ऊंट लदे
वो जितने चेरा चेरी थे सब रथ और म्यानो में बैठे
वोह हाथी घोड़े हर जानिव अम्वारी जीन झमकते थे
उस देश के रहने वाले भी सब देखने निकले घर घर से
हर कोठी कोठी भीड़ लगी और रस्ते रस्ते लोग भरे
गुल शोर खुशी की चार तरफ सब देखे वोह ठाठ वड़े
जिस तोर खुशी से व्याहने को शिव आये घर में राजा के
फिर वैसी ही खुश भक्ति से कैलास के उपर जा पहुंचे



परोपकारी श्री महादेवलालजी सीकरीया मोदी झुन्झुनू

श्री महादेव लाल जी सीकरीया मोदी कितने पर उपकारी थे। शहर झुन्झुनू में प्लेग पड़ा हुआ था गांव खाली हो गया निजाम शेखावाटी का काम काज खेमी सती के पास तंवू डेरों में हो रहा था, श्री वख्तावर मल जी माथुर का अचानक स्वर्गवास हो गया, वोह नजामत में नवींसन्दा थे, उनके सबसे वड़े पुत्र १६ साल के थे श्री श्यामलाल जी माथुर दाह संस्कार आदि कराने के वाद श्री अव्दुल समद खां जी

नाजिम के पास गये और कहा श्री श्यामलाल जी माथुर के नाम ही नवीसन्दा की आसामी करदी जावे। नाजिम साहव ने कहा अवल तो श्यामलाल माथुर नावालिग दूसरे काम का तजूरवा नहीं है, तीसरे जमानत पांच हजार रुपयों की देनी पड़ती है। क्यूंकि खजाना और स्टाम्प भी नवीसन्दा के पास रहता है उस जमाने में स्टाम्प फरोस भी नवीसन्दा ही होता था, श्री महादेवलाल जी मोदी ने कहा काम तो मैं करूंगा जमानत भी देदूंगा आपको काम की कोई शिकायत नहीं आवेगी, श्री श्यामलाल जी माथुर १६ साल को नवीसन्दा वना दिया, मोदी जी ने दो साल तक काम किया, दो साल में माथुर साहव हौशियार हो गये। घर वस गया श्री श्यामलाल जी के दो छोटे भाई श्री चांद विहारी लाल और मुकुट विहारीलाल और वे तमाम उम्र एक ही जगह काम किया अव श्री श्यामलालजी माथुर की पेन्सन हो गई तमाम उम्र ईमानदारी से काम किया। अव तो आपके सन्तान भी सुपातर है छोटे भाई श्री चान्दविहारी जी भी पेनसन पा रहे है। मुकुट विहारी लाल का इन्तकाल कुछ वर्षो पहले हो गया था, उनके भी योग्य सन्तान है श्री महादेवलाल जी मोदी सरकारी मोदी थे, नजामत तहसील रिसाला जैल में आपके यहाँ से ही सामान जाता था, कई लड़कों को नौकरी दिलाई कई भले आदमियों का काम कराया, मेरे को भी मोदी जी ने ही काम सिखलाया था, नीरख नवीस वनाया था, रोजाना नीरख भई मैं सव चीजों के भाव निकलते मैं भई लिखता था। श्री हरगुणरायजी जलेवी चौर और मोदी श्री दीनाराम जी के दस्तखत पंच महाजनों की हैसियत से होते थे, तहसील की मोहर होती थी। जयपुर राज का रुपया अठारह आनों में चलता था। जवकि अंग्रेजी का सोलह आनों में। निरख भई वाजार खुलने से पहले लिखी जाती थी, उसी के माफिक सव जिन्स विकती थी, मेरी तनख्वा ढाई रुपया महिने

की थी मगर ओहदा अच्छा था, जयपुर का भी तौल आज के किलों के मवाफिक था श्री महादेवलाल जी मोदी ने साठ साल राज किया मगर किसी भी मोदी ने अभिमान नही किया न यह दिखाया कि हमारे हाथ में हुकूमत हो मैंने तो मोदी जी से बड़े बड़े काम करवाये है । श्री गंगा राम जी मोदी सीधे साधे आदमी थे, मोदी जी के पास बैठे रहते, यह पता नही था, कि श्री गंगाराम जी भी देव बन जावेगें और उनकी सन्तान उनको देवता करके पुजावेगी । मोदी जी सतर वर्ष की उम्र में भी वगेर चश्में तीलली के तेल के दीवे से काम करते थे । उनको मैल नानूलाल की टोली को देखने का वहुत शौक था । मोदी जी बिमार हुवे तो मैं मिलने गया मेरी हथेली पकड़ कर मसलने लगे और कहा तकलीफ तो नही पाता है ना कुछ देने का विचार था, मगर मैंने इन्कार कर दिया । श्री केदारमल जी मोदी को वुलाया और कहा इसका पुरा ध्यान रखना, उसी दिन से श्री केदारमल जी मोदी से दोस्ती हो गई । दो दिन के बाद मोदी जी का स्वर्गवास हो गया, उनका राजकीय सम्मान के साथ दाह संस्कार हुआ । नाजिम साहव और सरकारी लवाजमा सव यात्रा में शामिल थे । नजामत की छुट्टी रही ।

"यश जीवन अपयश मरन कर देखो चाहे कोय,
क्या लंक पति लेगयो क्या करण गयो खोय,
"कागा कितना धन हरे कोयल किनको देय,
जी भरली के कारने पर अपनो कर लेय,

श्री दिलसुखराय जी पंसारी

श्री गोपीनाथ जी के भक्त थे। रोजाना शाम को श्री गोपीनाथज़ी के मन्दिर में जाते थे। दर्शन करके आते थे बारह महिने में चोवीस ग्यारस आती है। जेठ सुदी ११ निर्जला ग्यारस साल में एक आती है। परन्तु श्री दिलसुखराय जी पंसारी तो चोबीसों ग्यारस ही निर्जला करते थे अधिक मास आते तो छबीस ग्यारस निर्जला होती थी, आपके अमल सुलफे का व्यापार था। जयपुर ऊंट से जाते थे कई बार तो ऊंट के साथ साथ पैदल ही इकावन कोस जाते थे। आपकी हवेली का नौहरा गऊशाला था, पांच सौ गाय बाछी बाछा रखते थे। खुद चराते पिलाते थे। क्या महापुरूष थे।

"ग्रन्थ पन्थ सब जगत के बात बतावे तीन
राम हृदय मन में दया तनसेवा में लीन
"तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र किये दान
मन पवित्र हरि भजन तें होत त्रिविदा कल्यान



मसकरा दोस्त:—

श्री गूलराजजी खेतान झुन्झुनू

श्री गुलराज जी खेताण झुन्झुनू ने कई विवाह किये थे। विवाह किया दो तीन सन्तान हुई वीनणी स्वर्ग सिधार गई छः स्त्रीयों के सन्तान हुई आखिर वोह भी कई वाल बच्चे छोड़ कर चली गई। खेताणजी वृद्ध हो गये दरवाजे में डेरा हो गया, एक पानी के लोटे के लिये भी कई हेले मारने पड़ते थे जव पाणी का लोटा आता था, श्री रामनाथ जी साह को पता चला कि तुम्हारे दोस्त की तो यह दुर्गती हो रही है। एक दिन वोह गुलराज जी खेताण के पास गये वातें की पुछा कुछ पास में सलीका है भी, तो श्री गुलराज जी खेताण ने कहा दो सौ रूपयें है। कहा मेरे को दो, वोह रूपये लेकर आ गये, दो सौ रूपयें के टके मंगवाये जो चांदो के रूपये के आकार का और वजन का होता था। अपने पड़ोसी श्री जैसराज जी दर्जी को वुलाया और सात थेली दुसूती के कपड़ को मजवूत टांके लगा कर महोर चपड़ी लगादो। ४ वजे दिन का वक्त था, एक गाडे में रखवा कर खेताण जी की हवेली पहुंचे। और थेलियों को उतरवाकर कोटड़ी में रखवा दी जिसके आगे खेताण जी की खाट घल रही थी, घरवाले घरवाली टावर सव इकट्ठे हो गये तो, श्री रामनाथ जी साह ने कहा ववई में अपन ने सौदा किया था, आपके सात हजार रूपये मेरे में वाकी है। रामजी को जी देना है। अगले जन्म में दूने देने होते है। यह सात हजार रूपये संभालों कोटड़ी के एक ताला तो खेताण जी का लगा दिया दुसरा ताला लगाकर आप ताली ले आये। कोइ छोरी आति है वावा जी पानी पीवो कोई छोरा आता है वावा जी आज तो वड़ा गूलगला किया है शनिचार है। कोई चूरमा लाती है आज तो चौथ का व्रत है कोई लाडू लाती है वारना

आया है। तीन साल तक श्री गुलराज जी खेतारण की खूब सेवा हुई। वीमार हो गये चलने की तैयारी हुई ब्राह्मण जिमाये धर्म पुन्य किया अच्छा चलावा हुवा सुख सेज दी गई ब्रह्मपुरी हुई बिरादरी में वारना वांटा गया, सात हजार रूपया दिख रहे थे। अब थेली खोले तो सारा परिवार इकट्ठा होने पर ही खोली जावें। एक साल वाद सवका भेले होने का मौका मिला, थेली खोली तो दो सौ रूपये के टके निकलें। सव ने कहा वूढले ने ठग लिया तो दुसरे ने कहा यह सावडे की वदमाशी है, लोग हंसाई से डरना घर में ही वात दावली, एसे मित्र होते है।

सांचा मित्र सचेत कहो काम न करे किसा,
हरि अर्जुन के हेत रथ कर हाक्यो राजिया,



श्री केदारनाथजी टीबड़ेवाले (नैपालिया)

श्री केदारनाथ जी टीवड़े वाले (नैपालिया) वहुत शान्त स्वभाव धर्मवृति के सज्जन थे। आपका विचार हुवा टीवड़े के मौहल्ले में श्री सत्य भगवान का मंदिर वनवाया जावें तो जगह का सवाल पैदा हुवा। टीवड़े के मौहल्ले में दो थांवे ज्यादा प्रसिद्ध थे। श्री अजवराम जी का, दुसरा ताराचन्द जी का, अजवराम जी वालों की एक पुरानी सीर की हवेली थी, जिसमें एक हिस्सा नरसिंह दास जी का, दुसरा हिस्सा फौजाराम जी का जिसमें श्री सांवलराम जी अगवा थे, श्री नेतराम जी मगराज, श्री गौरधनदास, वींजराज, श्री भुरामल, सुन्दरलाल और नैपालिया श्री महावीर प्रसाद, वैजनाथ खुद श्री केदारनाथ जी, इन

सज्जनों ने अपनी हवेली मुफत देदी, ताराचन्द जी के थांवे वालों से भी कहा गया अपनी टूटी फुटी हवेली मंदिर बनाने को दे दो, वोह हवेली मिल जाती तो मंदिर का रुप ही और ही होता, इस वंश में ज्यादा स्वार्थी लोग थे, खैर अब अजबरामजीवालों की हवेली तुड़वा कर मंदिर बनाना शुरु हुवा सबसे उपर मंदिर बीच में हवेली जिसमें दस कमरे बैठक, रसोई, परींडा बीच में चौक और तीसरे मंजिल में रास्ते पर दुकाने नौहरा भट्टी और प्याऊ बनाना शुरु हुवा पड़ोस में गफूर शाह फकीर ने दावा कर दिया की बीस गज पर ही मस्जिद पड़ती है। मंदिर मस्जिद पास पास होने से दंगा फिसाद साम्प्रदायक दंगा होने का खतरा है नाजिम श्री मालीराम कासलीवाल ने मंदिर का चेजा बंद कर दिया, और श्री केदारनाथजी को दो हजार रुपये के मुचलके देने का हुक्म दे दिया कि मंदिर नहीं बनावेगें। यह वोही नाजिम थे कि श्री छोटेलाल पिरोहित की हवेली का बुर्ग चेजारों ने तोड़ा था, खुद मौके पर थे। मगर डर कर हवेली की छत पर छिप गये थे। श्री केदार-नाथ जी नेपालिया ने मुचलके देने से इन्कार कर दिया, जैल जाने को तैयार हो गये। मगर श्री सांवलरामजी टीवडे वालों के समझाने पर अपील करने के आश्वासन पर मुचलके दे दिये। श्री सांवलराम जी टीवड़ेवाले और मैं हनुमान प्रसाद वावलिया वकील, नकल हुक्म लेकर जयपुर गये। श्री फिदा अली खां जी दिवान के आगे अपील की गई। मुन्शी हसमत अली जो दिवान जी के बहनोई थे का वकील किया, सात दिन की तारिख लेकर दस्ती नोटिस लेकर आये। गफुर शाह जी तामिल करवाई पेशी पर जयपुर पहुंचे। श्री फिदा अली जी दिवान झुन्झुनू में नाजिम रह चुके थे मेरे पडोसी रह चुके थे। गफूर शाह कई माला पहनते कोडियों, की कांच की, कई रंगों की झगड़ालू किस्म के इन्सान थे। पेशी हुई, श्री केदारनाथ जी के वकील ने बहस शुरु की

मस्जिद श्री फतेह मौहम्मद पीरज़ादा की है, उनकी कोई शिकायत नहीं है और न किसी दुसरे मुसलमान की शिकायत है यह तो अपने स्वार्थ के लिए और भड़काने के लिए मुकदमा किया, श्री दिवान जी गफूरशाह पर बरस पड़े, मैं जानता हूं झुन्झुनू में था उस वक्त भी दंगा फिसाद कराने में आगे आता था। श्री फिदर अली खांजी दिवान ने अपील मंजूर करली मंदिर बनाने का हुक्म दे दिया, मुचलके का हुक्म मंसुख कर दिया, गफूरशाह के दो हज़ार के मुचलके ले लिये कि मैं मंदिर की तामिर में दखल नहीं दुंगा। न में दंगा फिसाद करूंगा। हिन्दु नाजिम ने तो मंदिर बनवाने के मुचलके लिये थे। और मुसलमान दिवान ने तो मंदिर बनाने में कोई बाधा न डाले इसके मुचलके लिये थे। श्री केदार-नाथजी नेपालिया ने दुगने रुपये लगाये। आज मन्दिर बने संतालीस वर्ष हो गये। कोई दंगा फिसाद नहीं हुवा। समय पर अजान और नवाज होती है समय पर आरती पूजा। पीर फतेह मोहम्मद तो होलियों के दिनों में गोठ घुघरी में शामिल होते थे होली खेलते थे श्रीलालजी जगन्नाथजी टीवडे वाले तो हर वक्त पीरजी को साथ रखते थे वोह बड़े रंगोले और टेनिस के खिलाडी थे झुन्झुनू में कोई साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुवा, भाई भाई की तरह रहते है। अगर कोई छोटी मोटी समस्या खडी होती है तो आपस में वातचीत करके सुलझाती जाती है। श्री सांवरमल जी टीवडे वाले वडे रंगीले आदमी थे। हद और गैर निकलवाने खुद सामिल होते थे।

हम दोनों भाई हैं फर्क हैं थोडा सा करने में।
अदू की शरारत आग भडकादी जो सीने में।
भला काशी और कावे में फर्क क्या है आरिफ।
जिन्हें देखा था मथुरा में वोह ही निकले मदिनें में।

श्री केदारनाथजी नेपालिया, चिड़ावा निवासी श्री सेठ दुलीचन्द कक-राणिया जो भारत में शौकीन अमीर रईस थे कलकत्ते रहा करते थे। कलकत्ता की मशहुर कलाकार गौहर आपके नौकर थी। उनके यहां ब्याहे थे। एक बार झुन्झुनू में टीबड़े के मौहल्ले में कविवर नानूलाल की पार्टी का खेल हो रहा था, नल दमयन्ती का, दुल्ला, खिलाड़ी दमयन्ती बना हुआ था, चन्द्र जी नल, श्री केदारनाथ जी टीबड़े वाले तमाशा देख रहे थे। उनको जनानी पौशाक पसन्द नहीं आई घर से अपनी औरत का जरीदार घाघरा और वढीया ओडना मंगाकर उढाया और अपनी औरत का जेवर सोने की तागड़ी आदि पहराई, फिर तो खेल की रंगत ही ओर हो गई, आप गाने के भी शौकीन थे। दुल्ला ने गाया "पिव भूख सताई जच्चा कुम्हलाई भोजन दीजियं। उन गानों में ताल सूर राग रागनी का वहुत ध्यान रखा जाता था। श्याम कलयान, मांड,दुर्गा. केदारा और रात के दो वजे बाद सोरठ शुरु होती थी सोहनी आसावरी और प्रभाती भैरवी गाकर खेल खत्म होता था अब तो फिल्मी तुकबंदी गानों ने राग रागनी का सत्यानाश कर दिया। कभी-रेडियो पर ठूमरी और दादरा सुनने को मिलता है। नल दमयन्ती का खेल रात भर चला चार वजे श्री गंगासुख जो व्यास रांझा और चिड़ावा का वजीरा तेली ने हीर रांझा का खेल शुरु कर दिया, दिन निकल आया, ऐसे थे श्री केदारनाथ जी टीबड़े वाले (नेपालिया) अब तो इस वंश में श्री विनोद कुमार पुत्र श्री वैजनाथ जी टीबड़े वाले है जो हैदराबाद रहते है। करोड़पति पार्टी है उधर और कुटम्ब पाल है झुन्झुनू आते जाते है। धर्म पुन्य करते है।

※

मुसीबतों से टक्कर लेने वाले :--

श्री मुकन्दराम गाडिया

श्री मुकन्दराम जी गाडिया वडे धीर और वीर आपत्तियों से टक्कर लेने वाले महा पुरूष थे। आपके जवान कमाऊ पुत चले गये। आप विपत्तियों को झेल कर गृहस्थ की नाव साहस से चलाते रहे भजन सुमरन करते रहे। झुन्झुनू में श्री वालाजी के वंध्रे पर एक सुन्दर शिवालय वनाया है आपके पोते पड़पोते अच्छे और धार्मिक वृति के है।

उजड़ा खेड़ा फिर वसे निर्धनिया धन होय,
दुख सुख या संसार में सब काहू को होय,
ज्ञानी काटे ज्ञान से मुर्ख काटे रोय,

श्री रामेश्वरलाल जलेबीचोर

श्री राणी सती दादी झुन्झुनू एक भक्त से वहुत परेशान थी। रात को तीन बजे ही जा कर द्वार खटखटाते थे वोह पोह माह का कड़ाके का जाडा हो चाहे जेठ वैशाख की काली पीली आंधी हो चाहे सावन भादू की घटा टोप वर्षा हो, यह क्रम चला पचास साल तक सतीजी वहुत खुश हो गई और सुयोग्य वेटे पोते दे दिये। उन भक्त का नाम था श्री रामेश्वरलाल पुत्र श्री देवीदत्त जी जलेवीचौर झुन्झुनू ।

झुन्झुनू, शेखावाटी की राजधानी है

लोक मान्य तिलक मालवीय गांधीजी।
भारत स्वतंत्र होय लग्न सोधी घर गये"
घर गये धरा में धीर बड़े बड़े वीर योद्धा
भगतसिंह सुभाष साथ शहीद कई तर गय
तर गये गोपीराम प्रतंत्रता सागर में
आदर के साथ सारी प्रजा मन भर गये
भर गये गीता से ज्ञान धर्म की वनाय नीती
पंडित जवाहरलाल सिर राज तिलक कर गये

× × × × × ×

मच्छ के आकार देखो नगर यह हर वार देखो
राणी सती दरबार देखो मंदिर नगीनू है
डिगरी कॉलेज अस्पताल हाई स्कूल देखो
वालिका विद्यालय पुस्तकालय रंग भिन्नू है
गौपाल गौशाला देखो चोहटा मैदान देखो
कई धर्म स्थान वीड़ वापी देखो तीनों है
हीरे पुखराज लाल मोतीयन मां मीनो देखो
गोपीराम भान माय झुन्भुनू कदीमू है
शहर की वसायत देखो गिरवर शोभायत देखो
कीले महलायत डिस्ट्रीक्ट रंगीनू है
टिला और मनशा देखो संत आश्रम जमाये देखो
दरगाह कमरदी शाह मनोहर मदिनू है
कपड़ा व्यापार देखो गल्ला वेशूमार देखो
छावनी बाजार देखो गांधी चौक भिन्नू हैं
पेरिस को टकड़ो यो विलायत को नमूनू है

सेठ बिलासराय जी खेतान

झुन्झुनू में सेठ बिलासरायजी खेतान के पुत्र का विवाह था, दान वीर श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला पधारे थे। झुन्झुनू में दो कलाकार थे एक खेता जो सांरगी अच्छी वजाता था, दूसरा लादू जो ढोलको वजाने में उस्ताद था। खेतानजी की हवेली पहूंचे और कहा बिड़लाजी को भजन सुनाना चाहते हैं। कलाकारों का मान सम्मान किया जाता था। हवेली में गये और अदव से झुक झुक कर राम रमी की, सुनाने की आज्ञा मांगी। विड़लाजी तो गुण ग्राही थे। सुनाने की आज्ञा दी, कई अच्छे अच्छे भजन सुनाये।

जपले जपले रे मनवा निराकार निरधार निरंजन निर्गुणजी,
शकल सृष्टी नाश मान है ज्ञानी ज्ञान लगावे
मुर्ख घर घर भटकत डोले ब्रह्म ज्ञान ना पावे
एक समय बालों की पुतली जा दरियावां नहाई
नहावत नहावत जल में घुल गई "में" "तूं" चीज न पाई।

विड़लाजी ने कलाकारों से पूछा यह पद किसके वनाये हुवे है तो खेता ने कहा कि झुन्झुनू में एक महात्मा पीर गौस मौहम्मदजी हुवे है उनके यह पद वनाये हुवे हैं। और भी कई भजन उनके वनाये हुवे हैं। पदों को सुनकर वहुत खुश हुवे। दोनों को ग्यारा ग्यारा रुपया और एक एक धोती जोडा इनाम में दिये। सेठ बिलासरायजी खेतान ने दोनों को केशरीया साफे बंधवाये। ऐसे थे कलाकारों के गुण ग्राही।

झुन्झुनू में कई विभूतियां अव भी है। सारस्वत कुल भूषण पं० शिवनारायणजी व्यास, जो रामायण के वयोवृद्ध व्यास हैं। महात्मा गांधी जव रघूपति राघव राजा राम सवको सुमति दे भगवान की प्रार्थना करते थे, तो व्यासजी अपने मधुर कंठ से गाते थे तो गांधीजी

बहुत खुश होते थे। व्यासजी के माता-पिता का प्लेग में एक साथ देहान्त हो गया था। न कोई भाई बहन न कोई नजदीकी रिश्तेदार। प्रभु की लीला अपार है। व्यासजी काशी जी में गंगाजी के किनारे बैठे थे। पं० कान्तिचंद्र व्यास और उनकी पत्नी गंगा स्नान करके बाहर आये तो इस बालक को अकेला देख कर उसकी हस्त रेखा देखी, वोह ज्योतिष के भी पंडित थे, बालक को अपने घर ले गये। व्यासजी के कोई सन्तान नहीं थी। वोह काशी के बडे व्यासों में रामायण के बडे विद्वान थे संपन्न थे। बालक को पढा लिखा कर रामायण का व्यास बना दिया विवाह कर दिया अपनी चल अचल संपति का मालिक बना दिया। आश्चर्य तो इस बात का है कि चार साल का बालक काशीजी में गंगा किनारे कैसे पहुंचा। परम पुज्य पं० श्री भावरमलजी शुक्ल झुन्झुनू में इनको जब लाये तो गांव में हर्ष की लहर दौड गई। आप परम विद्वान भक्ति रस के पंडित है। विडला भवन नई दिल्ली में जहां महात्मा गांधी शहीद हुवे थे, में वहां गया बाबू जुगल किशोरजी विडला और महात्मा गांधी के साथी मौजूद थे।

गुजरात के बडे नेता डॉ० श्री जीवराजजी महत्ता और पं० शिवनारायणजी व्यास भी बैठे थे। मेने विडलाजी से नमस्कार की, व्यासजी ने खडे होकर मेरे चरणों में पडकर प्रणाम किया, श्री बिडलाजी को आश्चर्य हुआ, जिन व्यासजी को मैं खडे होकर नमस्कार करता हूं, वोह पं० हनुमान प्रसाद बावलिया वकील झुन्झुनू के चरण छूकर प्रणाम करते है। यह भी कोइ हस्ती है। फिर डा० जीवराज जी महता से विड़ला जी ने कहा यह हमारे देश के वकील है फिर विड़ला जी ने मेरे से फरमाया अपनी शेखावाटी में शिवाजी कौन हुवे थे। मैं ने उत्तर दिया महाराजा श्री शार्दुलसिंह जी शेखावत, बड़े खुश हुवे फिर तो दिल्ली घर हो गया, विड़ला मंदिर के विश्राम घर में ठहरना, खाना,

पीना सब वहीं होता था।

प्रयाग राज का वड़ा पिछला कुम्भ मेला था, मैं गया श्री व्यास जी ने खड़े होकर प्रणाम किया, वहां आसन बिछाने की जगह नहीं थी। उसी वक्त सात सौ रूपये में जगह और छोलदारी लगवादी एक पलंग व्यास जी का दुसरा मेरा एक सौ कई ब्राहमण काशी जी से आये थे, जो व्यास जी के यज्ञ में शामिल थे। पंद्रह दिन रहे। कथा प्रवचन भजनों का आनन्द लिया। एक बार कार्तीक में, मैं काशीजी चला गया १५ दिन व्यास जी के मकान पर रहा, वड़ी अतीथी सेवा हुई व्यासजी कथा प्रवचन कराते है, सैकड़ों ब्राहमण पुजा, हवन आदि कराते है। श्री विश्व नाथ जी के मंदिर के पास, कृपात्री जी और जगत गुरु शंकरा चार्य जी भी पधारे थे। यज्ञ की समाप्ती पर हाथीं पर चढ कर व्यास जी का काशी नगरी में जलूस निकाला जाता है हजारों स्त्री पुरूष कई वैंड वाजे धूम धाम से आनन्द मंगल होता है व्यासजी की धर्म पत्नी भी लक्ष्मी हैं, चारों पुत्र बिद्वान हैं। व्यास जी की महानता का में वर्णन नही कर सकता। मैं उनका आभारी हूं।

झुन्झूनू में पं० भूरामल जी महमिया शास्त्री जो भागवत के परम विद्वान है, अठारह हजार श्लोक याद है। वाल्मिकी रामायण और गीता के तो एक एक अक्षर याद है ६० साल तक पंडताई की है कई विद्यार्थी तैयार किये है। आपके पुत्र श्री रघुनंदन महमिया भागवत के परम विद्वान है। शास्त्रीजी वृद्ध हो गये, दिखाई कम देती है। दिन रात भगवत भजन में मस्त रहते है। राज पंडित श्री प्रहलादराय जी महमिया संतोषी पंडित है। शिव भक्त है, लोक प्रिय है।

दवंग पंडित श्री रामनिरजन जी जोशी ज्योतिष के प्रकाण्ड पंडित है। सनातन धर्म के झंडा ऊंचा उठाने वाले है। श्री परसराम जी की जयन्ति झन्झुन में मनाने का श्रेय आपको ही है। वयोवृद्ध श्री वजरंगलाल जी

शुक्ल ब्राह्मणों के गुरू है परम विद्वान है ।

श्री श्यामसुन्दर जी पिरोहित शिव भक्त और परोपकारी है। आपने एक अतिथी भवन वनाया है। जो हर गरीव और अमीर के काम आता है। जिसमें कई विवाह और सुहाग थाल सूहाग रातें हो चुकी है। श्री मालोराम जी चौमाल आपके साथी है जो हर गरीव अमीर की सेवा करते है ।

पर हित बसे जिनके मन माहीं
उनको जग दुर्लभ कछु नाहीं

श्री नाहरसिंह शेखावत

श्री नाहरसिंह जी शेखावत कांग्रेस में आये आपका गांव फतेहसरा खालशा कर लिया गया, और जमीन जायदाद भी हाथ से निकल गई। कष्ट भी वहुत सहन करने पड़े। मगर आप आगे ही वढ़ते गये। आपके साथी पं० केशर देव मिन्तर कदम दर कदम मुसीवतो में आपके साथ रहे आपकी मदद से ही श्री राधेश्याम जी मुरारका कई वार एम० पी० वने। श्री शेखावत में यह गुण था वोह अपने साथियों पर भरोसा करते थे मिन्तर निर्भय होकर मैदान जंग में कूद पडते थे। श्री नाहर-सिंह जीं का स्वर्गवास के वाद भी मिन्तर जी श्री भंवरसिंह शेखावत के साथ रहे मगर स्वार्थी लोगों ने श्री भंवरसिंह और श्री श्री मिन्तर जी में मत भेद पैदा करा दिये जिससे स्थानीय कांग्रेस में फुट पैदा हो गई। जन सेवक श्री केशर देव जी को धक्का लगा। स्वर्ग वासी हो गये।

वनी जिसकी विगड़ती है
वोह चकना चूर होता है।

श्री भंवर सिह ग्रौर श्री गोपालसिह पुत्रान श्री नाहर सिह जी जन सेवक है सादा मिजाज है। इन्दिरा जी की गिरफ्तारी पर मैं उनके साथ जेल में रहा था। नव युवक कांग्रेसी श्री नरपत सिह पंच झाझड़ ग्रौर कल्याण सिह एडवोकेट झाझड़ भी हमारे जैल के साथी है। दोनों ही महा पुरूष है।



जन सेवक वासोतीया परिवार नवलगढ

श्रीराम जी वासोतीया नवलगढ के हीरो थे। आप छोटे वड़े गरीव अमीर के दुख सुख में काम आते थे। आप पास से खर्च भी कर देते थे। ग्राप दीदारू सौम्य मूर्ती थे। राजस्थान विधान सभा और ज़िला प्रमुख भी रह चुके थे। इमानदारी से काम किया था, ग्रापके प्रयत्न से श्री राधेश्याम जी जौशी ने श्री रामदेव रा नवलगढ में लाखों रूपये लगाये थे। दोनों ही सज्जन छोटी उम्र में स्वर्ग वासी हो गये। भगवान उनकी ग्रात्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्री सांवरमल जी वासोतीया विधान सभा राजस्थान के मेम्वर रह चुके है आप चीठी नाम का पत्र भी नवलगढ़ से निकालते है। जन सेवा करते है। श्री भंवरसिह जी शेखावत कांग्रेस के १९८१ के चुनावों में तमाम परिवार ने मरना माड दिया था, जीताने में भागीदार है।



शेखावाटी का रंगीला शहर चिड़ावा

चिड़ावा में कई नामी विभुतियां हुई है। दान वीर सेठ सूरजमल शिव प्रसाद झुन्झुनू वाले, जिनका संस्कृत विद्यालय आज भी चलता है। पं० सूर्यकान्त झा योग्य आचार्य है।

सेठ श्री दुलीचन्द जी ककराणीया आप शौकिन अमीर सेठ थे। एक वार उन्नाव के चौवे इत्रफरोस ने कहा कलकते में कोई इत्र लेने वाले हो नहीं मिले सेठ जी कहा तमाम पेटी की क्या कीमत है तो कहा ३०० सौ रुपये सेठजी ने कहा हमारे घोड़ो पर छिड़क दो। चौवे जी ने समझा मजाक कर रहें है। मुनिम ने तीन सौ रुपये दे दिये। सेठ जी वग्गी में वैठ कर वाजार में गये, वडा वाजार में खुशवू ही खुशवू हो गई वाइस राय की सवारी आ रही थी। सेठ जी की वग्गी एक तरफ खड़ी थी। वाइस राय की मेम सेठ जी की वग्गी में जाकर वैठ गई। और कहा मेरे को वाइस राय भवन में पहुंचावो तीन दिन वग्गी घोड़े वही रहे राजा श्री अजीतसिह जी खेतड़ी को वाईस राय के दरवार में कुर्सी दिलाई थी, जयपुर महाराजा की भी एक कुर्सी थी। कलकते की प्रसिद्ध गायिका गौहरजान सेठ जी की नौकर थी। एक वार वावू जुगलकिशोर जी विड़ला ने पुछा सेठ जी अमीर किसको कहते है तो कहा।

राग वाग पौशाक मद कविताओ तस्वीर।
इत्ता परीक्षा जो करे तांको नाम अमीर।।

विड़ला जी खुश हुवे। चिड़ावा में पं० गणेशदास जी महात्मा हुवे है। वोह कभी सांप कभो सांड वन जाते थे। एक वार वावू जुगल किशोर जी विड़ला महात्मा जी के पास जा रहे थे रास्ते में एक काला नाग फण उठाये घूम रहा था, उसके सर पर सोन चीड़ी वैठी थी विड़ला जी ने यह वात श्री गणेशदास जी से कही तो महात्मा जी ने कहा यहां से सीधे ही कलकते चले जावो विड़ला जी कलकते चले गये और सट्टे में मालो माल हो गये।

महाकवि श्री नानूलाल राणा भी चिड़ावा में ही हुवे है। आपने चौवीस (खेल) पुस्तकें रची है। विराट नरसिंह जी का भात, नल दमयन्ति, ढोला मारु छोटा कथ आदि, आप अनपढ थे लिखना पढना नही जानते थे। मौजुदा जमाने के कवि उनकी कविताओं का मुकावला नहीं कर सकते वड़े दुख की बात है कि रेडियो पर या पत्रो में उसका प्रचार नहीं हो रहा है। चिड़ावा निवासीयों से प्रार्थना है कि उनके साहित्य को जिन्दा रखें। उनके खेलों को नया छपवाये। राजस्थान में सर्वश्रेष्ठ साहित्य है। चिड़ावा में अव भी महा पुरूषो की कमी नही है।

मास्टर श्री हजारीलाल जी अरडावतीया, जन सेवक राजस्थान असेम्बली के विधायक है, पहले आप विधायक रह चुके है। वैध कन्हैयालाल जी भेडा श्री राधा किशन जी पिरोहित छोटेलाल दर्जी कलाकार जैसे महा पुरूष चिड़ावा में है। गुरूओ की कृपा से नानूलाल कवी हुये थे। श्री नानूलाल कवी को सरस्वती का वरदान था।



जय नारी

इन्दिरा तू इन्दिराणी है भारत की महाराणी है
निज ब्रह्माजी की पुत्री है मानों देवलोक से उतरी है

× × × ×

इन्दिरा गांधी है तेरे साथ कुल हिन्दुस्तान
कौम की ताकत है तू तेरे ईरादे है जवां
देश रक्षा के लिये तूने उठाये है कदम
तू वतन की है मुहाफिज तू वतन की पासवा
दुशमनाने मुल्क की नाकाम करदी साजीशें
तेरी हर तदवीर है अव कामयावों कामरा
फितना अंगजों के चहरों से उलट डाली नकाव
हो गइ तखरीव कारों की हकीकत सव अयां
आज हर अहले वतन कहता है खुश दिल जोश से
इन्दिरा गांधी को हिम्मत से वढेगा कारवां

× × ×

अव आवरु ऐ कौम तेरे हाथ है इन्दिरा
हर एक कदम कौम तेरे साथ है इन्दिरा
भारत का है हर वेकस व मजवूर तेरे साथ
मजलूम तेरे साथ है मजवूर तेरे साथ

× × ×

ऐगूलशन ने भारत की नये दौर की मेमार
तेने ही किया है सोइ हुइ कौम को वेदार

हैरान है जो भी है तुझे देखने वाला
औरत है मगर हिम्मत व जूरात में हिमाला
बचपन ही से सांचे में सियासत के ढली है
तू नेहरू व गफार की गोदों में पली है
अनमोल जवाहर है तेरे अनमोल हैं मोती
किस बाप की बेटी है तू किस दादा की पोती
कमजोरों की तू राहेंनूमा बनके उठी है
सुखे हुवे खेतो पर घटा बनके उठी है
ईसाइ हो सिख्ख हो या कोइ हिन्दू के मुसलमां
हैं तेरी निगाहों में बराबर सब इनसां
जरदारों की गरदन को झूका देने की खातिर
और फिरका परस्तों को मिटा देने की खातिर
हालात को तू एक नये मौड पर लाई
उम्मेद को एक शमां नई तूने जलाई

⊠ ⊠ ⊠

एक बात कहनी हैं हमको चुपके चुपके आप से
मानो या न मानो यारो बेटी बढ गई बाप से

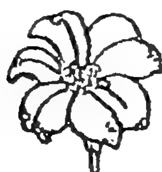


वक्त का तकाजा

अब वोह वक्त आ गया है कि भारत के विधान में संशोधन किया जावे, भारतीय संस्कृती के अनुकूल कानून कायदे बनाये जावे, अंग्रेजों के जमाने के कानून बदले जावे। दण्ड व्यवस्था कड़ी होनी चाहिय फांसी की सजा सख्ती से लागू की जावे, जमानत अन्तरीम जमानत बंद होनी चाहिये। रिश्वतखोरी, चौर बाजारी बन्द होनी, चाहिये स्टे आर्डर रिट अदालतों के अधिकारों में तरमीम होनी चाहिये, तीन महिने मुकदमें में फैसला होना चाहिय। मजिस्ट्रेटो की संख्या बढाई जावे। ऊपर की अदालत का फैसला न बदलदे जमानत न ली जावे। इस वक्त अस्सीफी-सदी कानून मूलजिमों के हक में है। इनको बदला जावे। फिर तो जुर्म बहुत कम होगें। अदालतों और हकुमत के मजाक उडाने वालों की आंखें खुल जावेगी।

× × ×

पुलिस की संख्या बढाई जावे, इनको ज्यादा अधिकार दिये जावें। इमानदार पुलिस अफसरों की उन्नती की जावे। मजिस्ट्रेटो को अधिक अधिकार दिये जावे। मजिस्ट्रेटो और सिविल जजो के दिवानी मामले न दिये जावे, दिवानी मामलों के लिये अलेदा अदालते खोली जावे।



लौह पुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल

लौहपुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कलकत्ता की विशाल सभा में फरमाया था कि मैं भारत के राजा महाराजा नबाबों का जन्म जन्मान्तर तक ऋणी रहुंगा। जिन्होने भारत को मजबूत बनाने में और एक सूत्र में बांधने के लिए अपने पुस्तेनो राज पाट को हंसते हंसते भारत माता के चरणों में अर्पण कर दिये। कितना बड़ा त्याग है संसार के इतिहास में एसी मिशाल मिलना कठीन है। छः सौ कई बाग्रखतयार रियासते ठिकानोदारी जागीरदारी जमीदारी तालूकदारी विश्वदारी माई के लालों ने देश भक्ति का सबूत दिया है। असली देश भक्त तो यह ही सज्जन है आज के पचास साल बाद इनके त्याग और देश भक्त को और भी प्रसंशा की जावेगी। कई भाई यह कहते है कि डर के मारे राजपाट छोड़ दिया। यह कहना सरा सर हठ धर्मी है मुकाबला भी कर सकते थे। सब के पास फौजी ताकत थी, अंग्रेजों से इनका मुआहीदा था, सब आज़ाद थे। खुदकशी भी कर सकते थे। मि० चर्चिल ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ने कई चालें भी चली थी। मगर असफल रहे महाराणा उदयपुर के महल के बंद कमरे में, सरदार बल्लभ भाई पटेल ने वोह मार्मिक भाषण दिया। छोटे छोटे देशों ने ने भारत पर वर्षो तक राज किया, भारत माता का अपमान किया, राजा महाराजा आपस में ही लड़ते रहे। आज महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी की आत्मा रो रही है सब राजा महाराजाओ के दिल भर आये। देश भक्ति में विह्बल हो गये। नेत्रों में आंसू भर आये सब ने कह दिया कि तमाम भारत हो हमारा है। और हम भारत माता के सपूत है। यह है त्याग यह देश भक्ति। सरदार पटेल ने, जैसे अर्जुन

का मोह श्री कृष्ण जी ने दूर किया था वैसे ही राजावों का राज मोह त्यागने को मजबूर कर दिया था। धन्य है सरदार पटेल आज़ादी के ३४ साल में जो नये किस्म के जागीर दार बने है, लाखों करोड़ो रुपये इक्ठ्ठे कर लिये है मुरबे बेसीमा काश्त की जमीन जगह जगह बंगले कोठी मोटरे रोड़वेज बेमेदा सोना चांदी इक्ट्ठा कर रखा है जिसके ऊपर देश भक्ति का तुर्रा। आशा की किर्ण हर दिल अज़ीज भारत माता के लाडले देश सेवक श्री राज़ीव गांधी सरदार पटेल का सा ज्ञान इन नये जागीरदारो सरमायादारो को देख कर सीमा से अधिक चल अचल सम्पति के त्यागने का मोह दूर करेगें। नहीं तो भारत की नंगी भूखी जनता इनको भी निगल जावेगी।



भारत की आजादी में वकीलों का योग

भारत की आजादी में सब से ज्यादा योग वकीलों का रहा है। जैल गये जायदाद नीलाम कराई यातनायें सही। गुजरात में श्री मोहन दास कर्मचन्द गांधी सरदार वल्लभ भाई पटेल, बम्बई में श्री भूला भाई देसाई राजस्थान में श्री मुकुट विहारीलाल भार्गव, बाबा हरिश चन्द्र देहली में श्री आसफ अली, पंजाब में श्री गोपीचन्द, श्री ठाकुरलाल भार्गव, उत्तर प्रदेश में श्री पं० मोतीलाल नेहरू, पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० मदन मोहन मालवीय, पं० गोविन्द वल्लभ पंत, बिहार में बाबू राजेन्द्र प्रसाद, बंगाल में श्री चितरंजनदास, मद्रास में श्री राजगोपालाचार्य, आदि सैकड़ो वकीलों ने भारत माता की सेवा की। अंग्रेजो को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। बीज अपने आप को जमीन में मिलाता है तब नया पोधा उगता है। इस वक्त फिर वोह जमाना आ

गया है भारत को जागृत और मजबूत करना होगा। भारत को दुनियां के देशो में अगली पंक्ति में खड़ा करना होगा बुद्धिजीवो की कमी नही है जय जवान जय किसान मजबूत है देश की बागडोड़ श्रीमती इन्दिरा गांधी के हाथों में है, दुनियां के चारों तरफ बारुद बिछी हुई है। नाम मात्र का पर्दा बिछा हुवा है। भारत जो आगे बढ रहा है तरक्की कर रहा हैं पश्चिमी देशों की छाती पर से सांप निकल रहा है। पाकिस्तान को अपना जमूरा बना रखा है। मदारी नचाता है वैसे ही नांच रहा है। अगर अमेरिका पाकिस्तान का सच्चा दोस्त होता तो आज तक छः बार चुनाव हो जाते। चौतीस साल में एक भी चुनाव नहीं कराया यह शर्म की बात है। पाकिस्तान की जनता की छाती पर फौजी लट्ठ लिये बैठा है। पाकिस्तान के देश भक्त जैलों में पड़े है अमेरिका के इशारे पर हकूमत चल रही है लड़ाई के लिए अनाफ सनाफ हथियार दे रहा है। भूल से या जान पूछकर अणुबमों की लड़ाई छिड़ गई तो दो घण्टों में कयामत हो जावेगी। दुनिया का ही खातमा हो जावेगा। पाकिस्थान छल छीद्र दगा बाजो की बातें कर रहा है।

यह नही सौच रहा है कि १९७१ की लड़ाई चौदह दिन चली थी पूर्वी पाकिस्तान का दुनियां के नक्शे पर से नाम निशान गायब हो गया था। ९३ हजार फौजें हज़ारों फौजी अफसर छः महिने तक लड़ सकते थे इतना लड़ाई का सामान था, सब पर भारत की सेना का क़ब्जा हो गया था, दयालू भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने क्षमा कर दिया फौजों को वापस कर दिया था।

अब अगर श्रीमती इन्दिरा गांधी नाहरी का फिर पूछ दबाया गया तो दुनियां के नक्शे में से पाकिस्तान का नाम ही गायब हो जावेगा। पंजाब पंजाब में काशमीर काशमीर और सीमा प्रान्त भारत में बलौचि-

स्तान और करांची अफगानिस्तान को बन्द्रगाह का सख्त जरुरत भी है, अमेरिका पाकिस्तान को इजराईल बना रहा है। इसमें कामयाव नहीं होगा अवल तो पाकिस्तान की जनता नाराज है। दुसरे पाकिस्तान। रूस भारत चीन साम्यवादी देशों से घीरा हुवा है पूजिपती देश अमेरिका का पिठू टिक नहीं सकेगा। १९७१ की लड़ाई १४ दिन चली थी, इस वार तो सात दिनों में ही राम नाम सत हो जावेगी।

पाकिस्तान का भला इसी में है चुनाव करावे चुनी हुई सरकार अपने पड़ोसीयों से भाईचारा व्यापार आने जाने पर पावन्दी हटे भाई-चारा वढावे। पाकिस्तान को खुशहाल हरा-भरा वनावे। अपने घर का मालिक दुसरे देश को न वनावे। भारत से दोस्ताना ताल्लुक व . . लड़ाई झगड़े की वाते वन्द करे।

दुश्मनी जमकर करो पर इतनी गुनजायस रहे
फिर कभी जब दोस्त वन जावे तो शर्मिन्दा न हो

× × ×

हम दोनों भाई है फर्क है थोड़ा सा करीने में
उर्दू की है शरारत आग भड़का दी जो सीने में

× × ×

भला काशी और कावे में फर्क क्या है ऐ आरिफ

× × ×

जिसे देखा था मथुरा में वोही निकले मदीने में



हरदिल अजीज मुख्यमंत्री माथुर जी

श्री शिवचरण जी माथुर राजस्थान के मुख्य मंत्री बने तो जिला झुन्झुनू में दिवाली का सा त्यौहार मनाया गया था आप सुलझी हुई तबीयत के रईस है खुश मिजाज खुश अखलाक अगम बुद्धि है श्रीमती इन्दिरा गांधी के विश्वासपात्र है, कायस्थ की खोपड़ी विधाता ने फुरसत से बैठकर घड़ी थी। गांधी जयन्ति पर आप सपरिवार झुन्झुनू पधारे थे।

राजस्थान का सौभाग्य है, माथुर साहब जैसे मुख्य मंत्री मिले। बीजली, पानी, राजस्थान में बहुतायत से मिलने लगे तो कल कारखाने बन जावेगें। यह भूमि उद्योगपतियों की। है किसान और जमीन भी अच्छी है।

उन निगाहों से कल जो बिजली गीरी
अहले दिल्ल चिल्ला उठे बी०बी० गीरी
यह वक्त की आवाज है
यह जिन्दगी का राज है
मिलकर चलो मिलकर चलो

झुन्झुनू में कला केन्द्र नहीं है न कन्या पाठशाला में कोई कलाकार है

१५ अगस्त २६ जनवरी या और उत्सव में प्रार्थना की जाती है बड़ी हंसी होती है। श्री नागरमल सोनी कलाकार को ५८ साल होने से हटा दिया गया था। कन्या पाठशाला में तो बड़ी उम्र का गायक ही

ठीक है आशा है इस पुराने कलाकार को फिर मान दिया जावें। श्री प्रभूदयाल कुमावत ने प्राईवेट कला केन्द्र खोल रखा है उनको सहायता दी जावे जब तक नया कला केन्द्र न खोला जावे। कुमावत जी ४० साल से सेवा कर रहे है।

अन्धा है वोह देश जहां संगीत नहीं है

× × × × ×

तीन उपाय

सत्य वचन आधीनता पर त्रीय मांत सम्मान
इतने पे हरि ना मिले तो तुलसीदास जमान

चार उपाय

संयम सेवा साधना सत पुरुषों का संग
यह चारों करते तुरन्त मोह निशा को भंग

छः उपाय

संध्या पूजा यज्ञ तप दया सु सात्विक दान
इन छः के आचरण से निश्चय ही कल्याण

सात उपाय

इस असार संसार में सात वस्तु है सार
संग भजन सेवा दया ध्यान देन्य उपकार

"चौदह विद्या निधान"

राग रिसायन नृतगत नटवाजी वैदंग
तुरी चढण व्याकरणगत ज्योतिष जाने अंक
जल बिरवो रथ हांकवो चितचौरी,
ब्रह्मज्ञान, बाण चलावण धीरज वचन चौदह विद्या निधान

गुरू नानक शाह

मीठा बोलन नीव चलन पर अवगुण ढक लेत
तीनू चंगा नानका चौथा हाथ से देत

× × × ×

खालसा बुनियाद है जग में हकव इन्साफ की
हर घड़ी फैलेगी हर सू खालसा की रोशनी
खालसा महबूब मेरा खालसा ही जान,
खालसा की ग्रस पर सब कुछ मेरा कुर्बान है।

× × × ×

कहते है नानकशाह जिन्हे
वोह पूरे है आगाह गुरू
वोह कामिल रहबर जग में है
यों रोशन जैसे महा गुरू
मकसूद मूराद उम्मेद सभी बतलाते है
दिल स्वाह गुरू
नित लूतफ व कर्म से करते है
हम लोगों का निर्वाह गुरू
इस बख्शीश के इस अजमत के है
वावा शाह गुरू

१९८० में लोकसभा के चुनावों में जिला झुन्झुनू राजस्थान से श्री शीशराम ओला को कांग्रेस (इ) का टिकट मिला था। चुनाव के प्रारम्भ के बाद कुछ पद लिखे थे —

चरणसिंह के चरण उखड़ गये जगजीवन हो गये बेहाल।
इन्दिराजी ने मात देदई दोनों भाई भूल्या चाल।
जाट बदी के खर पर चढ़कर शीशराम को दिया हराय।
खुद भी हाथ मसलता रह गया सारी अक्ल देई गुमाय॥
ओलाजी फिर घोड़ी चढ़सो देवी इन्दिरा देसीं मान।
जाटां न पछताना पड़सी दुनियां में हो गया बदनाम॥
रवि रंजनी भेला नहीं रहसी यह है वेदों का बोल।
देवीजी के आते ही भैंरुजी का बिस्तर गोल॥
एक चौधरी हंसकर बोल्यो पंडित मत जाइये बाहरले गांव।
ऊंट, जाट को नहीं भरोसो फिर है जाडे को काम॥



झुन्झुनू में गोयनका सागर

झुन्झुनू में मीठे पानी के कूवे इने गिने थे। जनता और जानवरों को पूरी तकलीफ थी। सेठ जगन्नाथजी गोयनका अपनी मातृभूमि झुन्झुनू में वर्मा से आये। पानी की तकलीफ महसूस की। संवत् १९९० में नगर से उत्तर-पश्चिम बिसाऊ के रास्ते पर गोयनका सागर बनाया। मेहनत की कमाई का पैसा था। गंगाजल जैसा मीठा पानी निकला। नगर में पानी के नल लगाये, कई जगह जानवरों के लिये खेळ बनाई। अड़तालिस साल से जानवर पानी पी रहे हैं। गोयनकाजी को दुआ दे रहे हैं।

सेठ श्री रामनिरंजन जी गोयनका सैंकड़ों साल पहले बर्मा चले गये थे। नया देश नया भेष नई बोली नया कारोबार। अपार दुख सहन करके व्यापार शुरु किया।

आपके पुत्र श्री जगन्नाथजी सहायक बन गये। अच्छा धंधा चलने लगा। सन् १९१८ में बर्मा की राजधानी मांडले में धर के बढिया मकानात, बाग-बगीचा बसवा लिये। श्री जगन्नाथ गोयनका के विद्वान ईश्वर भक्त उद्योगी पुत्र श्री चोथमल गोयनका ने उद्योग में चार चांद लगा दिये। धंधा बढाया धन कमाया।

आपका परिवार ईश्वर भक्त और मिलनसार होने स्थानीय जनता में घुल मिल गये। १९४२ में जापान ने बर्मा पर हमला बोल दिया, बमबारी करदी, गोयनकाजी अपने बाल बच्चों महिलाओं सहित आसाम मणिपुर की पहाड़ियों के रास्ते पैदल जान बचाकर भारत आये। चल अचल सम्पति सब वहीं रह गई। तमाम मकानात बाग बगीचे तहस नहस हो गये। उम्र भर की कमाई से हाथ धो बैठं।

चार साल बाद जापान ने अपनी फौजें हटाली। १९४६ में गोयनका जी फिर बर्मा चले गये। मकानों के ढेर पड़े थे जो बर्मा सरकार ने वापस बतला दिये। दुबारा मकानात बनाये गये। कारोबार शुरु किया श्री चोथमल गोयनका एक बर्माज वृद्धिष्ठ गृहस्थ समाजी के सम्पर्क में आ गये और श्री सत्यनारायण जी गोयनका चूरू के परम मित्र और सतसंगी हो गये जो बर्मा में नामी संतों में हैं। उनसे विपसना ध्यान क्रिया का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

अब तो श्री चौथमल जी गोयनका एक घंटा प्रातः और एक घंटा सायं समाधी लगाते हैं। नैत्र बंद, न हिलना न बोलना, बदन पर

मक्खी, डांस] कोड़ा, मकोड़ा वैठते थे। पता ही नहीं चलता। साधना करने से अच्छे ज्ञानी ध्यानी हो गये। तमाम परिवार ही रोजाना साधना करता है। लाखों रुपये का कारोबार है। धर्म-कर्म के पाबन्द

वर्मा की आजादी के बाद तमाम भारत वासियों को खदेड़ दिया सब कुछ छीन लिया। भारत में वापस आ गये चल अचल सम्पति वहीं रह गई। इतने उतार-चढाव आये परन्तु गोयनका सागर वैसा ही सेवा कर रहा है। पिछले अनुभव से फिर भारत में अच्छा कारोबार कर लिया। श्री चौथमल जी गोयनका देश भक्त और इश्वर भक्त है।

सुनह भरत भावी प्रबल विलख कहे मुनी नाथ।
हानि लाभ जीवन मरण यस अपयस विधि हाथ।।



समाज सुधारक

चौधरी श्री जीवणराम श्री रामेश्वरलाल पूनिया बाग, झुन्झुनू जिले के पुराने कांग्रेसी और समाज सुधारक हैं। आपका रहन सहन सादा है गर है सफाई पसंद और सिद्धान्तवादी आपको मालूम हुआ कि चौधरी लादुराम फतेहपुर जो आर्य समाजी थे। उनके कन्या विवाह योग्य है। श्री लाछूराम जी का स्वर्गवास हो गया था लड़की के पिता रणजीत सिंह जेल में हैं। लड़की के भाई भी नही है। धन दौलत सब नष्ट हो गया था। उस लड़की को श्री रामेश्वरलाल के सुयोग्य पुत्र श्री सुरेन्द्र के साथ विवाह करना तै कर लिया। श्री रणजीतसिंह को फांसी का हुक्म हो गया था, मगर हाईकोर्ट में दस साल की सजा हो गई। पहिले में

लड़ाई हो रही थी। एक आदमी तो मर गया था। अगर श्री रणजीत सिंह बीच-बचाव न करते तो और भी कई आदमी मर जाते। भगदड़ मची, श्री रणजीतसिंह का नाम भी मारने वालो में लिखा दिया। हवन करते हाथ जल गया भलाई का बदला बुराई में मिला।

श्री रणजीतसिंह फरार हो गया। डाकुओं को तो ऐसे आदमियों की जरुरत रहती है। डाकुओं के गिरोह में शामिल हो गया। श्री राम-निवास कुलहरि सांगासी जो श्री रणजीतसिंह का बहनोई होता है। लड़की को अपने घर ले आये। ता० २६ मई १९६४ को शादी मूकर हुई। मैं भी बराती था। श्याम को बारात पहुंची रात्री को विवाह संस्कार हुआ। ता० २७ मई १९६४ को अचानक भारत के निर्माता भाग्य विधाता पं० श्री जवाहरलाल जी नेहरु का स्वर्गवास हो गया। रेडियो सुनते ही रंग में भग हो गया। उसी वक्त बरात रवाना हुई। और देशव्यापी शोक में शरीक हो गये।

उस जवाहरलाल की बेटी है तु ऐ हके नगर।
जिसने अपनी खाक भी करदी नौछावर देश पर।
इन्दिरा गांधी है तू उस आत्मा की रोशनी।
जिसने इस भारत को बख्शी अजसरे नो जिन्दगो।



भजन

कुण जाणे या माया राम तेरी अजब निराली है
यो त्रिलोकी नाथ जाट के वण गयो हाळी रे।

सौ वीघा में खेत जाट के राम भरोसे खेती रे,
आधे में वाया गेहूं चणा आधे में दाना मेथी रे,
विना वाड को खेत जाट के राम रूखाली रे।
यो त्रिलोकी नाथ जाट को वण गयो हाली रे ।।

भूरी भैंस चिमकणी जाट के दो छाली दो नारा रे
विना वाड को वाड़ो जाट के बांधे न्यारा २ रे
चोर आवे जद चक्कर काटजा ऊबो देख रे
यो त्रिलोकी नाथ जाट को वण गयो हाळी रे।

बाजरे की रोटी खावे उपर घी को लपको रे
पालक की तरकारी खावे भरे मूली क बटको रे
छाछ रावड़ी का करे कलेवा थाली भर भर रे
यो त्रिलोकी नाथ जाट के वन गयो हाळी रे।

जाट जाटनी सुख से सोवे सोवे छोरा छोरी रे
राम धणी के पेरे मांय कयां होवे चोरी रे
चोर आवे जब चक्कर काटजा देखके हाली रे
यो त्रिलोकी नाथ जाट को वण गयो हाली रे।



जिसको देता है खुदा

वोह देता है राहें खुदा

जितने सखुन है सब में यही है सखुन दुरस्त
अल्ला आबरू से रखें और तन्दुरस्त

※ ※ ※

परवाह नही अगरचे लिखा या पढ़ा न हो
मौहताज हक सिवा किसी और का न हो

※ ※ ※

हुस्न व जमाल व इल्म व हुनर गो मिला न हो
एक तन्दुरस्तो चाहिये कुछ हो या न हो

※ ※ ※

पड़े भटकते है लाखों दाना किरोड़ो पंडित हजारो स्याना
जो खूब देखा तो यार आखिर खुदा की बातें खुदा ही जाने

※ ※ ※

जहां में क्या क्या खिरद के अपनी हर एक वजाता है शादयाने
कोइ हकीम कोई महन्त कोई हो पंडित कथा वखाने
कोई है आकील कोई है फाजिल कोई नजूमी लगा कहाने
जो चाहो कोई यह भेद खोले यह सब है हिले यह सब वहाने

जमी से लेकर जो आसमां तक भरी है लाखो तरह की खलखत
कहीं है हाथी कहीं चिटी कही है राई कहीं राई कहीं है पर्वत
यह जितने जलवे दिखा रही है खुदा को सनअत खुदा की हिकमत
जो चाहे खाले यह भेद उसके किसी को इतनी नही है कुदरत।

※ ※ ※ ※

अमल से जिन्दगी वनती है जन्नत भी जहानुम भी
यह खाको अपनी फितरत में न नूरी है न नारो है

※ ※ ※ ※

मस्जिदों में अल्ला हो अकवर, मंदिरों में राम है
तूं ही वतला दे मुझे ए वानिये देरो हरम
दोनों आवाजों में तेरी कौनसी आवाज हैं

※ ※ ※ ※

कोइ राम कहे कोई रहीम कहे दोनों की गरज अल्ला से है।
कोई दीन कहे कोई धर्म कहे मतलव तो उसी की राह से है।
कोई सालिक है कोई योगी है, मतलव तो उसी की चाह से है।
कोई प्रेम कहे कोई इश्क कहे मतलव तो दिले आगाह से है।
क्यूं लडता हैं नादां वन्दे यह तेरी खामख्याली हैं।
हैं पेड की जड तो एक वोही। हर मजहव एक एक डाली।

※ ※ ※ ※

यह अच्छी शूरतो वाले मेरी तसवीह के दाने है।
नजर में फिरते रहते है इवादत होती रहती है।

अल्ला हुसन दे तो हया भी जरूर दे ।
किस काम की वोह आंख जिसमें हया न हो ।

※ ※ ※ ※

राहे अदम में चोर भी इतना करम करे ।
चुपके सी उडाले मेरी गठडी गुनाह की ।

※ ※ ※ ※

मुल्के अदम में यारब क्या ईद हो रही हैं ।
जाते हैं जाने वाले कपडे बदल बदल के ।

※ ※ ※ ※

उलझनों में उलझने से खुदा मिलता नहीं ।
डोर को सुलझा रहा हू पर सीरा मिलता नहीं ।

※ ※ ※ ※

में तो गुस्ताखी करूंगा ज़िन्दगीं में एक बार ।
यार सब पैदल चले और में जनाजे पर सवार ।

※ ※ ※ ※

जईफी जिन्दगी में वक्त की वैजा रवानी ।
अगर जिन्दा दिली है तो वुढापा भी जवानी है

※ ※ ※ ※

जूलमतों के ठठ लगे है रोशनी के सामने
मौत मुंह वाये खड़ी है जिन्दगी के सामने

वात करते है तो होते है फरिश्ते मालूम
काम) पड़ता है तो शैतान नजर आते है

※ ※ ※ ※

इस जमाने का इन्कलाव न पुछ
रुह शैतान की शक्ल इन्सान की

※ ※ ※ ※

रफीको से रकीव अच्छे जो जलकर नाम लेते है
गूलो से खार वहतर है जो दामन थाम लेते है

※ ※ ※ ※

पास रहकर भी अगर वोह मिलने से मजबूर है
दूर है तो दूर है नजदीक है तो दूर है

※ ※ ※ ※

वोह दिन हवा हुवे जव पसीना गुलाव था
अव इत्र भी मलो तो वफा की वू नही



ईद की खुशी

है आवरू को ताअत व वहरोद की खुशी
और जाहिदों को दीद को तमहीद को खुशी
रिंद आशिकों का है कई उम्मेद की खुशी
कुछ दिलवरों के वशल की कुछ दीद की खुशी
ऐसी न शव बरात न बकर ईद की खुशी
जैसे हर एक दिल में है इस ईद की खुशी






इकरार हमसे था कई दिन आगे आगे ईद से
यानो के ईदगाह जावेंगे तुमको ले
आख़िर को हमको छोड़ गये साथ और के
हम हाथ मलते रह गये और राह देखते
क्या क्या गरज सहा सितम इन्तजार का



शब बरात

क्यूं कर करे न अपनी नमूदारी शब बरात।
चपलक चपाती हलवे से है भारी शब बरात।
दरया पै जाके देते है तमन्नो की फातहा।
भटयारी के तंवर पे नाना की फातहा
हलवाई की दुकान पे दादा की फातहा

पैसा ही रंग रुप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चरखे की माल है



पेट के लिए

करता है कोई जोरो जफा पेट के लिये
सहता है कोइ रंज व बला पेट के लिये
कोई खुदा के वास्ते करता नही है शिकार
बिल्ली भी मारती है चुहा पेट के लिये
अपने अपने वक्त में क्या क्या परीरू दन रहे
चांद से मुखड़े रहे और गुल से उनके तन रहे
न किसी का धन रहे और न सदा जोबन रहे
न सदा फूले तुरई न सदा सावन रहे

राजी है हम उसी में जिसमें तेरी रजा है
यां यूं भी वाह वाह और वूं भी वाह वाह है

आदमी

मस्जिद भी आदमी ने बनाइ है या मियां
बनते है आदमी हो इमाम और खूतबा खुवां
पढते है आदमी हो कुरान और नमाज यां
और आदमी हो उनकी चुराते है जुतियां

❀ ❀ ❀

मान ले कहना मेरा ए जान हंसले बोल ले
हुस्न है वह दो दिन का महमान हंसले बोल ले

❀ ❀ ❀

वे करारी यादगारी इन्तजारी इजतराव
क्या कहे तुम बिन पड़ा है इन्तखाव
दौलत जो तेरे पास है रख याद तु यह बात
खां तू भी और अल्ला की कर राह में खैरात
गैर नेक कहाना है तो कर इस जाय कुछ अहसान
हिन्दु को खिला पुरी मुसलमान को नान

❀ ❀ ❀

क्या क्या रखे है या रब रहमान तेरी कुदरत
बदले है रंग क्या क्या हर आन तेरी कूदरत
सब मस्त हो रहे है पहचान तेरी कुदरत
तीतर पुकारते है। सूभान तेरी कुदरत

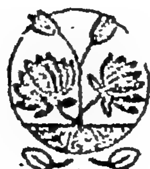
पैर की हड्डी टकराई

एक रोज हम चले शहर की तरफ दिल में कुछ अरमान थे
एक तरफ महल खड़े थे एक तरफ शमशान थे
सोचा महल में तो रहता ही हूं चलूं जरा शमशान में
पैर से एक हड्डी टकराई उसके यह व्यान थे
अरे मुसाफिर चल संभल कर हम भी कभी इन्सान थे।

※ ※ ※ ※

जाने वाले कभी नही आते।
जाने वालों की याद आती है।।

आज तुझको खुदा ने दी है हुस्न खुबी की वहार
चाहने वाले से करले कुछ सलूक व महर प्यार
कूदना विजली का मत गिन एतवार
कांठ की हांडी नही चढती है मियां वार वार



होली

अजब यह हिन्द की देखी बहार होली में।
घरों से सावरी और गोरियां निक चलियां
कसूबी ओडनी और मस्त कूरती अछपलियां

*　*　*

जिधर देखो उधर मच रही है रंग रलियां
तमाम ब्रज की परियों से भर रही गलियां
मजा है सैर है दर-दर किनार होली में।

*　*　*

जो कुछ खाती है अवला बहुत पिया मारी
चलती है अपने पिया पास लेके पिचकारी
गूलाल देखकर फिर छाती खोल दी सारी।
पिया की छाती से लगती वोह चाव की मारी।
न ताव दिल को न करार होली में।

*　*　*

जब फागन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की।
और ढफ के शोर खुडकते हों तब देख बहारें होली की।

*　*　*

परियों के रंग दमकते हो तब देख बहारें होली की।
खम शीशे जाम झलकते हों तब देख बहारें होली की।

आकील

दुनियां में अपना जी कोई वहला के मर गया।
दिल तंगियों से और कोई वहला के मर गया।
आकील था वोह तो आपको समझा के मर गया।
वेअकल छाती पीट कर घबरा के मर गया।
दुख पा के मर गया कोई सुख पा के मर गया।
जीता रहा न कोई हर एक आके मर गया।

※ ※ ※

लाई हयात आये कजा ले चली चले।
अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले।

※ ※ ※

न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का करार हूं।
जो किसी के काम न आ सके मैं वो एक मुश्ते गुबार हूं।

※ ※ ※

दिल लेके मफ्त कहते हैं कुछ काम का नहीं।
उलटी शिकायतें हुई अहसान तो गया।

※ ※ ※

अपना न मोल का ना इजारे का झूंपड़ा।
बाबा यह तन है दम के गुजारे का झूंपड़ा।
जो हर तरह तूं इबादत में दिल लगावेगा।
तू यहां भी खुश रहेगा वहां भी खुश तू जावेगा।

सब्जी

जितने हैं इस जहां में सब्जी के इश्क वाले ।
दिल शाद सुर्ख आंखें सर सबज मूंह उजाले ।
पिते है सबज तूर्रे खाते हैं तर निवाले ।
क्या देखता है बैठा ओ यार हुसन वाले ।
पी आशिकों में आकर दो भंग के पियाले ।

※ ※ ※

घोले हैं पोस्त तेरी खातिर रकीब भडवा ।
अब पोसी करेगा तुझ को वोह चौर भडवा ।

※ ※ ※

खाकर अफीम ज़ालिम मत हो ज़ोब अफीमी ।
तन खुश्क कर खज़ावे आवाज होगी धीमी ।

※ ※ ※

पीकर शराब नाहक कीचड में गिर पड़ेगा ।
और यह नशा तो कोठे छजे पै ले उड़ेगा ।
पी आशिकों में आकर दो भंग के पियाले ।
सबजी का वोह नशा है उड गम की धूल जावे ।
तैयार तन बदन हो और दिल भी फूल ज़ावे ।
आंखों के आगे आकर सरसूं सी फूल जावे ।
इशरत की लहरें आवे दुख दर्द भूल ज़ावे ।

बुढिया

सर धुनती है उकताती घबराती है बुढिया।
यह दर्द वोही जाने जो हो जाती है बुढिया।
जब पेट मलाई सा वो देता था दिखाई।
खाने को चली आती थी मीसरी व मलाई।
और आके बुढापे की हुइ जब के चढाई।
सब उड गई काफर वोह मलाई मिठाई।

※ ※ ※

इस गम से न कुछ पिती है न खाती है बुढिया।
यह दर्द वोही जाने जो हो जाती है बुढिया।

※ ※ ※

जब मुंह में न हो दांत तो मिस्सी मले क्या खाक।
और सर के झड़े बाल तो कंघी करे क्या खाक।
पलकों में सफेदी हो तो काजल लगे क्या खाक।
जब नाक हो सुखी हो तो फिर नथ खिले क्या खाक।
जब तक को नई उम्र थी चढती थी जवानी।
हर कोइ यह कहता था कहां जाती हो जानी।
जब बूढी हुई फिर लगी कहलाने पुरानी।
ठहरी कहीं खाला कहीं दादी कहीं नानी।

※ ※ ※

मूंह पीट वोह हमसाया से कहती है दहना।
नाहक की लड़ाई है न लेना है न देना।

हींजड़ा

वेटा हुआ किसी के जो सुन पावे हीजड़े ।
सुनते ही उसके घर में फिर आ जावें हींजड़े ।
नाचे बजाकर तालियां और गावें हींजड़े ।
ले ले के वेल भाव भी वतलावें हींजड़े ।

※ ※ ※

यूं देखने में गरचे यह हल्के से माल है ।
नाचे हैं नेग जोग का करते सवाल हैं ।
हम को तो पर उन्हों से अदव के खयाल है ।
अकसर इन्हों के भेस में साहव कमाल है ।

※ ※ ※

वातें भी इनकी साफ है मिलना भी साफ है ।
सीना भी इनका आइना मुखड़ा भी साफ है ।
जाहिर भी इनका साफ हैं जीवडा भी साफ है ।
आगा भी इनका साफ है पिछा भी साफ है ।
जब ऐसे जिन्दा दिल हों तो कहलावे हींजड़े ।
यह जान छले अब जो खाते हैं खुश सफीर ।
है दिल हमारा इनकी महोवत में अव असीर ।
मुदत से हो रहा है इरादा यह दिल पजीर ।
अल्ला हमें भी देवें जो पोता तो ए नजीर ।
हम भी वुला के खूब से नचवावें हीजड़े ।

कलयुग

कलयुग झाला देतो आवरे चोडे–धाडे ।
सतयुग, त्रेता, द्वापर की सब उठगई सकलाई ।
आंख खोलकर देखलो यह कलीयुग की चतुराई ।
एक कार पानी पीवेरे चोडे—धाडे ।
टांक पांयचा कलयुग आगे लोगां छोड़्यो ईष्ट ।
धर्म कर्म सब नष्ट हो गया बुद्धि हो गई भ्रष्ट ।
सब एक कूड़े खावेरे चोडे—धाडे ।

मर्दा मूंछ कटाली जिस दिन उठ गई मरदाई ।
वालमजी तो भोला ढाळा बी. ए. पास लूगाई ।
जो दो चोटी लटकावे रे चोडे—धाडे ।

बेटा न परनाई बीनणी अली गली में डोले ।
काम काज को कवे तो सासू से कडवी बोले ।
बेटो बाप ने धमकाव रे चोडे–धाडे ।

सबके ऊपर छागई रे इस कलयुग की माया ।
ना मानो तो आखां देखलो बीडी पीवे लगाया ।
धांका लोग लाकर पियावे रे चोडे–धाडे ।

आपस में ना मुख से वोले मां का जाया भाई।
झूंठा सांचा लड़े मूकदमा अदालत के मांई ।
वोह तो रिश्वत देकर आवरे चोडे–धाडे ।

* * *

इस कलयुग को देखकर ऐसी वात सुनाई ।
कलम उठाकर लिख दई मत बुरो मानियो भाई
ब्रह्म भाट भजन वनायो रे चोड़े धाड़े।
कलयुग झाला देतो आव रे चोड़े—धाडे

●

जीवको

जो सुख चावै जीवको तो नर चार चीज न टाल
चोरी जुवो जामनी और पराई नार

* * *

चोरी कैद कराय दे जुवो दे हरवाय
घर विकवादे जामनी सर कटवादे नार

* * *

दिल चाहे दिलदार को और तन चाहे आराम ।
दुविधा में दोनों गये न माया मिली न राम ।

* * *

नित किस से झगड़े करते हैं वह तेरा यह मेरा है ।
जो देखा खव तो आखिर को न मेरा है न तेरा है ।

बूढ़ापा

सब चीज़ को होता है बुरा हाय बुढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाये बुढापा
बुढे तो हुवे पर हुस्न की चाहत नहीं छुटती
आंखों से यह दीदार की लज्जत नहीं छुटती

और दिल से भी महवुव की उलफत नही छुटती
सब छूट गया पर दीद की यह लत्त नहीं छूटती

सुनते हो जवानों यह सखुन कहते हैं तुमसे
करने हो जो करलो मजे ऐश व तरब के
जावेगी जवानी तो फिर अफसोस करोगे
तुम जैसे हो वेसे तो कभी हम भी जवां थे
सब चीज को होता है बुरा हाय बूढापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाय बुढापा

और चल फिरले जरा तन तन के ए बांके जवां
चार दिन के बाद फिर डेढी कमर हो जावेगी

कथनी मीठी खाड सी करनी विष की लोय
कथनी छोड़ करनी करे तो विष से अमृत होय

※ ※ ※

वचन संभाले बोलिये, इसके हाथ न पाव।
एक वचन करे औषदी एक वचन करे घाव॥

※ ※ ※

आवत गारी एक है उलटत होय अनेक।
कबीर कभी नहीं उलटिय रही एक की एक॥

※ ※ ※

घर में भूखा पड़ रह दस फाके हो जाय।
तुलसी भाई बन्धु के कबहू न मागन जाय॥

※ ※ ※

कौन बढाई जलधि मिली गंग नाम भयो धीम।
कहीं की प्रभुता ना घटि पर घर गये रहिम॥



रावल मदनसिंह जी नवलगढ़

रावल श्री मदनसिंह जी नवलगढ, खुश मिजाज रईस है आप शतरंज के खिलाड़ी है। और राजनीति शतरंज के तो चैम्पीयन है। आपके विड़ला परिवार से मधुर सम्बध है। विश्वासी पूराने मित्रों में है। आप की साख बाजार में ऊंची है।

पिछली वार स्वर्ग आश्रम परमार्थ निकेतन में आप स्वामी भजनानंदजी मेनपुरी वालो का प्रवचन सुन रहे थे। मैं अगली पंक्ति में वैठा था आपने पहचान लिया प्रेम भाव से पुछा की स्वर्ग आश्रमवासी हो गये हो क्या।

अपना राज पाट राष्ट्र को अर्पण करने से पहले आपके दरवार में नवरत्न रहते थे।

आपके दरवार में नवरत्नों में स्वामी श्री नित्यानंदजी झुन्झूनू बड़े जिन्दा दिल थे। एक वार स्वामीजी अपनी माताजी से पूछ वैठे माताजी आपका विवाह हुवा था तो मैं कहा था माताजी ने मुस्करा के कहा कूवे में।

सेठानी ने अपने पति को कलकत्ते चिट्ठी दी की एक ही तो वेटा है और वह भी तीन साल से वे पता है। और वीनणी के पंद्रह वीस दिन में टावर होने वाला है। क्या करूं। सेठजी ने लिखा डोकी पड़ती दिख तो घर में ही गेर लिये। सेठानी ने भोले स्यानों को पत्र पढ़वाया किसी के भी समझ में नहीं आया। अपने पड़ोसी स्वामीजी के पास गई, और कहां स्याणों जी चिठ्ठी भी वाच जाणों हो के स्वामीजी चिठ्ठी पढ़कर हंसकर वोले साफ लिख्या है। टावर पूरो पाठो जणों और पाळो पोसो।

चौधरी हरदेवसिंह जी भारू

चौधरी श्री हरदेवसिंह जी भारू ने भारू गांव का नाम सरनाम कर दिया। आप पक्के कांग्रेसी है।

जनता जनार्दन ने आपकी परीक्षा ली थी। १९८० में लोकसभा के चुनावो में जातिवाद की भंयकर आंधी आई थी। बडे वडे योद्धा डिग गये ।

मगर आप कांग्रेस के सच्चे सेवक रहे। खुलकर ईमानदारी से इन्दिरा जी के उम्मीदवार श्री शीशराम जी ओला का साथ दिया।

जो दोनों घोड़ो पर चढे थे। जनता जनार्दन ने अपना फैसला उनके खिलाफ दे दिया, मय घोड़ो के गिर पड़े ।

"पाप कीं टहनी कही फलती नहीं"
नाँव कागज़ की कहीं चलती नहीं,,

चौधरी भारू को नेकी का वदला नेक मिल गया संसार प्रसिद्ध झुन्झुनू जिला के प्रमुख वना दिये गये। यह पद एम० पी० से ज्यादा वजन रखता है।

देना होता है जिसे खुदा देता है
और देने का ज़रिया भी वना देता
लेकिन इन्सान की आदत में है दाखिल फलड।
हर काम में टांग अपनी अडा देत है।।

साचां मित्र सचेत कहो काम न करे किसा
हरि अर्जुन के हेत रथ कर हांको राजिया

गौरधन लाल बोहरा नरसिंहपुरा

श्री गोरधन लाल बोहरा नरसिंहपुरा, सरल स्वभाव और ईमानदार सज्जन थे। आप घर के लखपति थे अच्छी खासी बोहरगत थी। राजनीति में आ गये। बोहरगत डूब गई किसी पर दावा नही किया। कुछ साथियों ने धोखा देकर रुपये खुद खा गये और नाम बोहरा जी के लिखा दिये। दगा किसी का सगा नही है, दगा करे सो पावे है। आप झुन्झुनू पंचायत समिति के प्रधान भी रहे थे ईमानदारी से काम किया था, उनकी जगह दूसरा होता तो घर बना लेता मगर आपने तो घर बिगाड़ा था। बोहरा जी छोटी उम्र में ही स्वर्गवासी हो गये। विधि का विधान विधाता ही जाने।

※ ※ ※

आय कर संसार में इन्सान नेकी कर गया।
मर गया लेकिन अमर वोह नाम अपना कर गया॥

※ ※ ※

परमात्मा न्यायकारी है। आपको चि० ओम प्रकाश बोहरा जैसा विद्वान सुपुत्र दिया आप कूलोद पंचायत से प्रबल बहुमत से जीतकर आये, आपके पिता भी हमेंशा इसी पंचायत से जीतकर आते थे।

कूलोद पंचायत में सेठ मखनलाल जी खेताण खतेहपुरा का पुरा समर्थन हमेंशा से बोहरा परिवार को रहा है। खतेहपुरा और आस-पास के गांवों की आप सेवा करते है खतेहपुरा में बहुत वर्षों से पानी के नल लगा रखे है आपके बड़े भाई श्री सेठ ओंकारमल जी खेताण का नेपाल में कारोबार है। नेपाल नरेश और उनके मंत्रीमण्डल में आपकी पहुंच है। भारत के बड़े उद्योग पतियों में आपका मान है। कूलोद की देवी माता के लाखों रुपये लगाकर जंगल में मंगल कर दिया।

"जल उतारे काठ को, कहो कहां की प्रीत"
अपनो सींचों जानकर यही बडन की रीत

※ ※ ※

कूलोद पंचायत में दूसरे सज्जन है ठा० महेन्द्रसिंह जी दोरासर आपका बोहरा परिवार से पुराना व्यवहार है। इस परिवार को हमेंशा साथ दिया है। श्री महेन्द्रसिंह जी, ठा० श्री सूरजबक्ससिंह जी दोरासर के गौद आये थे तो लाखों रूपये का कर्जा था आपने सब कर्जा चूकाया अपनी साख जमाई मेहनत की, आधुनिक ढंग से खेती की, लाखों रूपये कमाये।

पुरूष सिंह कब चाहते औरों का आधार
अपने ही उद्योग से करते वेड़ा पार

※ ※ ※

श्री ओमप्रकाश बोहरा पंचायत समिती झुन्झुनू के उप प्रधान चुन कर आये है। विद्वान और परिश्रमी होने से इस पंचायत में तो आप का ही बोलबाला रहेगा। नेता जी श्री शीशराम जी ओला का आपके सर पर हाथ है।

※ ※ ※

उलटे जल मछली तीरे, भये जात गजराज।
जो जाके शरण बसे वांको वांकी लाज॥

※ ※ ※

मैं हनुमान प्रसाद बावलिया वकील झुन्झुनू श्री गोरधनलाल बोहरा का पगड़ी बदल धर्म भाई हूं हर पंचायत चुनाव में कूलोद की पहाड़ो पर जाता हूं और श्री माताजी की कृपा से विजय श्री पाता हूं।

जग जीव मोह मदिरा पीये छाके फिरत प्रमाद में
गिर परत उठत फिर फिर गिरत विषय वासना स्वाद में

※ ※ ※

मिलन भला बिछडन बुरा मिल बिछड़ो मत कोय
फिर मिलना हंस बोलना दई करे जद होय

※ ※ ※

वाणी तो अनमोल है जो कोई जाण बोल
हृदय तराजू तोल कर फिर मुख बाहर खोल

※ ※ ※

जगदीश गुण गाया नहीं गायक हुवे तो क्या हुवा
पितू मात मन भाये नहीं लायक हुवा तो क्या हुवा

※ ※ ※

किस को बुरा न बोलिये मन के राखो आड
खैर कहे सुन कान दे भली राड से बाड

※ ※ ※

राम राम चौधरी सलाम मियां जी
पाव लागू पंडितो डंडोत बाबाजी

※ ※ ※

कवी:- ठा० श्री धौंकलसिंह जी पचेरी ने कहा था

लोहा लड़का चामड़ा पहले कहां बखान
वहु बछेरा डीकरी निमटीया परमान

※ ※ ※

ठाकर तो चाकर से राजी, गूजर राजी भेड़ से
बानियों बामण से राजी, जाट राजी देड से

जो गवांर पीगंल पढे तीन बात से हीन
उठवो बैठवो बोलवो लेय विधाता छीन

✻ ✻ ✻

महतरानी हो या रानी गुन गुनायेगी जरूर
कोई आलम हो जवानी गुन गुनायेगी जरूर

✻ ✻ ✻

मन, मोती, अरू दूध रस इनको एक सुभाव
फांटा पिछे ना मिले करलो लाख उपाय

✻ ✻ ✻

देह पूरानी मन नया नयना वोही स्वभाव
अरे जवानी बावरी एक बार फिर आव

✻ ✻ ✻

तफरीके मजहब

रात को सोना सवेरे और सुबह उठना शताब
सेहत और दौलत बढावे अकल को दे आबो ताव

✻ ✻ ✻

तफरीके मजहिब है दिल में जमहुर की बाते करते है
रहते है अन्धेरो में हर दम और नूर की बाते करते है

✻ ✻ ✻

नफरत के भडकते शोलों में ये जश्ने चरागां क्या कहना
खुद फूंक रहे है घर अपना और दूर की बाते करते है



तनकोद है सारे आलम पर ऐसा न हुवा वैसा न हुवा
खुद अपने गरेवा में झांके क्यू दूर की बाते करते है
× × ×

सद हैफ के अब गूनचां व गुल पलते है खिजां के साये में
तनज़ीम चमन से नावाफिक दस्तूर की बाते करते है
× × ×

है जिनकी लवों पर ऐ कोशर यह हिन्दू है यह मुस्लिम है
वोह लोग न जाने किस मुंह से जमहूर की बाते करते है
✿ ✿ ✿

नफरत है जो सिखायें वो धर्म तेरा नही है
इन्सान को रूंदे वोह कदम तेरा नही है
※ ※ ※

एक ही धर्म है इमान है हर
इन्सां का प्यार कहते है जिसे करके दिखाओ आवो
※ ※ ※

आबरू दुनिया में यारो मोती किसी आब है
तन्दुरस्ती और भी फिर ऐश का असबाब है
※ ※ ※

तनदुरस्ती को निपट फज़ले इल्लाही बूझिये
आवरू से जग में रहना बादशाही बूझिये
शेख हो या ब्रह्मन दोनों की मंजिल एक है
मावद है सब का वही फेर है कुछ राह का

पी लोगे तो ए शेख जरा गर्म रहोगे
ठंडा न कही करदे कहीं जन्नत की हवायें

※ ※ ※

सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना अब जोर कितना बाजूवे कातिल में है

※ ※ ※

शहीदों की चितावो पर लगेंगे हर वर्ष मेले
वतन पर मरने वालों का यह हो बाकी निशा होगा

※ ※ ※

न तो कुछ खाया खिलाया खैरात कुछ न कर गया
आय कर मुर्ख जगत में जोड़ कर धन मर गया

※ ※ ※

जिन्दगी जब तक रहेगी फुरसत न होगी काम से
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम कर रहमान से

※ ※ ※

तसव्वूर में चले आते तो तुम्हारा क्या बिगड़ जाता
मुझे दीदार हो जाता तुम्हारा पर्दा रह जाता

※ ※ ※

इश्क ही करना अगर नींदा तुझे मंजूर है
तो देखना उस नूर को जिस नूर का तू नूर है

※

अजीजों की अमानत कम बुजर्गों का अदब खसलत
जो दिल बदला तो सब बदला खुदा खसलत तो सब खसलत

※ ※ ※

अजां हो रही है पिया जल्द जागो
इबादत करूं आज मजबूर होकर

※ ※ ※

पहले वचन देकर समय पर पालते है जो नही
वोह है प्रतिज्ञा घात कारी निदंनीय है सब कही

※

कमाली

उडजा ए नींद भंवर सहलानी, अब थोड़ा सा जीवा ताई कांई सोवे
गहरा गहरा होद भर्या ए घट भीतर नाडूला में सूरता कपड़ा कांई धोवे
उडजा ए नींद भंवर सहलानी
गहरा गहरा दीप जले ए घट भीतर बाहरला दिवला न सूरता कांई जोवे
उडजा ए नींद भंवर सहलानी
हीरां हं दी हाट लगी ए घट भीतर कांकरियां पत्थरा में हीरा कांई टोवे
उडजा ए नींद भंवर सहलानी
कहत कमाली कबीरा थारी लड़की, था मोतीडा री माला कबीरो पोवे
उडजा ए नींद भंवर सहलानी अब थोड़ा सा जीवा के तांई कांई सोवे

देखांगा भाईड़ा कयां नट जावलो पल में टिकट तेरो कट जावलो
म टा मोटा सोटा लेकर आसी जमराज, रामजी भजता तो तने आई लाज
चाल भजन मैं कहे काम करू छोरे छोरोयां को मैं तो पेट भरू
काल मूंडो फाड राखयो कित जावलो देखांगा भाईडा कयां नट जावेलो
टेढो टेढो चाले मन में राखे मरोड गरिवा से वाता करता लेवे मूंडो मोड
सारो ही घमंड थारो घट जावेलो पल में टिकट थारो कट जावलो
देखांगा भाईडा कयां नट जावलो
आवोरे भाईडो अव तो भजन करो रामजी को नाम थे तो हृदय में घरो
अयां तो करयां स सोदो पट जावलो देखागा भाईडा कया नट जावलो

जय जय कृष्ण सुदर्शनधारी मुरारी।
कलीमल हरण करन सुख करता कैशव कुंजविहारी ।।
कृपा सिन्धू करूणानिधान प्रभू कमल नयन कंसारी
जय जय कृष्ण........................
मुरलीवर माघव मुकन्द मन मोहन मंगलकारी
दोना नाथ देवकी नंदन दीन वन्धु दैत्यारी
जय जय कृष्ण........................
नट नागर नर हरि, नरोतम नारायण निर्विकारी
गोकुलेन्द्र गोविन्द गोपधर गौपालक गिरधारी
जय जय कृष्ण........................
विश्वम्भर ब्रह्मांड नियता वासूदेव वनवारी
भजन कहे प्रभू भक्त उभारण भव तारण भय हारी
जय जय कृष्ण........................

रब्बुल आलमिन

रब्ब तमाम आलम का है। वोह रहीम है, करीम है

इलाही मोहताज न रख इस जमाने में।
कमी है कौनसी या रब तेरे खज़ाने में।।

※ ※ ※

बन्दा हूं तेरा तेरी करीमी पे नाज है
करता हूं यूं गुनाह के तू बन्दा नवाज़ है

※ ※ ※

पैदा किया है जिसने है लाज उसी को सबकी
वोह पालता है सब का यह तारीफ मेरे रब्ब की

※ ※ ※

बा अदब बा नसिब
बे अदब बद नसीब

※ ※ ※

कम खावो गम खावो
कम बोलो पूरा तोलो

※ ※ ※

सुफी का मजहब मुख़तसीर सब से खरा सब से जुदा
हम तुम के झगडे लगब है, या कुछ नही या सब खुदा

इबादत करो मेहनत करो
नेकी करो वतन की खिदमत करो
खैरात करो बदी से परहेज करो

जो सज्जन आत्मा की आवाज को पढकर वाह वाह देते है । उनसे प्रार्थना है ।

वाह को खाउ या वाह को पिउ
या वाह को लेय बाजार विकाउ
वाह तो कोई सवारी नहो
जा पर बैठ कर घर को जाउ
वाह तो आपकी लीजिए पाछी
ऐसी जो दीजिये पेट में खाऊ

※ ※ ※

भगवान ने चाहा तो उभरती ही रहेगी
इन्दिरा तेरी तकदीर चमकती ही रहेगी
मजदूर की किस्मत में अन्धेरा ही अन्धेरा
मंहगाई वढी हद से सिवा गम ने है घेरा
उम्मेद यह कायम है कभी होगा सवेरा
अव्र काम नया देश का करती ही रहेगी
इन्दिरा तेरी तकदीर चमकती ही रहेगी

※ ※ ※

तूने ही गरीवों को नई राह दिखाई
गुरवत के अन्धेरों में नई जोत जलाई
सूरज की तरह रोज उभरती ही रहेगी
हम तो तेरे हक में है सदा हक में रहेगे
जिस काम में राजी है तू वोह काम करेगे
इन्दिरा तेरी तकदीर चमकती ही रहेगी
नारी निंदा मत करो नारी नर की खान
नारी ही से निपजे ध्रुव, प्रहलाद हनुमान

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!